नवाबी मसनद

[हास्य-रस की अनूठी पुस्तक]

●

लेखक

अमृतलाल नागर

किताब महल, इलाहाबाद

तस्लीमात्

अगर किसी अच्छे नजूमी से भगवान् राम और 'नवाबी मसनद' की जन्मकुंडली की जाँच कराई जाय, तो एक बात दोनों में समान मिलेगी, दोनों ने चौदह बरस का वनवास भोगा। बेचारे राम (शायद भगवान् होने के कारण) इस मानी में बदक़िस्मत रहे कि वनवास में रावण उनकी सीता को हर ले गया था, मगर 'नवाबी मसनद' की ख्याति इतने दिनों तक उसके साथ ही बरक़रार रही। इसलिए लेखक के नाते मेरा ख़ुश होना स्वाभाविक ही है। आप इस ख़ुशी को मेरा दम्भ न समझें; मैं आपकी एक 'वाह' पर जीने वालों की क़ौम का हूँ।

इन चौदह बरसों में ज़माने ने बड़े-बड़े तान पलटे ले लिये; ज़मीन और आस्मान बदल गये। आस्मान से मामूली बमों की जगह अब एटम बम बरसने लगे और हमारी ज़मीन पर उस वक्त क़दम रखने वाला 'टेम्परेरी' स्वराज्य अब 'परमानेन्ट' हो गया है। पंतजी से वज़ारत का क़लमदान छीनने की ताक़त रखने वाले माई लाट की कुकड़ूंकूं बोल गई, और उनकी जगह नये निज़ाम के लाट काग़ज़ के फूलों की तरह महज़ दूर से ही खिले-खिले से लगते हैं। वे नवाब जो क़ादिर, पीरू और रमज़ानी पर रौब गाँठते थे, अब ज़मींदारी एबॉलिशन के बाद रफ़्ता-रफ़्ता उन्हीं के तबक़े में आ रहे हैं। ज़माने का पेट जो उस वक्त तक महज़ गों-गों बोल कर ही रह जाता था, अब गोंगियाते-गोंगियाते गालियाँ भी देने लगा है।

इतने दिनों में एक ख़ास परिवर्तन यह भी हुआ कि इस किताब के भूमिका लेखक मेरे दोस्त रामबिलास शर्मा जो उस वक्त़ फ़क़त एम० ए० थे और (अपने लिखे मुताबिक़) मुझसे कम नामवर थे, अब इल्म के

डाक्टर (पी० एच० डी०) बनकर मुझसे कहीं ज़्यादा शोहरत हासिल कर चुके हैं।

इस तरह न ज़ाने कितने परिवर्तन हमारे आपके दरम्यान हो चुके हैं। बहरहाल, एक बात में हम और आप आज भी नहीं बदले—हँसना और हँसाना हमें आज भी आता है, सुहाता है। इंसान में जब तक यह जिंदादिली क़ायम रहेगी तब तक तमाम एटम और हाइड्रोजन बम मिल कर भी उसे पछाड़ न सकेंगे।

अंत में मैं किताब महल के मालिक श्रीयुत् श्री निवास अग्रवाल का शुक्रगुज़ार हूँ जिनकी क़द्रदानी की वजह से 'नवाबी मसनद' फिर छापे की अयोध्या में आ रही है।

वसंत पंचमी '५३ ई०
चौक, लखनऊ

तस्लीम लखनवी

भूमिका

भूमिका लिखने की प्रथा का महत्त्व तबसे और कम हो गया जबसे ये राजनीतिक नेता लोग साहित्यिकों को अपने आशीर्वाद के दो-दो शब्द बाँटने लगे। वैसे भी, हिंदी में यह कला कभी अपने पूरे विकास पर पहुँची, इसमें सन्देह है। लोग ज़्यादातर उन्हीं से भूमिका लिखाते हैं जिनका नाम ज़्यादा होता है, जिनकी राय जनता पर कुछ असर डाल सकती है। यह अपनी चीज़ की बिक्री के लिए उस पर दूसरे के नाम की मुहर लगवाना है; दूसरों को बरग़लाना है और अपनी कमज़ोरी का इज़हार करना है। परिचय रूप में भूमिका पुस्तक के विषय पर कुछ प्रकाश डालने के लिए होनी चाहिए। साधारण भूमिकाओं में 'नवाबी मसनद' की भूमिका अपवाद रूप ठहरेगी, इसलिए कि निश्चय ही इसके लेखक, 'चकल्लस' के सर्वेसर्वा सम्पादक श्री अमृतलाल नागर को हिंदी के पाठक मुझसे ज़्यादा जानते हैं।'

और पुस्तकों से 'नवाबी मसनद' को भूमिका की ख़ास ज़रूरत भी है, इसलिए कि पुस्तक झूठी बातों से भरी है। भूमिका में दो चार बातें सच्ची, बादल की चमकदार किनारी की तरह, ज़रूर कही जानी चाहिए। अमेरिका में कुछ दिन हुए, झूठों के एक क्लब में कम्पटीशन हुआ था। उसमें जिस आदमी को सबसे बढ़िया झूठ बोलने के लिए प्राइज़ मिली थी, उसका नाम इस वक़्त याद नहीं और उस झूठ में भी कुछ ऐसी कला की कमी थी कि मैं उसे भी भूल गया हूँ लेकिन 'नवाबी मसनद' की गप्पें जो पहले छपने पर पढ़ी थीं, वे अभी तक याद हैं। लाट साहब का नवाब साहब से हाथ मिलाना, बल्लभपन्थजी का पाटेनाले के शाह साहब से मिलने जाना, आदि बातें अपने गप-

आर्ट में पूर्ण हैं। गप लिखना भी एक आर्ट है और कल्पना की तगड़ी कसरत पर निर्भर है। लेकिन ये गप्पें सब कल्पना पर निर्भर नहीं; यथार्थ की इनमें ऐसी तगड़ी बैकग्राउंड है कि गप मारनेवालों पर आप कभी शक नहीं कर सकते। पात्र, सभी अपनी विशेषताएँ लिये, सचित्र और विचित्र पाठक के सामने उपस्थित होते हैं। चरित्र निर्माण की इस ख़ूबी ने इन स्केचों में उपन्यास की एकता और उसका रस ला दिया है। और इन्हें यदि उन उपन्यासों की दृष्टि से देखा जाय जो स्केचों का संग्रह मात्र हैं तो बहुत बातों में 'नवाबी मसनद' उनसे बाज़ी मार ले जायगी। दिन पर दिन होनेवाली घटनाओं पर इसके पात्र अपने विचार प्रकट करते हैं; नेताओं और उनके कार्यक्रम को वे अपने तराज़ू पर तौलते हैं; और लेखक वार्ता और वार्तालाप द्वारा हिंदी-उर्दू का भेद मिटा या मिलाकर राष्ट्रीय हिंदुस्तानी का आदर्श उपस्थित करता है। पात्रों के सजीव होने से नित्यप्रति की घटनाएँ अपना क्षणिक महत्त्व खोकर एक बड़े चित्र में सज जाती हैं।

नवाबों और नवाबी सभ्यता को लेकर हिंदी उर्दू में काफ़ी हास्यात्मक गद्य लिखा गया है परन्तु नवाब और उनके मुसाहब यथार्थ के इतना निकट पहले कभी नहीं लाये गये जितना अब और यहाँ पर। रमज़ानी, पीरू आदि शोषित वर्ग के लोग हैं जो शासक वर्ग के लोगों का पैसा ठगना अपना परम धर्म समझते हैं। वास्तव में वे उतने बेवकूफ़ नहीं हैं जितने कि नवाब साहब। वर्ग संघर्ष का यह चित्रण उम्मीद है, प्रगतिशील सज्जनों को पसन्द आयेगा।

जो लोग अछूती कला के उपासक हैं; उनका तो कहना ही क्या? यथार्थ और कल्पना के अद्भुत संमिश्रण से उत्पन्न हास्य की व्यञ्जना निस्संदेह उनके कला-विकारों की शान्ति का साधन होगी।

रामबिलास शर्मा, एम० ए०

विषय-सूची

'नवाबी मसनद'

के

शौकीन

तीन स्वर्गीय साथी

साप्ताहिक 'चकल्लस'

'सुकवि 'पढ़ीस'

और

गोविन्द बिहारी खरे

की

स्मृति को

सप्रेम

१

चोरों का हंगामा

बग़ल में 'अवध अख़बार' दबाए हुए मियाँ रमज़ान अली ने कमरे में प्रवेश किया। फिर झुककर सलाम करते हुए बोले—'आदाब बजा लाता हूँ, हुज़ूर!'

सटक की निगाली थोड़ी देर के लिए मुँह से निकालते हुए नवाब साहब ने फ़रमाया—'आओ भाई रमज़ानी! कहो, क्या ख़बर लाये?'

बीड़ी की क़श खींचते हुए क़ादिर मियाँ ने कहा—'आज तो हुज़ूर यह इख़बार भी लाये हैं। अमाँ क्या ख़बरें हैं, रमज़ानी?'

नवाब साहब की फ़र्शी से चिलम उठाकर उसके दम लगाते हुए पीरू पहलवान ने कहा—'इख़बार में कोई सच्ची ख़बरें थोड़े ही छपती हैं, मियाँ! सब मनगढ़न्त बातें। अब आप ही बताइए, कहाँ चीन, कहाँ जापान, कहाँ हिन्दुस्तान? आप ख़ुद ही सोचिए, भला इन जापानियों की हिम्मत पड़ सकती है कि कभी चीन के शाह पर हमला करें? आपको कुछ मालूम भी है कि वह अलादीन के ख़ानदान का है। उसके पास वही देव वाला चिराग़ है। ज़रा-सी घिस दे तो जापान हवा हो जाय?'

मियाँ रमजान अली को इस समय बहुत बुरा लगा। चुपचाप गम्भीर बैठे हुए पीरू की ओर नफ़रतभरी नज़र से वे इस तरह देख रहे थे जैसे कोई अक्लमंद भूखी बिल्ली, घण्टों तपस्या कर

चुकने के बाद, अपने सामने एक बदबूदार छुछूंदर को देख कर चिढ़ और खीझ से भर उठी हो। उन्होंने नवाब साहब की ओर देख कर अदब से कहा—अब आप ही देखिये हुजूर, इस बीसवीं सदी के जमाने में भी यह अलादीन के चिराग़ की बेहूदा बेपर की बातें उड़ा रहे हैं !'

पहलवान को तैश आ गया। बोले—'यह बेपर की बातें हैं, गरीबपरवर ? अभी उस दिन तो सनीमा में अपनी आँखों से देखे चले आ रहे हैं। क्या अजीब करिश्मा था !—और यह कह रहे हैं कि बेपर की ?—वाह !'

सबेरे ही नवाब साहब के पड़ोसी मियाँ हैदर हुसेन उन्हें 'साइंस' के करिश्मे बता चुके थे। इस वक्त उन्हें वही ख्याल आ गया। हुक्के के दो-तीन क़श इतमीनान के साथ खींचते हुए गम्भीरतापूर्वक बोले—'नहीं यार, इन बातों में कुछ नहीं रक्खा है। यह साइंस का ज़माना है। इसमें अलादीन का चिराग़ कुछ भी नहीं कर सकता।'

पीरू मियाँ ने फिर कहा—'नहीं हुजूर, यह बात नहीं। उस चिराग़ में बड़ी ताक़त है। बड़े-बड़े जिन्नात बस में.........

'अमाँ, क्यों फ़िजूल की बकबक किये जा रहे हो ? हमने तुमसे हज़ार बार कह दिया कि पीरू, इस किस्म की गुस्ताखी मेरे सामने न किया कीजिये। हर बात में अपनी टाँग जरूर ही अड़ायेंगे ! हाँ जी रमजानी मियाँ...?'

रमजानी ने विनम्र होकर कहा—'अब कैसे अर्ज करूँ, बन्दानवाज़ ! आप ही पढ़ लीजिये न ?'—कहते हुए उन्होंने अख़बार आगे बढ़ा दिया।

पहलवान को इस बार मौक़ा मिला। जान पर खेल कर उसने कह ही तो दिया—'देखी हुजूर इसकी गुस्ताखी ? यानी कि

अब यह हुजूर को पढ़ाना चाहता है?......अमाँ जाओ भी रमजानी मियाँ, तुम पढ़े-लिखों से तो हम जाहिल अच्छे। कम से कम हुजूर के साथ तहजीब से तो पेश आते हैं।'

नवाब साहब को भी गुस्सा आ गया, मगर वह उसे दबाते हुए बोले—'अच्छा, होगा जी। मगर हमारी समझ में यह इखबार वाले सच्ची खबरें नहीं छापते। यह सब मन-गढ़न्त मालूम होता है।'

पीरू का हौसला और बढ़ा। उसने अपनी बात को पुख्ता करने के लिए कहा—ऐ हुजूर, यह सब मन-गढ़न्त बातें तो होती ही हैं। भई, हम रमज़ानी की तरह पढ़े-लिखे तो हैं नहीं; फिर भी यह जरूर सुन रक्खा है कि इखबार में सच्ची खबरें नहीं छपतीं। अब आप ही देखिये बंदानवाज, आजकल कितने डाके चोरियाँ हो रही हैं। कहीं इख़बार में इसकी भी खबरें हैं? क्यों भई रमज़ानी, तुम्हीं बताओ; तुम्हारे पास तो इख़बार है।'

रमज़ानी कुछ न बोले। चुपचाप मुँह लटकाये बैठे रहे।

नवाब साहब ने कहा—"हाँ भई, यह बात तो तुम पते की कह रहे हो, पहलवान! मगर क्या यह हङ्गामा बहुत बढ़ गया है?"

अब तक बे-मतलब की बातें होने के कारन क़ादिर मियाँ चुपचाप बैठे हुए थे, परंतु इस बार उन्होंने मौके को अपने हाथ से न छोड़ा। चट से बोल उठे—'हुजूर, कुछ न पूछिये। अभी नरसों ही हमारे यहाँ बड़ा ज़बरदस्त डाका पड़ा है। कम्बख्तों ने कम्बल तक न छोड़ा।'

पीरू मियाँ ने कहा—डाकों का हाल न पूछिये हुजूर! बस समझ लीजिये कि सुलताना और हामिद ऐसे-ऐसे नामी डाकुओं

को भी इन लोगों ने पछाड़ दिया है !—फतेहगंज में, आज कोई आठ-दस दिन की बात है, ऐसा गजब का डाका पड़ा कि बस क्या अर्ज करूँ। डाकुओं ने मिलकर एक डाकू को भी क़तल कर दिया। उसकी लाश तो हुजूर मैंने अपनी आँखों से देखी थी। गरीब परवर, आदमी क्या था, पूरा देव था। उसके एक-एक कल्ले.........

नवाब साहब ने बात काटकर अचरज से पूछा—'अमाँ तो यहाँ तक नौबत आ गई है ?'

पीरू कहने लगा—"अरे इक्के वालों तक को नहीं छोड़ते हुजूर। हमारा एक मुलाक़ाती है, नब्बन इक्केवाला। इक्का हाँकता हुआ चला जा रहा था। बस साहब, चोर लोग हाथ में लकड़ी-भाले लिये हुए आये। उसे रोक लिया। उसकी जेब में आठ-दस आने पैसे और बीड़ियाँ थीं। वह सब ले लिया—बिचारे का चादर तक उतरवा लिया। ग़रीब सरदी में ठिठुरता हुआ घर लौटा। एक तो पैसे जाने का ग़म, दूसरे सर्दी लग गई। उसे डबल नमूनिया हो गया है, ग़रीबपरवर ! बिचारा रोता है। अब उसकी रोजी भी मारी गई। दवा के लिए पैसे भी न रहे। उसके बाल-बच्चे भूखों मरते हैं। अब आप ही बताइये हुजूर, इससे उन डाकुओं को क्या फ़ायदा मिला ?"

क़ादिर मियाँ ने गर्दन हिलाते हुए घृणासूचक भाव दिखला कर कहा—"डाकू क्या हैं, टिकिया-चोट्टे हैं साले ! डाकू था सुलताना, करोड़ों रुपये लुटा दिये। हामिद भी बड़े हौसले का था हुजूर। एक बार की बात है, मैं सहादतगंज जा रहा था। रात का बखत था, सरदी का मौसम। उस दिन मेरे पास इत्तफ़ाक से चादरा नहीं था। रास्ते में मैंने देखा कि आठ दस जवानों के साथ हाथ में दोनली पिस्तौल लिये झूमता हुआ

हामिद चला आ रहा है। सच मानिये हुजूर, तो मेरी रूह क़ब्ज हो गई। समझ लिया कि आज बस आखिरी दिन है। हामिद ने शेर की तरह दहाड़ कर पूछा,—'कौन है?' मेरी तो बोलती बन्द हो गई हुजूर। हाथ पाँव फूल गये। मैंने काँपकर कहा, 'एक ग़रीब है, सरकार!' यह कह कर मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा। उसने उठा कर मुझे गले से लगाया। कहा—'डरो मत, मैं हामिद हूँ, सुलताना का सागिरद। मुझसे क्यों डरते हो?' फिर बोला, 'तुम्हारे पास कुछ ओढ़ने को नहीं है? अच्छा लो, यह दस का नोट, जाके कम्बल खरीद लेना।,......तो डाकू ऐसे होते थे, गरीबपरवर! लेकिन यह सब पिछले जमाने की बातें हैं। अब आजकल तो उठाईगीरें हैं, डाकू क्या हैं?'

नवाब साहब ने कहा—'तो सरकार इसका कुछ इंतज़ाम नहीं करती? मियाँ यह तो बड़ी बुरी बात है।'

रमज़ानी ने कहा—'इंतज़ाम क्या हो हुजूर? कांग्रेस वालों ने पुलिस तो बढ़ा दी है। सुना है, आजकल शहर भर में पूरे पचास हजार सिपाही पहरा देते हैं। अब कोई क्या करे? कल एक हवलदार बता रहा था कि रात-रात भर सीटियाँ बजानी पड़ती हैं। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। अब सच-झूठ की तो खुदा जानता है, बंदानवाज!'

पीरू ने कहा—'लेकिन हुजूर, अपना बंदोबस्त पूरा होना चाहिए। न मालूम किस वक्त ये डाकू लोग, खुदा इन्हें ग़ारत करे, हुजूर के दुश्मनों को ही कुछ नुक़सान···अरे हाँ, इन सालों का क्या ठीक?'

क़ादिर ने भी सलाह दी—'न हो तो हुजूर चार पहाड़ी नौकर रख लें। पहलवान ठीक कह रहे हैं। अपना इंतज़ाम पुख्ता होना चाहिये, आगे खुदा मालिक है।'

रमज़ानी ने कहा—'मेरी राय यह है कि हुजूर सारे घर में बिजली का तार दौड़ा दिया जाय। फिर देखें कोई कैसे आता है?'

पीरू ने झट आड़े हाथों लिया। कहा—'चार हरफ़ पढ़ क्या लिये हैं कि बस उल्टी-सीधी बातें बकने लगे! जान जोखों की चीज, कहीं आप ही का हाथ लग जाय तो बस टें से बोलकर रह जाइयेगा!'

नवाब साहब ने घबरा कर कहा—'न न भाई, यह सब कुछ ठीक नहीं। अमाँ तुम भी यार रमज़ानी ऐसी सलाह देते हो कि बस! आयन्दा अब ऐसी बात कही तो ख्याल रखना, हम तुम्हें मौक़ूफ़ कर देंगे। हमारे यहाँ ऐसे ख़तरनाक सलाहकारों की जरूरत नहीं है।'

इसी समय ज़नानख़ाने से एक महरी दौड़ती हुई आई। उसने हाँफ़ कर कहा—'यह चोर डाकुओं की बातें न करें हुजूर, सुनकर बेगम साहबा को ग़श आ गया!'

घबराते हुए नवाब साहब ज़नानखाने की ओर लपके हुए गये। दरबार बरख़ास्त हो गया।

२

साइकिल-टैक्स

बरोज़ बकरईद के नवाब साहब अरसे बाद गुसल करने के लिए गये थे। इसी से ज़रा देर हो गई।

मियाँ रमज़ानी, क़ादिर और पीरू पहलवान भी उस दिन नई तहमत, हलकी गुलाबी सर्दी पड़ने पर भी तंजेब के फलीदार कुरते, सरज की बास्कटें तथा दुपल्ली टोपियाँ जचा कर आये थे। पहलवान का 'फैशन' तो अजीब ही था। महीन कुरते के अंदर लाल गंजी झलक रही थी, और ऊपर से रेशमी छींट की वास्कट। उन लोगों में, उस दिन, बकरीद को लेकर ही कुछ मज़हबी तज़करा चल रहा था।

इसी समय मियाँ हुसैनअली ने दीवानख़ाने में क़दम रक्खा।

'अक्ख़ा, हुसैनी मियाँ हैं? आओ भाई, आओ। आज तो सूरज पच्छुम से उरूज हुआ है।...अमाँ, तुम तो ईद के चाँद हो गये हो! कभी दिखाई ही नहीं पड़ते?' पहलवान ने कहा।

मियाँ हुसैन अली मुस्कुराते हुए बोले—वल्ला, इस ईद के चाँद की भी एक ही कही। अमाँ क्या बताएँ पहलवान, इधर जरी काम में फँसा हुआ था। टिकैतगंज वाले नवाब साहब ने अच्छे मिरजा से मैदान बदा है न? दो सौ कोड़ी कनकव्वे 'पौनतावे' ख़रीदे हैं। दस हजार गज मांझा सुतवाया है। ऐ मियाँ, क्या खाके अच्छे मिरजा मुक़ाबिला करेंगे हमारे नवाब साहब का? पूरी पचास चरख़ियाँ लबालब रील की रक्खी हैं।

'सादी' भी काफी है।...कुछ न पूछो पहलवान, सैकिल पर दौड़ते-दौड़ते टाँगें दर्द करने लगीं। लागडाट की बात है न?

रमज़ानी मियाँ ने बीच ही में फ़िक़रा कसते हुए कहा—'चढ़ लो मियाँ और थोड़े दिन सैकिल पर? फिर तो सैकिल रखना, अपने हिसाब हाथी बाँधना हो जायगा।'

'अमाँ ये क्यों भाई? क्या हुआ, जल्दी कहो न!'

क़ादिर मियाँ के दिल में खलबली मच गई। उन्हें अपनी बाइसिकिल पर नाज़ है। हैंडिल पर तीन-तीन गोल शीशे, सामने वाले 'मडगाड' पर छोटा-सा हरा चाँदतारे वाला झंडा। 'पाइडिलों' पर रबड़, रेशमी गद्दी, 'कारबाइट' के आगे और पीछे दो-दो लैम्प—गर्जे कि उन्हें अपनी बाइसिकिल बहुत ही प्यारी है। दिन में जितनी बार चढ़ेंगे, बराबर झाड़-पोंछ कर। इसी से उनका दम ख़ुश्क हो गया।

रमज़ानी ने फिर कहा—'ये कांग्रेसी सरकार सैकिल पर टिकस बढ़ा रही है न? अब तो वह गाड़ी रख सकेंगे, जिनके पास पैसा होगा। हम-आप गरीब आदमी कहाँ से दस-पंद्रह रुपया माह टिकस देंगे?'

मियाँ क़ादिर के ऊपर जैसे गाज गिर गई। मुँह से महज़ इतना ही निकला—'दस-पंदरा रुपये महीना! अरे मेरे मौला!' कहते हुए उन्होंने एक ठंडी साँस छोड़ दी।

पहलवान ने आश्चर्य के साथ कहा—'अमाँ ये कांग्रेस वाले तो गरीबों के हिमायती बनते हैं न! अब फिर ये टिकस कैसा?'

रमज़ानी ने कहा—'टिकस इसलिए कि आमदनी बढ़े। देखिये न, मनीमा पर टिकस बाँध दिया। कितनी आमदनी हो गई इन लोगों को? दावे से कहता हूँ मैं कि अकेले लखनऊ

से ही उनको तीन हज़ार रोज़ की आमदनी होगी। अब सैकिल पर टिकस बढ़ जायगा तो बस फिर क्या है, हर महीने लाखों पर हाथ होंगे इन लोगों के। मरे तो हम गरीब लोग। इनका क्या ?'

हुसैनी ने कहा—'अच्छा सुनिये, अब जैसे कुछ फ़रियाद की जाये कि हम गरीबों पर यह जुल्म क्या ? तो क्या ये कांग-रेस वाले हमारा कहना न सुनेंगे ? अमाँ उस्ताद, ये लोग तो कहते थे कि सौराज में हम गरीबों की ही सरकार होगी। फिर ये क्या बात ? सौराज होने पर ये खुदा जाने क्या जुलुम न करें।

रमज़ानी ने जोर देकर कहा—'अब ये सौराज नहीं है तो क्या है, भाईजान ? सौराज न होता तो क्या ये लोग हुकूमत कर सकते थे ? ये सब टिकस जो बढ़ रहे हैं, सब सौराज के बाद ही हुए हैं। आप ही बताइये, पहले था सनीमा पर टिकस ? सैकिल पर ही देख लीजिए, साल भर में तीन-साढ़े तीन रुपये दे दिये, चलिये साहब छुट्टी हो गई।'

पीरू ने लम्बी साँस घसीट कर कहा—'पहले की क्या बात थी मियाँ! चार आने का टिकट, दो पैसे की बीड़ियाँ, पूरा तमाशा देख लीजिये जी भर के! अब ये दो पैसे साले टिकस में घुस जाते हैं।...अमाँ भाई, बड़े लोग सच कहते हैं कि राज मल्का 'टूरिया' का था।'

'वाह-वाह, उनका क्या कहना साहब! चारों तरफ़ अमन-चैन। और ये जो बादशाह हैं, जार्ज पंचुम के बेटे हैं, ये भी मल्का टूरिया ही के तो परपोते हैं!'

क़ादिर मियाँ बड़े ग़मगीन से नज़र आ रहे थे। पीरू ने ज़रा चुटकी लेते हुए कहा—'भाई सच पूछिये तो इससे हमारे

क़ादिर को जितना सदमा पहुँचा, उतना किसी को नहीं। इनकी सैकिल क्या है, अपने हिसाब जैसे खास विलायत का बना हुआ हवाई जहाज ! लो भाई क़ादिर उस्ताद, अब दे देना पंद्रा रुपये माहवार टिकस। तुम्हारे लिए क्या बड़ी बात है ?'

क़ादिर ने कुछ गरम होते हुए कहा—'जी हाँ, कोई बड़ी बात नहीं ! कौन मैं कहीं का नवाब हूँ जो दे दूँगा पंद्रा रुपये टिकस के। यहाँ तो अगर साल में भी एकदम से पंद्रा रुपये देने पड़ जायँगे तो जान सर से निकल जायगी। अरे पंद्रा तो बहुत, सात रुपये भी देने पड़ जायँ तो हम गरीबों की बधिया बैठ जाय ! भाई जान, अब तो वही हिसाब हो गया कि दिन में दो बार भी अमीनाबाद जाने की जरूरत पड़ी तो चार आने पैसे इक्के वाले को देना मंजूर है, पर सैकिल पर चढ़ना मंजूर नहीं। और क्या करेंगे मियाँ, तुम्हीं बताओ ? इससे एक गरीब भाई का फायदा तो होगा।'

हुसेनी मियाँ ने कहा—'ये तो वही बात हो गई मियाँ कि आज कहते हैं सैकिल पर टिकस दो, कल कह देंगे कि दिन में जितनी बार खाते हो, उस पर टिकस दो। तो बस हम तो टिकस देने भर के ही हो गये !'

इसी समय नवाब साहब ने दीवानखाने में प्रवेश किया। सब लोग तहजीब से उठ खड़े हुए और एक साथ खड़े होकर कहा—'तस्लीमात हुजूर ईद मुबारक !'

नवाब साहब ने मसनद पर बैठते हुए कहा—'तस्लीम भाई जान ! मुबारकबाद, तुम सबको भी। कहो भाई हुसैनी, कैसे भूल पड़े आज ?'

'कुछ नहीं हुजूर ! जनाब की कदम-बोसी का बहुत दिनों से इश्तियाक़ था।'

'अच्छा मियाँ, कभी-कभी आते रहा करो।...अमाँ आज ये क़ादिर को क्या हो गया ? इनका चेहरा क्यों उदास है ? क्या बात है, क़ादिर मियाँ ?'

'कुछ नहीं हुजूर। बात कुछ भी नहीं। बस आपकी इनायत है, गरीबपरवर।'

'नहीं भई, कुछ तो जरूर ही हो गया है। बताते क्यों नहीं ?' नवाब साहब ने फ़रमाया।

रमजानी मियाँ ने कहा—'बात कुछ नहीं हुजूर, सैकिल पर कांगरेस वाले टिकस बढ़ा रहे हैं न, इसी से जरा इन्हें सोच हो गया है।'

नवाब साहब आज बड़े खुश थे। बोले—'अमाँ होगा भी ! सोच किस बात का ? मैं कांगरेस वालों के नाम एक रुक्क़ा लिख दूँगा, तुम्हारा टिकस माफ़ हो जायेगा। आख़िर हम उसके मेम्बर हैं कि कोई मजाक ?'

हुसैनी ने क़ादिर की पीठ थपथपाते हुए कहा—'लो मियाँ, मार दिया पाला ! अब किस बात का रंज ? हुजूर सब ठीक कर देंगे। हुजूर का बड़ा रुतबा है। अल्ला करे इनकी उमर हजारी हो, दम सलामत रहे। अरे हाँ, हुजूर के जेरसाए हम लोग भी ये ईद-बकरीद की खुशियाँ मना लेते हैं।'

नवाब साहब ने कहा—'हाँ जी, आज रंज-गंज कुछ भी न करो। कितनी खुशी का दिन है। लो भई, तुम लोगों के लिए सिवैयाँ आ रही हैं। जशन करो मौज से आज।'

रमजानी मियाँ ने बड़े लहजे के साथ कहा—'आमीन, हुजूर को ईद मुबारक !'

———

३

स्वराज्य का अन्त

रमजानी मियाँ ने जैसे ही आकर यह खबर सुनाई कि सरकार ने कांगरेस वालों से 'सौराज' छीन लिया, सारे दरबार में एकदम खामोशी छा गई। नवाब साहब तक दो मिनट के लिए हाथ में सटक की निगाली थामे हुए ही बिलकुल मोम की मूरत बन गये।

पीरू मियाँ ने आखिरकार निस्तब्धता भंग करते हुए कहा—'अमाँ ये क्या हुआ ? सरकार ने सौराज वापस ले लिया ? आखिर क्यों ?'

'अब क्या बताएँ मियाँ क्या बात है ?' रमजानी ने कहा—"अवध अखबार में तो छपा है कि पंथ जी बम बनाने वाले कैदियों को रिहा करना चाहते थे। लाट साहब ने कहा, ये हरगिज नहीं हो सकता। पंथजी ने इस पर यह जवाब दिया कि जब हम अपने भाइयों को ही नहीं रिहा कर सकते तो सौराज किस बात का ? यह लीजिये हम वजारत का क़लमदान वापिस करते हैं। लाट साहब ने भी क़लमदान वापिस ले लिया। चलिये साहब, सौराज खतम !'

क़ादिर मियाँ ने कहा—'तो क्यों उस्ताद, अब सैकिल पर टिकस नहीं लगेगा ?'

'ये कोई कैसे कह सकता है, भाईजान। ये सरकारी मामला है। सब कुछ बादशाह की मर्जी पर है।'

नवाब साहब ने फ़रमाया—'अच्छा यह बताओ रमजानी हमारे मामूजान भाई की आनरेरी मजिस्ट्रैटी जो छिन गई थी, अब वापस मिल जायगी ?'

रमजानी मियाँ ने दबी सी चुटकी लेते हुए कहा—'अब ये कैसे बता सकता हूँ, गरीबपरवर ? आप लोग बड़े आदमी हैं, आपको तो मालूम भी हो सकता है। हम लोग तो इखबार में पढ़ते हैं, वही जान लेते हैं।'

सब लोग ख़ामोश बैठे रहे। रमज़ानी मियाँ ने आख़िरकार जेब से बीड़ी निकाली।

'एक हमें भी देना तो उस्ताद !'—पीरू ने कहा।

'मगर भाई मेरे पास माचिस नहीं है।'—रमजानी ने कहा।

'लो, हमसे माचिस'—क़ादिर मियाँ ने दियासलाई के एवज़ में एक बीड़ी पाई।

नवाब साहब इस ख़बर से कुछ घबराये हुए नजर आते थे। बोले-'कुछ समझ में नहीं आता मियाँ कि क्या किया जाय ? हम तो समझते थे कि सौराज हो गया, अब कांग्रेस को चंदा देना कोई जुर्म नहीं। मगर देखिये तो सही, हिंदुस्तानियों क़ी किस्मत ने भी क्या पल्टा खाया है। तुम्हीं बताओ, बताओ अब कहीं हमें डिप्टी कमिश्नर साहब उतना मानेंगे ? इस ख़ान साहबी, के फेर में तो इतनी कोशिशें भी कीं, मगर अब वह सब बेकार हो गई। कुछ नहीं समझ में आता मियाँ ! यहाँ तो दिल बैठा जाता है।...अरे कोई है ? सलारू, अरे ओ सलारू ? कहाँ जाके मर गया कमबख्त। ऐ क़ादिर तुम्हीं एक गिलास पानी ले आओ लपक के। जरा जल्दी लौटना मियाँ !'

पीरू पहलवान ने उठकर हमदर्दी दिखलाते हुए कहा—'इतने बेक़रार क्यों होते हैं, बंदानवाज़ ? अल्ला सबका वेली

है। कांग्रेस की मिम्बरी कोई आपने अकेले थोड़े ही की है। बहुत से आप ही की तरह बड़े-बड़े आदमी उसके मिम्बर हैं। अँग्रेज लोग क्या इतना नहीं जानते कि वह कुरसी की वजह से हमें कांग्रेस का मिम्बर होना पड़ा। आप कह दीजियेगा कि भाई हम तो सरकार बहादुर के हमेशा ही खैरख्वाह बने रहे हैं।'

रमजानी ने भी कहा—'इसमें इतना ग़मगीन होने की क्या बात है? इसमें कुछ होता थोड़े ही है!'

पीरू ऐसे ही रमजानी से मन-ही-मन सुलगा करते हैं। मौके पर तड़ से बोल उठे—'अमाँ जाओ भी, इतने बड़े हो गए मगर तुम्हें अक्किल न आई? अब यह कौन-सी ऐसी ख़ास बात थी जो आप नवाब साहब के हुजूर में सुनाये बिना मर जाते? सारा मज़ा मिट्टी कर दिया। कहाँ तो हम लोग अजीबो-ग़रीब इल्मों की बातें कर रहे थे, और कहाँ यह ये इखबार और कांग्रेस का रोना आप आते ही आते सुनाने बैठ गये। और फिर ये इखबार की बात—ख़ुदा जाने सच्ची कि झूठी...?'

रमज़ानी को तैश आ गया। तमक कर बोले—'ऐसी मुरव्वत पर सौ-सौ फिटकार! कौन कहता है कि यह ख़बर झूठी है? एक इखबार हो तो कहा जाय, हिंदी, उर्दू, अँग्रेजी तक के इखबारों में तो यह खबर छप गई। सारे चौक अमीनाबाद और नख़ास में तो इसी को लेकर बड़े-बड़ों में बात-चीत हो रही है, और तुम कहते हो कि झूठ? जाओ मियाँ, हमारे मुह मत लगना। हम कभी ज़लील आदमियों से बात करना भी पसंद नहीं करते। ऐसों की सोहबत भी......'

तो इसके मानी यह है कि हम सब लुच्चे-उठाईगीरें हैं, एक फ़क़त तुम्हीं शरीफ़ हो—क्यों? तुफ़ है, जिसका नमक

खाते हो, उसे ही, उसके मुँह के सामने, ऐसी ख़राब बात—'हाय-हाय !'

'देखिये, मुँह सम्भाल के रहा कीजिए पीरू। यह सारी पहलवानी पल भर में हवा कर दूँगा। जो मुँह में आया बक दिया। कह दे कोई इंसाफ़ से कि मैंने हुजूर की शान में कुछ भी कहा हो।'—रमजानी ने तैश के साथ कहा।

नवाब साहब यों ही परेशान थे। उस पर यह मामला होते देखकर उनकी परेशानी और भी बढ़ गई। बोले—'अमाँ तुम चुप क्यों नहीं रहते हो रमजानी ? फ़िजूल में बात बढ़ा रहे हो।'

'आप तो जब होता है हमें ही दबा लेते हैं हुजूर ! अब इन पीरू को देखिए न, कैसी बे-सिर-पैर की जोड़ते हैं। इनकी तबियत तो हुजूर हमेशा यही रहती है कि यहाँ से और सब मौकूफ़ कर दिये जाएँ; फिर ये मजे से सबकी रोटी खाया करें। आप ख़ुद इंसाफ़ कीजिये गरीबपरवर कि इस वक्त मैंने क्या कहा था ?'

पीरू मियाँ बोले—'कहा क्या था...'

नवाब साहब ने बीच में ही डाटकर कहा—'चुप रहो जी पीरू। जो मन में आया बक दिया। ख़बरदार, हमारे यहाँ ऐसी बात-चीत फिर की......'

इसी वक्त सैयद माशूकअली साहब तशरीफ़ लाये। सैयद साहब कांग्रेस के बड़े हिमायती हैं। नवाब साहब इन्हें देखकर इतने घबराये कि ग़श-सा आने लगा। लड़खड़ाती हुई आवाज में उन्होंने कहा—'सैयद साहब, माफ़ कीजिएगा। आप अब

यहाँ आने की तकलीफ़ न उठाया करें। आप ठहरे कांग्रेसी। जरा-सी देर में साहब हमसे नाराज़ हो जाएँ तो ?'

सैयद साहब मुस्कराते हुए उठ खड़े हुए। कहा, 'आदाब !'

नवाब साहब ने झुककर जवाब देते हुए कहा—'तस्लीमात। बड़ी इनायत की आपने !'

४

सिनेमा रहस्य

नवाब साहब के दरबार को अगर पोलिटिकल कौंसिल मान लिया जाय तो मियाँ पीरबख्श पहलवान को 'अपोजीशन पार्टी-का नेता मानना ही पड़ेगा। साल के तीन सौ पैंसठ दिनों में जिस दिन पहलवान दरबार में नहीं आते, वह दिन नवाब साहब की 'जंत्री' से बाहर निकाल दिया जाता है। मानी इसके यह हैं कि पहलवान के बिना कुछ रंग नहीं जमता, मियाँ।

रमजानी मियाँ को इससे बहुत बुरा लगता है, पर बेचारे कुछ कह नहीं पाते। उस दिन भी यही बात हुई। पीरू मियाँ आये नहीं, नवाब साहब को जमुहाई आने लगी, क़ादिर मियाँ ने ख़ुशामदी तीर छोड़ा—'पहलवान के बगैर रंग जम ही नहीं पाता हुजूर!'

रमजानी बेचारे हरिपुरा की कांग्रेस का हाल सुनाते ही रह गए और दरबार बरख़ास्त हो गया।

दूसरे दिन सब कोई मौजूद थे। गपशप चल रही थी। तभी पहलवान आये।

'सलामवालेकुम, सरकार!'

वालेकुम सलाम, भाई। अमाँ, तुम तो बीच-बीच में ऐसा गोता खा जाते हो मियाँ, कि बस क्या बताएँ। सारा मज़ा मिट्टी हो जाता है। कल जरी कुछ सुरूर गठा था। सोचा था कि पहलवान से दो-दो चोंचे होंगीं।'

गर्व से एक बार रमजानी की ओर ताक कर पहलवान मुस्कराये। फिर नवाब साहब से अदब के साथ कहा—'वल्लाह, क्या शायराना तबियत पाई है हुजूर ने भी! अहा हा हा खुदा की कसम, यह दो-दो चोचों वाला फ़िकरा! क्यों भई, रमजानी!'

रमजानी और क़ादिर ने भी जी खोल कर दाद दी।

नवाब साहब गुलगुल हो सटक सटकाने लगे।

पीरू मियाँ थोड़ी देर बाद खीसें निपोरते हुए बोले—'कल हुजूर जरी सनीमा देखने चला गया था। साथ के जोर करने वाले दो तीन पहलवानों ने कहा, अमाँ पीरू, आज तो सनीमा दिखाओ भाई जान। हमने कहा, कहाँ से दिखलाएँ मियाँ, आज-कल टेंट गरम नहीं है। पहलवान लोग हँसकर बोले, तुमने कहा और हमने मान लिया। सारी दुनियाँ में तो हुजूर नवाब-ज़ादा फरजंदअली साहब का मुबारक नाम रोशन है, उनकी दरियादिली और साहब तबियत का हाल ख़िलकत जानती है, और तुम तो उनके ख़ास मुसाहब हो। तब फिर तुम्हारी टेंट खाली हो—यह हम मान नहीं सकते मियाँ।' इस पर हुजूर हमने सोचा अगर जाते नहीं तो हुजूर की शान में बट्टा लगता है, और अगर जाते हैं तो भी हुजूर आप ही समझ सकते हैं कि हम ग़रीब आदमी न मालूम किस तरह हुजूर के जेरे-साये परवरिश पाते हैं। लेकिन बंदानवाज, हमने सोचा कि चाहे आज मलाई न खाएँगे तो कुछ हरज नहीं, मगर सनीमा जरूर दिखाएँगे इन लोगों को।'

नवाब साहब बेहद खुश हुए। बोले, 'अरे भाई वाह पहल-वान, तुमने तो मेरी इज्जत बचा ली। सचमुच तबियत ख़ुश हो गई तुमसे। अच्छा लो, यह पाँच का नोट हमने दिया।'

पहलवान ने झुककर सलाम किया और लपक कर नोट लिया। पीरू ने फिर कहा—'तमाशा अच्छा था हुजूर। माधोरी-बिलमोरिमा की 'इक्टिंग' थी ग़रीबपरवर। अब क्या बयान करूँ बंदानवाज, जिस दम जंगल में से बिलमोरिया ने घोड़ा भगाया है—अहा-हा-हा, कुछ कहते नहीं बनता उस दम का सीन! बड़ा ला जवाब! क्या कहने हैं, बिलमोरिया के! माधोरी भी ग़ज़ब की खूबसूरत है, मगर बिलमोरिमा पर जान देती हैं, सरकार!'

नवाब साहब इत्मीनान के साथ सटक गुड़गुड़ाते हुए बोले—'तमाशा क्या था मियाँ?'

'तूफानी टोली था हुजूर। बड़ा लाजवाब तमाशा!' कादिर ने ज़रा मजे में आकर कहा—'बिलमोरिया और माधोरी का क्या कहना, उस्ताद! कमाल का काम करते हैं।'

नवाब साहब ने फरमाया—'अमाँ वाह, क्या करिश्मा है सनीमा भी! पहाड़, समंदर, रेल, जहाज सभी कुछ देख लीजिये। कुछ समझ में नहीं आता। अक़्ल हैरान हो जाती है?'

रमजानी ने कहा—तस्वीरें होती हैं, सरकार। इसको 'फिलिम कहते हैं, सब फोटू ली जाती हैं। वही चलती हैं दीवार पर।'

पीरू ने तड़ से टोक दिया—'इनकी बातें! जरी सुनियेगा. फोटू नाचेंगी, गायेंगी, बोलेंगी? अरे वाह रे रमजानी, खूब पढ़े-लिखे आदमी हो मियाँ!'

ताव रमजानी को भी आ गया। कहा—'फिर वही बात! अमाँ हमने एक बाबू साहब से पूछा था, उन्होंने यही बतलाया। अब वह अँग्रेजी पढ़े-लिखे, आलिम फ़ाजिल आदमी—उनकी बात कहीं झूठी हो सकती है?'

'अरे मियाँ, जाओ भी। तुम भी बस पूरे गौखे ही रहे उस्ताद। अमाँ, उन्होंने तुमको बहका दिया। जरी तुम्हीं अपनी अकिल से काम लो—कहीं तस्वीरें नाचेंगी, बोलेंगी?' पीरू ने लहजे के साथ कहा।

'अच्छा, तो फिर तुम्हीं बताओ कि क्या बात है?' नवाब साहब ने फ़रमाया।

'हाँ हुजूर, बात यह है कि सब यहीं काम करते हैं। बड़ा भारी इस्टेज बनता है, कलकत्ते की कोरंथियन-कम्पनी से भी बड़ा!' पीरू ने कहा।

रमजानी ने आड़े हाथों लिया। बोले—'अच्छा, जब बिजली फेल हो जाती है तब मनीजर साहब आ के ये क्यों कहते हैं कि मशीन अब नहीं चलेगी। इस्टेज होता है तो ठेठर और सनीमा में फ़रक ही क्या?'

पीरू ने बात कुछ पलटते हुए कहा—'हाँ हाँ तो भाईजान, यही तो मैं भी अरज करने जा रहा हूँ कि जब लैट फेल हो गई तो क्या देखिएगा? ठेठर और सनीमा में यही तो बात है कि ठेठर नकली होता है, उसमें लैट कहाँ से होगी। सनीमा के माने ये हैं कि मशीन लगी है यहाँ लखनऊ में, और वह लैट फेंक कर विलायत तक की बातें दिखा देते हैं।'

नवाब साहब अचकचा गए। बोले, 'भाई मशीन क्या है, जादू है जादू!'

पीरू ने कहा—ऐ, 'जादू तो है ही, हुजूर! जादू न होता तो आप ही फ़रमाएँ कि ये लोग अलादीन का चिराग़ कहाँ से दिखला सकते थे? सब जादू तो है ही।'

क़ादिर मियाँ अब तक तो बैठे थे चुपचाप, पर अब उनसे न रहा गया। बोले—'हुजूर, लखनऊ में एक फिलिम खींची जा

रही थी, गोमती पार। हमने अपनी आँखों से देखा। एक मशीन खर-खर बोल रही थी और काम हो रहा था। उसी सीन को फिर हमने सनीमा में देखा। बड़ा ताज्जुब हुआ सरकार हमने फिर मनीजर साहब से पूछा। उन्होंने कहा कि तब तस्वीर खींची जा रही थी, और अब सनीमा में दिखाई जा रही है। तो हुजूर, रमजानी ने सच्ची बात कही। मनीजर साहब ने भी हमसे यही कहा कि तस्वीर है। और पहलवान का दिमाग़ तो कुंद है कुंद। इन्हें क्या मालूम ?'

नवाब साहब ने फरमाया—'जब खुद मनीजर साहब ने क़ादिर से ऐसा फ़रमाया है तो बात एकदम सच्ची है। अमाँ पीरू, तुम्हें ख़ाक भी अक़्ल नहीं ? एकदम लिब-लिब ! अच्छा क़ादिर, आज हम तुम और रमजानी चलेंगे। पीरू तो देख ही आये सनीमा।'

रमजानी पीरू की तरफ देखकर मुस्करा दिये।

५

इमामबाड़े की रोशनी

'बन्दगी-अर्ज है, जहाँपनाह।'

'आओ जी रमजानी, बड़ी देर कर दी आज!'

'कल हुजूर जरी इमामबाड़े की रोशनी देखने चला गया था।'—रमजानी ने कहा।

क़ादिर भावावेश में आकर बोले—'अरे अब वह रोशनी कहाँ? मिट गया लखनऊ का मुहर्रम भी।'

पीरू पहलवान हुमस कर बोले—'अरे मियाँ, रोशनी तो परसों देखी थी, हुजूर के साथ। उस दिन बड़े-बड़े अमीर-उमरा लोगों का जमाव था। लाट साहब तक आए थे।'

क़ादिर मियाँ चकित हो बोले—'अच्छा! लाट साहब तक आए थे?'

'अरे उस्ताद, उस दिन लाट साहब को अपनी आँखों से देखा, नजदीक़ खड़े होकर। मगर भई हुजूर की बदौलत ही यह सब रुतबा हासिल हुआ कि बड़े-बड़े डिप्टी कलक्टर तक हमारी तरफ हैरत-भरी नजरों से देख रहे थे, कहते थे कि आख़िर यह अपना आदमी लाट साहब के पास कैसे खड़ा हो गया?'

रमजानी मियाँ ऐसे ही बातों पर तो फुँक जाते हैं। जरा तीखी-महीन चुटकी लेते हुए कहा—'अमाँ वाह भई पीरू, तुमने

तो नाम पैदा कर लिया, उस्ताद ! लाट साहब ने तुम्हें खुद ही अपने पास बुलाया होगा ?'

पीरू इस व्यंग को समझ न सके, बोले—'अरे हुजूर के साथ था उस दिन। लाट साहब ने हुजूर से बड़े तपाक के साथ हाथ मिलाया, और हाथ में हाथ लेकर इमामबाड़े में घुसे। मैं हुजूर और लाट साहब के पीछे-पीछे चला जा रहा था।'

नवाब साहब ने मसनद का सहारा लेते हुए, सटक का एक लम्बा क़श खींचकर, पीछे की ओर कृतज्ञता-भरी मुस्कान से देखा।

पहलवान सुना रहे थे—'लाट साहब हुजूर से हँस-हँस के बातें कर रहे थे। फिर अपनी मेम साहब से कहा, देखो ये नवाब साहब यहाँ के नामी रईसों में से हैं। इनसे हमारी बहुत पुरानी दोस्ती है। यह हमारे लंगोटिया यार हैं। तब मेम साहब ने भी हुजूर से हाथ मिलाया। लाट साहब उसके बाद सरकार के गले में हाथ डालते हुए बोले—'अमाँ नवाब साहब, तुम तो माई डियर कभी हमारी कोठी पर आते ही नहीं भाई जान। तुम्हें तो हम कई बार याद कर चुके हैं।' बड़े-बड़े अफ़सर लोग हैरत में थे यह क्या माजरा है। लाट साहब की ख़िदमत में बहुत से रईस पान-सिगरट पेश करने लगे। हुजूर ने मेरी तरफ़ जो इशारा किया तो चट से मैं पान की डिबिया खोलकर आगे बढ़ा और सरकार के हाथ मे डिबिया देकर अदब के साथ ताज़ीम की। लाट साहब ने हुजूर के हाथों ही दो गिलौरियाँ क़बूल कीं और फिर हँस के फ़रमाया, तुम्हारा नौकर तो बड़ा सलीकेदार है। इसे मैं अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। बस हुजूर मेरी तरफ देख के मुस्कराये और फ़रमाया, लाट साहब की ख़िदमत में जाओ पीरू। मैंने अदब के साथ फ़रशी-सलाम कर लाट साहब से

अरज किया कि मैं तो गुलाम हूँ सरकार, जैसे हुजूर नवाब बहादुर साहब का ख़ादिम वैसे जहाँपनाह का भी। मुझे कुछ उजर थोड़े ही हो सकता है। लेकिन ख़ता माफ़ हो ग़रीबपरवर, अगर यह सर कहें तो ख़िदमत में हाज़िर कर दूँ, मगर मैंने हुजूर नवाब साहब के जेरसाए रहकर उन्हीं की क़दमबोसी की जिन्दगी भर ठानी है। बस भाई, इस पर तो लाट साहब इस नाचीज पर इतने ख़ुश हुए कि झट से दस का नोट अपनी पाकिट से निकालकर मुझे इनाम देते हुए कहा—बड़ी तबियत ख़ुश हुई तुम से। तुम हमेशा नवाब साहब की ख़िदमत में रहना, यह हमारे जिगरी दोस्त हैं।'

नवाब साहब बहुत ही प्रसन्न थे उस दिन। सचमुच पीरू ने उस दिन उनका रुतबा दुवाला कर दिया था। मुस्कराते हुए पीरू से कहने लगे—'अच्छा पीरू, जो उस वक़्त लाट साहब तुम्हें अपने साथ ले जाते तो?'

पीरू छाती फुलाकर बोले—'यह जान चाहे चली जाए सरकार, पर यह ख़ाकसार सिवा हुजूर के और किसी की नौकरी नहीं बजा सकता। लाट साहब अगर मुझे आप से माँगकर ले जाते तो मैं उनकी कोठी में जाकर मेमसाहब के पैर पकड़ कर रोता और वह लाट साहब से कहकर मुझे आपकी खिदमत में फिर भेज देतीं।'

नवाब साहब उछल पड़े, कहा—'अरे वाह पहलवान। क्यों न हो? वाह, इस वक़्त तुमसे तबियत खुश हो गई, उस्ताद। इनाम पाने लायक़ बात कह दी तुमने।'

पीरू अति नम्र-भाव से खीसें निपोरते हुए बोले—इतना शरमिन्दा न करें सरकार। मैं तो गुलाम हूँ आपका। कभी

नमक-हरामी थोड़े कर सकता हूँ।'—यह कहकर उसने अर्थ-भरी दृष्टि से रमजानी की ओर ताका।

मियाँ रमजानअली यह ताना समझ गए, लेकिन जहर के कड़ुवे-घूँट सा निगलते हुए बोले—'अरे साहब, हमारे हुजूर का बड़ा रुतबा है। जरी आप ख्याल फ़रमाइए कि जिस वक़्त हुजूर लाट साहब के साथ हँसी-मजाक करते हुए जा रहे होंगे, उस वक़्त न जाने कितने अमीरों के दिल पर छुरियाँ चल रही होंगी। मगर इस वक़्त सौराज में पंथ जी का बोल-बाला है। लाट साहब के किसी दरजे तक भी उनकी शान कम नहीं है, आज कल।'

पीरू चट से कह उठे—'अमाँ पंथ जी भी तो उस दिन वहीं थे। लाट साहब ने उनसे कहा—देखिए वजीर साहब आप हमारे जिगरी दोस्त हैं। तब पंथ जी ने हुजूर से हाथ मिलाते हुए फ़रमाया कि आपकी तारीफ़ तो एक अरसे से सुन रहा था लेकिन नियाज हासिल करने का इत्तिफाक आज ही हुआ। आप तो हमारी कांगरेस के मिम्बर हैं, साहब!'

इसी वक़्त अन्दर से एक महरी आई और कहा—'हुजूर बेगम साहिबा आज ताजि़या देखने जाएँगी। आपको बुलाया है।'

सटक के दो-तीन क़श खींचकर नवाब साहब बोले—अच्छा, कह दो, आते हैं।'—फिर मुसाहबों की ओर मुख़ातिब हुए और फ़रमाया—'अच्छा भई, जाते हैं। आज बेगम साहबा की फ़रमाइश है ताजि़या देखने की।'

अलेक-सलेम की पाबन्दी के बाद दरबार दरख़ास्त हुआ।

रास्ते में क़ादिर ने पीरू की पीठ थपथपाते हुए कहा—

'आज तो नवाब साहब को तुमने अपना गुलाम बना लिया उस्ताद !'

पीरू ने अकड़ के साथ उत्तर दिया, 'अमाँ गुलाम तो वह हमेशा ही हमारे हैं ।'—और फिर चौक की तरफ़ चल दिए ।

क़ादिर ने क्षुब्ध भाव से रमजानी से कहा—'देखे तुमने इनके मिजाज ?'

'तुम्हीं देखो ।' कहकर रमजानी ने मुँह बिचका दिया ।

क़ादिर बोले—'सच कहता हूँ मियाँ, इस दरबार की लौंडियाही सोहबत में तुम्हारे ऐसे आक़िल की क़दर नहीं । वरना तुम तो, क़सम ख़ुदा की, एक हीरे हो हीरे !'

रमजानी गद्गद भाव से कहने लगे—अमाँ भाई, क्यों शरमिन्दा करते हो ? इस तारीफ़ के लायक़ तो तुम हो भाईजान ! सच कहता हूँ । मगर इस साले पीरू ने, ख़ुदा इसे ग़ारत करे, तुम्हारी-हमारी कदर खो दी उस्ताद । और इन नवाब साहब को क्या कहूँ ?—पूरे गौखे हैं, यह ।'

क़ादिर ने जरा अकड़ के साथ कहा—'घबराते क्यों हो ? पीरू की अक़ल न दुरुस्त कर दी तो नाम क़ादिर नहीं । कभी दाँव पड़ने दो जरी । ये कागज की नाव कै दिन चल सकती है मियाँ ? आख़िर हमारा भी तो ख़ुदा है ?'

रमजानी ने एक निश्वास छोड़ते हुए कहा—हाँ भई इसमें क्या शक है । अच्छा सलाम वाले कुम ।'

'वाले कुम सलाम भाई । अच्छा चल दिए अब ।'

और पार्टी मीटिंग बरख़ास्त हो गई ।

४

सिनेमा रहस्य

नवाब साहब के दरबार को अगर पोलिटिकल कौंसिल मान लिया जाय तो मियाँ पीरबख्श पहलवान को 'अपोजीशन पार्टी' का नेता मानना ही पड़ेगा। साल के तीन सौ पैंसठ दिनों में जिस दिन पहलवान दरबार में नहीं आते, वह दिन नवाब साहब की 'जंत्री' से बाहर निकाल दिया जाता है। मानी इसके यह हैं कि पहलवान के बिना कुछ रंग नहीं जमता, मियाँ।

रमजानी मियाँ को इससे बहुत बुरा लगता है, पर बेचारे कुछ कह नहीं पाते। उस दिन भी यही बात हुई। पीरू मियाँ आये नहीं, नवाब साहब को जमुहाई आने लगी, क़ादिर मियाँ ने खुशामदी तीर छोड़ा—'पहलवान के बगैर रंग जम ही नहीं पाता हुज़ूर!'

रमजानी बेचारे हरिपुरा की कांग्रेस का हाल सुनाते ही रह गए और दरबार बरख़ास्त हो गया।

दूसरे दिन सब कोई मौजूद थे। गपशप चल रही थी। तभी पहलवान आये।

'सलामवालेकुम, सरकार!'

वालेकुम सलाम, भाई। अमाँ, तुम तो बीच-बीच में ऐसा गोता खा जाते हो मियाँ, कि बस क्या बताएँ। सारा मज़ा मिट्टी हो जाता है। कल जरी कुछ सुरूर गठा था। सोचा था कि पहलवान से दो-दो चोंचे होंगी।'

नवाब साहब ने गले मिलवा दिये थे, मगर जो दिल फट गया, वह कैसे जुड़ता ?

नवाब साहब ने फ़रमाया—'अमाँ क्या बात है, उस्ताद ? आज चेहरे पर ये मुर्दनी क्यों ?'

पीरू ने कोई जवाब न दिया, खाली चटाई की सीकें ही चुपचाप नीची गर्दन किये तोड़ते रहे ।

'अमाँ पीरू ?'

'जी सरकार ।' पीरू ने जरा गर्दन उठाकर हुजूर की ओर देखा ।

'आज सुस्त क्यों हो ? भई बात क्या है ? अमाँ हमसे भी छिपाओगे, ?'—नवाब साहब ने कहा ।

'बात कुछ भी नहीं हुजूर । सब मेहरबानी है आपकी ।'

क़ादिर ने एक हल्का-सा टहोका मारकर कहा—'अमाँ बताते क्यों नहीं, यार क्या बात है ? जरी हुजूर की तरफ़ भी तो देखो, उनका चेहरा फ़क हो गया तुम्हें उदास देख के ।'

एक क्षण तक चुप रहने के बाद कादिर मियाँ फिर झूमते हुए बोले—'वल्लाह, क्या इख़लाक है हुजूर का भी । रईस हो तो हमारे सरकार जैसा । किसी की तकलीफ़ तो देख ही नहीं सकते । कसम खाके कहता हूँ रमजानी, हमारे हुजूर ऐसा नवाब तो कोई दुनियाँ के पर्दे पर भी नहीं होगा ।—कोई है ? तुम्हीं बताओ । किसी इख़बार में कभी पढ़ा है । किसी ऐसे बादशाह-तबियत रईस की दरिया-दिली का हाल ?'

रमजानी मियाँ झट से कह उठे—भई, इसमें तो कोई भी शक नहीं, उस्ताद ! अब तुम खुद ही सोचो, हम अदना आदमियों की तकलीफ़-आराम का ख्याल और किसे हो सकता है ?'

कादिर फिर बोले—'अमाँ बताते क्यों नहीं, क्या बात है ?'

पीरू इस बार जरा कुछ मरी-सी आवाज में बोले—'क्या बताएं मियाँ, गरीब-मार हो गई यहाँ तो। अब्बा गए हैं हज करने। वहाँ किसी ने उनका सब कुछ चुरा लिया। आज तार आया है।'

नवाब साहब बोले—'क्या तार आया है ? अमाँ इतनी दूर से ?'

रमजानी ने कहा—'तार तो हुजूर इससे भी दूर से आता है। अब आप देखिए कि विलायत तक से तार आते हैं। और विलायतें भी एक दो नहीं, सातों विलायतों के तार यहाँ आते हैं। 'अवध अखबार' में रोज ही छपा रहता है इन तारों का हाल।'

नवाब साहब ने आश्चर्य से कहा—'भई वाह ! यह खूब है !'

रमजानी बोले—अब आप ही देखिये हुजूर, कि चीन-जापान में कल लड़ाई हुई, और आज सवेरे 'अवध अखबार' में छप गया। तार न हो तो कैसे इतनी दूर की ख़बर आया करे ?'

कादिर मियाँ बोले—'अमाँ भाई एक बार हम कलकत्ते तार लगाने गए। हमारा एक मामूजात भाई वहाँ गया था। उसने तार भेजा कि तार से ही सौ रुपया रवाना करो। अब हम बड़े चक्कर में पड़े कि तार से कैसे रुपया भेजें ? खैर साहब, डाकख़ाने गए। हमने तार बाबू से पूछा, हुजूर ये तार से कैसे रुपया भेजा जाता है ?' उन्होंने कहा—'कहाँ भेजोगे ?' हमने बतला दिया। उन्होंने हमसे सौ रुपया माँगे। हमने दे दिये। फिर हमसे एक कागज पर नाम लिखाया गया, और रसीद दे दी गई। शाम को वहाँ से तार आ गया कि रुपए मिल गए।

नवाब साहब अचकचा कर एक दम हक्का-बक्का हो देखने लगे—'अमाँ ये क्या तार से रुपया भी जाता है ?'

रमजानी ने कहा—'हाँ, हुजूर तार से रुपया भी जाता है। और बड़ी जल्दी।'

'लेकिन जाता कैसे है ?' नवाब साहब ने पूछा।

'ये तार के खम्भे जो नहीं होते सरकार, इन्हीं से होके जाता है रुपया। खराखर, कुछ भी देर नहीं लगती सरकार।' कादिर ने कहा।

'मगर भई, कमाल है अँग्रेजों को भी। क्या-क्या कलें बनाई हैं ? वाह-वाह ! नवाब साहब ने निश्वास फेंककर कहा; और एक क्षण चुप रहने के बाद फिर कहने लगे—'मगर भई, हमें तो यकीन नहीं आता उस्ताद। क्यों भई पीरू तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

पीरू ने सोचा कि शायद दाँव लग ही जाय, इसी से हुमस कर बोले—'बात हुजूर ठीक मालूम होती है। अगर हमारे पास इस दम तीन सौ रुपए होते तो हम तो जरूर तार से ही अब्बा को भेज देते। क्या बताएँ हुजूर, यही सोचता हूँ कि रुपए बगैर परदेस में उनकी क्या हालत होगी ! मगर लाचार हूँ, गरीब परवर। आप ही बताइए कि कहाँ से भेजूँ ?'

नवाब साहब इस समय तार के मनीआर्डर की बात सोच-सोचकर हैरान हो रहे थे। वह आजमाना चाहते थे कि यह बात कहाँ तक सच है।

आखिर उन्होंने तय ही कर लिया कि तार का मनीआर्डर किसी को देना चाहिये। नवाब आदमी, तबियत में आ गया। बोले—'अच्छा लो हम हाजी साहब को ही भेजेंगे रुपया। पीरू,

जाके खजाञ्ची साहब से रुपया माँग लाओ।' पीरू प्रसन्न मन उठकर दौड़े हुए गये।

रमजानी को बड़ा क्षोभ हुआ। उसके शत्रु को एक दम तीन-सौ रुपये मिल रहा है।

रमजानी ने बड़ी हिम्मत करके कहा—'हुजूर आपको पता कैसे लगेगा कि रुपया उन्हें मिला कि न मिला। हमारी समझ में तो हुजूर यहाँ ही किसी के नाम से भेजिए। देखिये आपके सामने ही उसे रुपया मिल जायगा।'

कादिर ने भी हुजूर को यही समझाया। नवाब साहब की समझ में बात आ गई। बोले—'अच्छा, जाओ हमारी तरफ से अपने नाम ही मनीआर्डर लगा आओ। हम भी तो जरी देखें।'

उधर पीरू जब रुपया लेकर आए और रमजानी जब नवाब साहब की आज्ञा से रुपया लेकर चला तो उसके कान ठनके।

❀ ❀ ❀

आध घण्टे बाद जब रमजानी के नाम तार का मनीआर्डर आया तो पीरू को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी छाती पर मुक्का मार दिया हो।

७

मुन्नन का मुजरा

धुली हुई चाँदनी रात। भीनी-भीनी ठंडी हवा चल रही थी। मियाँ पीरू ने कहा—'आज तो हुजूर कितना अच्छा मौसम है! क्या कहने हैं इस चाँदनी के भी! च्-अहा-हा-हा, सुभान अल्लाह!'

कादिर मियाँ उस वक्त जरा मजे में बैठे हुए थे। ताड़ीखाने का नाच उनकी आँखों में बार-बार झूम रहा था। झट-से कह ही तो दिया, "इस दम तो हुजूर नाच होना चाहिये।"

सटक की निगाली पर खस बँधी हुई थी, और उस पर बेले का हार लिपटा हुआ था। उस दिन नवाब साहब भी जरा कुछ यूँही से मजे में थे। कादिर के कहने पर वे एक बार उसकी ओर देख कर चौंके, फिर देखते रह गए।

रमजानी मियाँ ने भी शिगूफा छोड़ा—'भई तवारीखों में पढ़िये इसका मजा। छतर-मंजिल में दस-दस हजार रण्डियाँ एक साथ नाच रही हैं, और नाचना भी क्या?—अमाँ, फिर्की भी उनके सामने मात, और नवाब वाजिद्द अली शाह साहब बैठे देख रहे हैं। तो यह मजे थे सरकार उस वक्त में।'

पीरू पहलवान चाहे जितने नशे में क्यों न हों, मगर जब रमजानी की नस दबा लेते हैं तो आसानी से नहीं छोड़ते। चट से बोल उठे—'अमाँ कुछ तो सोच समझ के बोला करो भाईजान! इतना नसा किस काम का जो कि हुजूर के सामने

तमीज़-तहज़ीब के साथ भी पेश न आ सको? क्या तुम ने हुजूर को कम समझ रक्खा है किसी से? ख़ामख़ाँ तवारीखों का हाल लेकर बैठ गए। अभी तुम्हें हुजूर की दरिया-दिली का हाल मालूम ही क्या है हम से पूछो, हमारी आँखों के सामने देखते ही देखते एक दिन रात में सरकार ने ढाई लाख के नोट, खाली बयाने के लिए चौक भर में बटवा दिये थे। च-अहा-हा-हा, क्या लाजवाब सीन था; उस रात की महफिल का भी। कुछ कहते नहीं बनता उस्ताद! क्या पढ़ा होगा तुमने तवारीखों में भी; और देखना तो नसीब ही क्यों होने लगा भाईजान! हजारों गैसें जल रही थीं। उस दिन लखनऊ भर को दावत दी थी। मेरा ख्याल है कि कोई तीन चार हजार तम्बोली बैठा हुआ दनादन पान लगा रहा था।...फिर जो इंदर का अखाड़ा उतरा है मियाँ—वाह-वाह क्या कहने हैं उसके भी—बस कुछ पूछो मत! लखनऊ की महफिल ही उस दिन से ख़तम हो गई। रईसों ने कहा—अब इससे अच्छी महफ़िल करा सकता हो तो कोई करावे! मगर भई, हौसला भी तो चाहिये इन सब बातों के लिए। अब हर कोई हमारे हुजूर का मुकाबिला थोड़े ही कर सकता है?

कादिर मियाँ झूमते हुए बोल उठे—'अमाँ, तुम भी क्या ख़ामख़ाँ का पचड़ा लगाए बैठे हो?' मगर जो ख़याल आया मजलिस का, नवाब साहब के गुस्से का और पीरू की चुग़ल ख़ोरी की आदत का, तो चट से नशा हिरन हो गया। फौरन ही बात बदलते हुए कह दिया—'अमाँ इसको दुनिया जानती है कि हुजूर से बढ़कर रईस सारी खिलकत मे कोई नहीं है। फिर बार-बार उस बात को कहना भी हमें टुच्चा-पन मालूम होता है। तुम क्या, और हम क्या, सारी दुनिया जानती है कि कैसी

गजब की महफिल थी। अब तो उस दम का सीन याद करते दिल लहालोट होने लगता है। कितना अच्छा मुजरा था! जब बड़ी मुन्नन ने गाया था—'नेहा लगाय कहाँ जैहो रे परदेसी बालम।' लोग झूम-झूम उठे थे मियाँ! चारों तरफ से वाह-वाह के सिवा और कुछ सुनाई नहीं देता था। मगर अब कौन गायेगा भाई जान ऐसी पक्की चीजें? सच पूछिये तो अब कदरदाँ ही न रहे। चौक उजड़ गया उस्ताद। कोई सुनने वाला न रहा तो सुनाने वाला भी कोई नहीं है भाई जान!

'अमाँ कुछ न पूछो, पक्की चीजों की कौन कहे सीधी गजलें तक भी नहीं आतीं। यार अब तो चौक के कोठों पर भी गिरामूफून बूजने लगा है!'

नवाब साहब बहुत मजे के साथ यह सब सुन रहे थे। खुशबूदार बढ़िया अम्बरी तम्बाकू की महक उड़-उड़ कर तबियत को और भी मस्त बना रही थी। नवाब साहब बड़े मजे में बोले—"हमारे बाबा जान के पास एक नजीरन रण्डी थी। एक दिन नवाब वाजिदअली शाह साहब ने बाबा जान के पास रुक्का भेजा कि भाई जान, नजीरन का गाना हमें भी सुनवा दीजिए। बाबा जान नवाब वाजिदअली शाह साहब से कोई आठ बरस बड़े थे। उन्होंने रुक्के का जवाब लिखा कि यह तुम्हारी बेजा हरकत है। बड़े भाई के साथ तुम्हें जरी लिहाज से पेश आना चाहिये। हमारे बाबा जान और नवाब वाजिद अली शाह साहब सगे मामूं-जाद भाई थे। बादशाह थे तो क्या, मगर बाबा जान से पूछे बिना पानी तक नहीं पीते थे। बादशाह सलामत के यहाँ से फिर जवाब आया कि गुस्ताखी माफ़ हो, मगर गाना जरूर सुनवा दीजिये। छोटे भाई की इतनी ज़िद मान लीजिए। तब बाबा जान ने कहा कि अच्छा। बस

जनाब, महफ़िल सजी। बादशाह सलामत तशरीफ लाए। फिर तो जनाब, नजीरन जो तान-पूरा ले के बैठी है, तो लगातार तीन दिन तक लोग झूमते ही रहे। तो ऐसे कलावंत थे! अब तो गाना सुनने की तबियत ही नहीं चाहती है; मगर अब इस वक्त तुम लोगों की मर्जी है, तो बुला लाओ किसी को?'

पीरू मियाँ ने दबी जबान, जरा मजे में कहा—"एक-एक दौर फिर होना चाहिये हुजूर, नहीं तो क्या मजा आएगा गाना सुनने में। च-अहा-हा-हा, मै भी हो, मीना भी हो, साकी भी हो, जाम भी हो, और हमारे यह हुजूर गुलफाम की तरह बैठे हुए...।'

इस जाम और गुलफाम पर तो मियाँ रमजानी तक उछल पड़े। वाह-वाह का समा बँध गया। नवाब साहब ने हँसते हुए पचास का नोट निकालकर फेंक दिया।

८

हवाई-जहाज़ की दुम

शाम का वक्त था। दरबार में पौंड़े की गण्डेरियाँ छीली जा रही थीं। हजरत मूसा की बड़ी नाव को लेकर मियाँ कादिर ने कोई लम्बा किस्सा छेड़ रक्खा था। एकाएक जनानख़ाने से महरी आई। कहा, 'ऐ हुजूर, देखिये तो सही, हवाई जहाज उड़ रहा है।'

नवाब साहब ने महरी की इस बच्चेपने की बात पर मुस्कुराते हुए फटकार बता दी। लेकिन महरी उलझ पड़ी। कहा, 'ऐ वाह, जरी बाहर उठकर देखिये तो सही, क्या करिश्मा हो रहा है।'

नवाब साहब इस बार कौतूहल पूर्वक दरबार सहित आंगन में आ खड़े हुए। देखा तो अजब करिश्मा था। हवाई जहाज की दुम से धुआँ निकल-निकल कर तरह-तरह की सूरतें बना रहा है। अब सब लोग हैरत में कि यह माजरा क्या है। देखा तो पास-पड़ोस के लोग भी चिल्ला रहे हैं, हवाई जहाज लिख रहा है। अब परेशानी यह थी कि आखिर यह लिख क्या रहा है। कुछ भी समझ में न आता था। कुछ देर बाद सोचकर पीरू मियाँ घबड़ा कर कहने लगे, 'हमारी समझ में तो हुजूर, यह जर्मनी वालों की करामात है। शायद लड़ाई का कुछ एलान कर रहे हैं।'

इतना सुनना था कि नवाब साहब के होश फ़ाख्ता हो गए।

चेहरा जर्द पड़ गया। हाथ-पाँव फूलने लगे। रमजानी मियाँ ने जो यह हालत देखी तो पीरू पर अकड़ पड़े, 'अमाँ, तुम भी ऊल-जलूल बातें बहुत बकते हो। खामखाँ का शिगूफ़ा छोड़ दिया। अँग्रेजी सल्तनत में भला कहीं यह भी हो सकता है कि जर्मनी वाले आसमान में लड़ाई का एलान छापें? पल-भर में तोप के गोलों से उड़ा दिया जाय ऐसा हवाई जहाज।'

पहलवान एक दम अकड़ गये। कहने लगे, 'हमारे मुँह न लगा कीजिये, रमजानी? मैं आप से नहीं बोलता हूँ। आप पढ़े-लिखे हैं तो अपने लिए होंगे, मेरे सामने ज्यादा तीन-पाँच की तो यहीं खोद के दफ़न कर दूँगा, समझे रहना हाँ?'

गुस्से में भरे हुए दो कदम और आगे बढ़ कर मियाँ रमजानी ने कहा, 'अच्छी तरह से सुन लीजिये, पहलवान साहब! मेरे सामने जरा अकड़ियेगा मत। तीन लातें रसीद करूँगा, यह सारी पहलवानी लुढ़कती हुई नजर आयेगी।'

पहलवान भी दो कदम आगे बढ़ कर शान हिलाते हुए बोले, 'पहली किताब पढ़ ली और अपने को बड़ा आलम-फ़ाजिल समझने लगे! यह अपनी पढ़ी-लिखी बातें जाके चंडू-खाने में सुनाया कीजिए। वहीं लोगों को यकीन आ जायगा। यहाँ रईसों की महफिल में यह आपके चोंचले नहीं चलेंगे।'

अब देखिये तो रमजानी मियाँ का चेहरा सुर्ख! मारे गुस्से के मुँह से बात नहीं निकल रही थी। जो हाथ उठाकर पहलवान को मारने चले कि कादिर मियाँ ने लपक के पकड़ लिया 'अमाँ, होगा भी। तुम भी यार खाँमखाँ टुच्चों के मुँह लग जाते हो, मियाँ! अमाँ, जिन्हें तमीज ही नहीं, उनसे बात क्या करना!'

नवाब साहब भी चिल्ला उठे, "अमाँ यह क्या चख़-चख़ मचा

रक्खी है ? किसी शरीफ आदमी का घर न हुआ अपने हिसाब जैसे कुँजड़ों का मुहल्ला हो गया !'

रमजानी मियाँ ने अकड़ कर कहा, "पहलवान से कह दीजिए हुजूर, हमारे मुँह न लगा करें। हम टुच्चों से बात करना भी पसंद नहीं करते।'

पीरू पहलवान ने चमक कर जवाब दिया, 'देखी हुजूर इसकी गुस्ताखी ! एक टुकड़खोड़ हुजूर के सामने ही हमें टुच्चा बताता है। अब मैंने क्या गलत कहा था, आप ही बताइये ? यह जर्मनी वाले लड़ाई का एलान नहीं कर रहे हैं तो फिर और क्या हो सकता है ? मैं सौ-पर-सौ की चोट लगा के बाजी लगाता हूँ। नहीं तो यही कह दें कि क्या लिखा है। यह तो बड़े आलम-फ़ाजिल हैं ना !'

नवाब साहब ने जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से मियाँ रमजानी की ओर ताका। लेकिन मियाँ रमजानी का अध्ययन-क्षेत्र 'अवध अखबार' तक ही सीमित है, इसी से बेचारे झेंपकर रह गए। नवाब साहब ने आसमान की ओर आँख उठाई तो देखा कि हवाई जहाज लिखना बंद करके उड़ा जा रहा था। असगर मिरजा अपनी छत पर खड़े हुए देख रहे थे। नीचे से नवाब साहब ने आवाज दी, "अमाँ भाई असग़र, यह क्या माजरा है ?'

बाद अस्सलाम-अलैकुम के असग़र मिरजा ने फौरन ही जवाब दिया, 'कुछ नहीं, भाई जान। यह सनलाइट साबुन का इश्तहार था।'

नवाब साहब की जान-में-जान आई। रमजानी मियाँ फड़क उठे। कहा, 'देखा हुजूर, नाहक आपको परेशान कर दिया। भला, जर्मनी का जहाज यहाँ आ सकता है ?'

कादिर मियाँ अकड़ के बोले, 'अमाँ पहलवान, हुजूर का दम खुश्क कर दिया जरा सी देर में! अमाँ भई, जो बात समझ में न आया करे, मत कहा करो। आपको क्या? आप तो हैं जाहिल-गँवार के लट्ठ। आप तो अपनी कह के छूट गए। यहाँ जरी हुजूर की तरफ देखो, जरा-सी देर में चेहरा कुम्हला गया। खुदा न करे, अभी हुजूर के दुश्मनों को गश आ जाता! अरे हाँ, ऊल-जलूल बात बक दी। शरीफजादे इतने में ही घबरा उठते हैं। और फिर हमारे हुजूर तो इतने बड़े रईस हैं—ऐश व इशरत में रहने वाले।'

नवाब साहब को भी पीरू पर गुस्सा आ गया। तैश में आकर बोले, 'हमने तुम्हें मौकूफ़ कर दिया पीरू। आज से हमारे यहाँ न आया कीजिये। जाहिलों का हमारे यहाँ काम नहीं है।'

रमजानी मियाँ ने इत्मीनान से बीड़ी का कश खींचते हुए एक बार पीरू के चेहरे की ओर देखा और लापरवाही से उस तरफ धुआँ छोड़ दिया। फिर बोले, 'मेरी एक अर्ज है हुजूर! इस बार इन्हें और माफ किया जाय। जाहिल आदमी, कुछ समझते-बूझते तो हैं नहीं, अपनी रौब में आके कह दिया।'

नवाब साहब ने कुछ उत्तर न दिया।

कादिर मियाँ गाल पर उँगली रख कर बोले, 'लेकिन क्या अजब करिश्मा था हुजूर! फ़राफर हवाई जहाज लिखता ही चला जा रहा था। मगर इन सनलैट वालों की हिम्मत को भी देखिये, झप से हवाई जहाज चला दिये।'

मियाँ रमजानी ने मजे में आकर कहा, 'अमाँ, वह करोड़ों रुपिया इससे पैदा भी तो कर लेंगे। अब जैसे चाँद-सूरज को सारी दुनिया एक साथ देखती है, वैसे ही सब ने इसे भी देखा।

लीजिये साहब सनलाइट साबन का दुनिया-भर में नाम हो गया।'

कादिर मियाँ ने लहजे के साथ कहा, 'मगर भई, क्या सनलैट का इश्तहार! आसमान के पर्दे पर तो हवाई जहाज की दुम से हमारे हुजूर का नाम लिखा जाना चाहिये। सारी दुनिया जान ले कि हाँ, यह लखनऊ के सबसे बड़े नवाब हैं।'

सटक का एक धीमा-सा कश खींचकर नवाब साहब होठों में ही मुस्कुरा दिये।

कादिर मिया ने रमजानी से कहा—'अमाँ क्यों भई रमजानी, कितना लगता होगा इसका खर्चा ?'

विद्वानों की तरह गर्दन हिलाते हुए रमजानी मियाँ ने कहा, 'यही कोई सात-आठ हजार रुपये। भई, कितनी जान-जोखों का भी मामला है। तुमने देखा ही था कितनी पटखनियाँ खाई जहाज ने।'

नवाब साहब ने रमजानी से कहा, 'अच्छा तुम इसका पता लगा रखना! फिर हम भी कोशिश करेंगे। कांग्रेस की मेम्बरी की वजह से शायद कुछ कम पर ही तय हो जाय।'

६
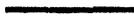
सूरज में छेद हो गया !

खाना खाकर चारपाई पर लेटे-लेटे रमजानी मियाँ ने अपने बाबाजान के जमाने का नक्काशीदार हुक्का गुड़गुड़ाते हुए 'अवध अखबार' पर जो नजर डाली तो देखा कि सूरज में धब्बा पड़ गया है। बस, फिर क्या था, चमक के उठ बैठे। अब वह बड़े शशोपंज में कि आखिर यह खबर दरबार तक कैसे पहुँचाई जाए। आसमान की तरफ़ नज़र उठाई, कहीं एक भी धब्बा नजर न आया; लेकिन अब 'अवध अखबार' में छपा है तो सही होगा ही। पहलवान की गर्दन दबाने का आज यह एक अच्छा मौका हाथ आया है। आखिर तबियत न मानी। कादिर मियाँ का दरवाजा खटखटाया। लड़के ने आकर कहा, अब्बा खाना खा रहे हैं।" और दहलीज़ में टूटा मूढ़ा लाकर बिछा दिया।

बीड़ी जला कर अभी एक ही कश मारा था कि घर के अंदर से एक महीन पर तेज आवाज बुलंद हुई, "न मालूम कहाँ से मुओं की नाक में खुशबू घुस जाती है कि आ गए पुलाव उड़ाने ! खुदा इन्हें ग़ारत करे !"

इरादा तो यह हो रहा था कि मजाक-ही-मजाक में कादिर मियाँ को आवाज देकर कहें कि अमाँ भई, अकेले-ही-अकेले भाभी की बनाई हुई लजीज़ चीजें उड़ाओगे; मगर भाभी साहबा ऐसी निकलीं कि क्या कहा जाए !

रमजानी मियाँ के गाल पर जैसे किसी ने तड़ से तमाचा

जड़ दिया। जैसे वह सचमुच ही इसके यहाँ पुलाव की खबर ही सुनकर आए हों। आखिर इस कादिर की बीबी ने यह कह कैसे दिया? मारे तैश के गला खखार कर कादिर को आवाज देने ही वाले थे कि अंदर से फिर आवाज आई, 'तुम्हीं ने दावत दी होगी। नहीं तो किसी को खबर कैसे हो कि आज इनके यहाँ पुलाव पका है? बड़ी कमाई करके रख देते हैं न, जो अपने मोहल्ले-भर को दावत दे दी? साथी भी कैसे—मुए सब-के-सब निकम्मे उठाईगीरे! ऐसे टुच्चों का साथ, फिर अल्ला-मियाँ बरकत कैसे दें? है-है, खुदा इन्हें समझे। पुलाव खिलाओ साहब इन्हें। ऐसे मरीपीटों के मुँह में जलती हुई लकड़ी रख दूँ। ऐ-हाँ, अपने बच्चों को तो नसीब नहीं होता, दूसरों को कहाँ से ठुसाऊँ!'

बरदाश्त की भी बस हद हो गई। मारे गुस्से के जन्नाटे के साथ बीड़ी फेंक दी। अबकी आवाज देने वाले ही थे कि कादिर मियाँ खुद बाहर आ गए। आते ही तपाक से हाथ बढ़ाया, 'अक्खा, रमजानी भाई हैं! मैं कहूँ कौन आया है?'

रमजानी मियाँ मरी-सी आवाज में 'हूँ' करके रह गए।

कादिर मियाँ ने कहा, 'भई, मेरा खयाल था कि नब्बन आया है। अमाँ, उससे मैं आजिज आ गया हूँ, भाई जान! ऐसा टुच्चा आदमी नहीं देखने में आया।'

रमजानी को कुछ थोड़ी-सी तसल्ली जरूर हुई कि नब्बन के धोखे में उन्हें इतनी बातें सुनने को मिलीं, वरना आते ही ऐसी ख़ातिर-तवाजा होती जैसी कि नवाब साहब के यहाँ डिप्टी-कमिश्नर की हुई थी।

'कहो भई, इतनी धूप में कैसे तकलीफ़ की?'

'ऐसे ही। एक बात दिमाग़ में आई कि नवाब साहब से कुछ रुपया ऐंठा जा सकता है,' रमजानी ने कहा।

दरवाज़े के पीछे ही कादिर की बीबी खड़ी हुई सब बातें सुन रही थी। फौरन ही एक तश्तरी में पुलाव रखकर लड़के के हाथ बाहर भेजा।

'लो भई, लो आज जरी पुलाव पका था।' मुस्कराकर, झेंप मिली हुई आजिजी के साथ हाथ मलते हुए, कादिर ने कहा।

खाने की तबियत तो जरूर थी, मगर बातें तीर की तरह दिल में चुभ गई थीं। अनमनी तबियत और रूखी आवाज में कहा, 'नहीं भाई, अभी तो खाना खाके आ रहा हूँ।'

'अमाँ, खा भी लो। पुलाव खाने में क्या है?'

'नहीं भाई जान, इस वक्त तो माफी चाहता हूँ।'

इसी वक्त घर के अंदर से लड़के ने आकर कहा, 'अम्मा ने कहा है कि अगर आप नहीं खाएँगे तो वह भी नहीं खाएँगी।'

'लो भई, लो! अब तो खाही जाओ, उस्ताद! अब यह तकल्लुफी मत दिखाओ, मियाँ!' कादिर मियाँ ने जोर देकर कहा।

रमजानी मियाँ बरफ़ की तरह पिघल गए। खूब तारीफ करते हुए पूरी पलेट साफ उड़ा गए।

फिर जो पान चबाते-चबाते बातें शुरू हुईं तो चार बज गए। तब चल दिए नवाब साहब के यहाँ।

पहलवान पहले से ही वहाँ डटे हुए कसेरू छील रहे थे।

नवाब साहब ने आते ही ताना कसा—'क्यों साहब, अब आपके यहाँ दो बज रहे होंगे !'

'नहीं हुजूर, यह बात नहीं। बात असल में यह है कि सूरज में धब्बा पड़ गया है और नखास के ऊपर उसका असर है। इसी से तबियत घबरा गई रमजानी ने कहा।

आज अखाड़े में पहलवान भी सुन आये थे कि सूरज में छेद हो गया है। कुछ रौ में आकर चट से बोल उठे, 'हाँ हुजूर, सूरज में छेद हो गया है।'

कादिर बोले, 'अब कुछ मत पूछिये गरीब परवर ! आज-कल तो आग बरसती है। जब हम लोगों की यह हालत है तो हुजूर आप बड़े आदमियों की क्या कहें ?'

नवाब साहब घबरा उठे, 'तो अब क्या होगा। हमारे यहाँ तो काफी धूप आती है। आज जो जरी ऊपर के कमरे से नीचे आने लगा तो मालूम हुआ कि ग़श आ जायगा। मैं बड़ी फिक्र में था कि आज मेरी तबियत कैसे खराब हो गई।...तो अब क्या होगा, यहाँ तो जान आफत में है। अरे हम तो हम, कहीं बेगम साहबा के दुश्मनों की तबियत...' कहते-कहते उनका गला भर आया।

कादिर मियाँ ने कहा, 'धूप का तो यह हाल है हुजूर कि हमने अपनी आँखों से देखा, सूरज में से सरासर धूप की तेज लपटें निकल रही हैं। अपने हिसाब अनारदाना छूट रहा हो सच मानियेगा गरीब परवर, उस वक्त हमारी लोगों की खोपड़ी फटते-फटते बच गई। जो नखास में कदम रक्खा कि सर से लपट निकली। वह तो कहिये जरी-सा बच गए, वरना भुन गये होते भुट्टे की तरह से।'

नवाब साहब का चेहरा इतना-सा निकल आया। बदन में काटो तो खून नहीं—चेहरा जर्द।

पीरू ने ठंडी साँस लेकर कहा, 'कयामत आ गई है हुजूर! अब यह सब दुनिया जलकर खाक हो जायगी। या खुदा, नहीं मालूम था कि अपनी ही जिंदगी में कयामत भी देख लेंगे!'

नवाब साहब की आँखों में आँसू छलछला आए। उन्हें ग़श आना ही चाहता था कि रमजानी ने लपक कर सम्भाल लिया और कादिर पंखा झलने लगे। नौकर को आवाज दी झट से चाँदी के गिलास में केवड़े का बसाया हुआ ठण्डा पानी आ गया। नवाब साहब जरा कुछ ठण्डे हुए। पर आँखें अभी बंद ही थीं। तकिए का सहारा लेकर गद्दी पर ही लेट गए। जनानखाने से तीन बार महरी आकर देख गई। बेगम साहबा घबरा रही थीं।

कादिर ने रमजानी से कहा, 'देखा मियाँ, हकीम साहब ने कहा था न, यही हालत हो जाती है। अब यही बेहोशी और ज्यादा ग़फलत में बढ़ जाती है। तब फिर खुदा न करें...? हुजूर की उमर हजारी हो, मगर सरकार को तो हकीम साहब का नुस्खा......

रमजानी ने धीरे से कहा, 'भई, वह कीमती बहुत है।'

नवाब साहब ने चट-से आँखें खोल दीं। कहा, 'किन, हकीम साहब की बात कर रहे हो?'

रमजानी ने कहा, 'वह हुजूर यूनान के सबसे बड़े हकीम हैं। आज कल यहाँ आये हुए हैं। उन्होंने ही इसका नुस्खा बताया है, मगर उसके बनने में कम-से-कम पाँच सौ रुपए खर्च हो जाएँगे। लेकिन एक बात है, बंदानवाज, फिर यह धूप वगैरा आपके दुश्मनों को कुछ असर नहीं कर सकती। बड़ी अक्सीर

दवा है। मेरी तो अर्ज यह है गरीब परवर कि आप और बेगम साहबा, दोनों ही, इसे इस्तेमाल करें। अरे हाँ, जिंदगी से ज्यादा रुपया थोड़ा ही है !'

पीरू मियाँ का चेहरा फक हो गया। आज फिर यह पाँच सौ रुपया झाड़े लिये जाते हैं। अब उन्हें रह-रहकर इसी बात का मलाल उठ रहा था कि उन्होंने इनकी बातों की ताईद क्यों की। फिर भी सम्भल कर बोले, 'हुजूर, छेद तो सूरज में हो गया है, इसमें दवा क्या करेगी ?'

कादिर ने कहा, तुम पूरे गौखे ही रहे, पहलवान ! अमाँ भाई जान, दवा के जोर से धूप की तेजी आदमी पर कोई असर नहीं करेगी। हमारे हकीम साहब को देखिए, दिन के बारह बजे मजे में चले जा रहे हैं—नंगे सिर, नंगे पैर, मगर कोई असर नहीं। कहते हैं, हमें गर्मी मालूम ही नहीं पड़ती। तो यह असर है उस दवा में।'

हरम में चिक के पीछे बैठी हुई बेगम साहबा सुन रही थीं। अंदर से महरी ने कहा, 'हुजूर बेगम साहबा ने फरमाया है कि नुस्खा फौरन बनवा लें। रमजानी की बात बिल्कुल सही है। जान है तो जहान है।'

रास्ते में पीरू ने तृषित-नेत्रों से निवेदन किया, अमाँ, हमारा हिस्सा नहीं लगेगा, उस्ताद ! देखो, आज तो हमने भी तुम्हीं लोगों का साथ दिया है, भाईजान ! इतनी रकम अकेले-ही-अकेले उड़ा जाओगे, भाई जान ? अमाँ हजम नहीं होगी।'

कादिर ने कहा, जब तुम्हें इतने-इतने रुपये मिले, कभी हम लोगों को भी पूछा ? हमेशा अकड़े रहे हमसे आज नरम बनते हैं !'

पीरू पहलवान ने कहा, 'अमाँ, पिछली बातों को छोड़ दो। अब लो; आओ, हाथ मार लो। अबकी से सबका साझा लगेगा।'

पीरू ने कादिर का कुरता पकड़ लिया। मियाँ कादिर ने अकड़ कर कुरता छुड़ाते हुए कहा' "अमाँ, हटो भी जानते नहीं, आज कल 'माशेअल्ला' लगा हुआ है। रास्ते में ही कहीं आठ बज गए तो रात-भर के वास्ते धर लिए जाएँगे हवालात में।"

पहलवान आँखें फाड़े ताकते ही रह गये।

१०

सरकस की सैर

लगातार तीन-चार हाथ झेल जाने पर भी पीरू पहलवान इस बार इन लोगों से बुरी तरह शिकस्त खा गए थे। हुसेनाबाद की ज़री निकलने वाली थी। कादिर और रमजानी एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले हुए मजे में बातें कर रहे थे। पहलवान ने दूर से ही देखा, लपक के जा पहुँचे। कादिर के पैरों पर टोपी रख दी। कहा—'अब हमारी इज्जत तुम्हारे ही हाथ है, भाई जान! जी चाहे, जिन्दा रक्खो, नहीं तो भूखों मर ही जाएँगे उस्ताद!'

बीच-बाजार में पहलवान ने अपनी इज्जत खाक में मिलाकर कादिर मियाँ का रुतबा दुबाला कर दिया, इसका उन्हें बड़ा ख़याल हुआ; पिघल गए, झट-से पहलवान की टोपी उठा कर अपने सीने से लगाया मगर अकड़ भी कायम रक्खी, कहा—'हमसे तुमसे कोई दुश्मनी थोड़ा ही है भाई जान, मगर मैं लाचार हूँ। भाई रमजानी से कहो।'

पहलवान ने दयनीय नेत्रों से एक बार रमजानी की ओर ताका, फिर कादिर मियाँ से कहने लगे, 'भई' तुम ही हमारे कसूर माफ़ करा दो इनसे। अल्ला जानता है, इनके आगे तो मारे शरम के हमारी गर्दन ही नहीं उठती मियाँ। लेकिन भाई,जो कुछ कहा-सुना हो, माफ़ कर दो उस्ताद। परवरदिगार जानता है। आज

बीड़ी पीने तक को पैसे नहीं हैं, कब भूखा ही सोना पड़ा।' कहते-कहते पहलवान की आँखों में आँसू छलछला आए।

रमज़ानी मियाँ बहुत ही रहम-दिल बन बैठे; भर्राए हुए स्वर में कहने लगे, 'अमाँ अब मत सुनाओ पहलवान। मेरे दिल को धक्का पहुँचता है। मगर भई, तुमने हम लोगों की काट भी बहुत की। तुम एक ही दिन में बम बोल गए; पर ज़रा ग़ौर तो कीजिए कि आपकी मेहरबानी से तीन-तीन दिन तक फ़ाक़े करने पड़े हैं, और फिर मेरा तो बाल-बच्चों का साथ ठहरा मियाँ! लेकिन ख़ैर, अपनी करनी अपने साथ। हमारी तरफ़ से अब तुम्हें कोई भी तकलीफ़ न मिलेगी।'

पहलवान ने नम-आँखों से रमज़ानी की ओर देखा। मियाँ क़ादिर ने कुरते की जेब से बीड़ी का बंडल निकाला और सब से पहले पहलवान के सामने पेश किया। बीड़ी निकालते हुए पहलवान ने रमज़ानी से कहा, 'कोई ऐसी जुगत बताओ उस्ताद, कि आज पुलाव की पलेटों पर ही हाथ साफ़ हो। बीड़ी का एक लम्बा क़श खींचकर, एक हाथ से ज़मीन का सहारा ले रमज़ानी मियाँ ने छत की तरफ़ धुआँ छोड़ दिया। क़ादिर मियाँ ने कहा, 'कल तो उस्ताद, सरकस देखने गए थे। अमाँ, मज़ा आ गया भई! क्या-क्या कमाल दिखलाते हैं यह सरकस वाले भी!'

पहलवान बोले, 'अमाँ, हमने सुना है कि मेम लोग तार पर गेंद खेलती हैं।'

क़ादिर मियाँ ने कहा, 'अमाँ, कहाँ की बात? हाँ भाई नाचती ज़रूर हैं।'

पहलवान बोले, 'यही क्या कुछ कम कमाल की बात है। हम-तुम भला कोई करके दिखा सकते हैं।'

क़ादिर बोले, 'भाई, हमारी समझ तो यह नजरबन्दी का

खेल है। ऐसे तार पर चढ़कर कोई भी नाच सकता है इस दुनिया में ?'

पहलवान बोले, 'नहीं भाई, नजरबन्दी नहीं हो सकती। सब सधे हुए लोग हैं। देखनेवाली तो उस्ताद एक ही बात है। इन लौंडियों का दिल भी क्या फौलाद का बना हुआ है जो फिरकी की तरह इधर-से-उधर घूमती होंगी।

'हाँ भाई, यह तो कमाल है ही', क़ादिर मियाँ ने कहा।'

क़ादिर की जाँघ पर टहोका मारते हुए रमज़ानी मियाँ बोले, 'अमाँ, आज नवाब साहब को सरकस दिखाने ही क्यों न ले चला जाय ?'

यारों की आँखें चमक पड़ीं। क़ादिर मियाँ ने उछल के पहलवान से कहा, 'लो यार, मिलाओ तो पुलाव वाला हाथ। दाँव मार दिया !'

किसी ने भी हुसेनाबाद की ज़री न देखी; बस लपक के चल दिये नवाब साहब की तरफ़। दरबार में जाके देखा तो नवाब साहब एक नजूमी को अपना हाथ दिखा रहे थे।

पहलवान ने झुक के सलामवालेकुम की। मियाँ रमज़ानी ने भी झुक के हुज़ूर की क़दम बोसी की, क़ादिर मियाँ तो पुराने खुशामदी हैं-हीं। बोले, 'अख्आह, आज मौलवी साहब यहाँ तशरीफ़ रख रहे हैं! आज हुज़ूर ने इस तरफ कैसे इनायत की ?'

कुछ नहीं भई, तुम जानते ही हो कि कहीं आते-जाते नहीं हैं; मगर आज इधर आया था। नवाब साहब ने भी बुलवा लिया। हम तो भई, मोहब्बत के भूखे हैं। नवाब साहब ऐसा शरीफ़ आदमी होना मुश्किल है। कहो, भई तुम यहाँ कैसे ? मौलवी साहब ने दाढ़ी पर कंघी करते हुए पूछा।

'हम तो सरकार की दी हुई रोटी खाते ही हैं। एक बार आपको ख़याल होगा, हमने सरकार की ही तारीफ़ आपसे की थी।'

'अरे भई, लखनऊ में ऐसा कौन है, जिसने नवाब साहब की तारीफ़ न सुनी हो ?'

पीरू पहलवान ने कहा—'अरे साहब, हमारे हुजूर का बड़ा रुतबा है। कल सरकस वाले भी रमज़ानी मियाँ से बड़ी खुशामद कर रहे थे कि भई, एक दिन हुजूर की क़दमबोसी करने को हमें मिल जाए।'

नवाब साहब ज़रा सीधे होकर बैठ गए।

क़ादिर ने जो यह तौर देखा तो चट-से कहा, 'अमाँ, मनीजर ने क़दमों पर टोपी रख दी। कहने लगा, 'लखनऊ आकर अगर हमने नवाब साहब के नियाज़ हासिल न किए तो बड़ा मलाल रह जाएगा। अमरीका से तो तारीफ़ सुनता हुआ चले आ रहे हैं।"

नवाब साहब बड़े ही ख़ुश हो गए। कहने लगे, 'अमाँ, अमरीका में हमारा नाम कैसे पहुँचा मियाँ ?'

पीरू ने चट से उत्तर दिया, 'हुजूर रमज़ानी की करामातें ऐसी ही होती हैं। 'अवध-अख़बार' में हुजूर की तारीफ़ छपवाई थी।'

कृतज्ञता-भरी दृष्टि से मियाँ रमज़ानी की ओर ताकते हुए नवाब साहब मसनद के सहारे लेट-सा गए और दो-तीन क़श खींचकर कहने लगे—'भई हमारे रमज़ानअली सा आक़िल आदमी इस दुनिया में ज़री मुश्किल से ही मिलेगा। हाँ तो सरकस के मनीजर ने क्या कहा था ?'

रमज़ानी बोले, 'हुजूर की तारीफ़ के सिवा और कह ही क्या सकता था ? यही कहता था कि नवाब साहब से हमारी तरफ़ से अर्ज करना कि एक दिन तशरीफ़ लाएँ; वरना हम ही उनकी ख़िदमत में हाज़िर हों।'

'नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है मियाँ ? वह मनीजर आदमी, ख़ुद यहाँ तकलीफ़ करें ? हम चलेंगे।'

शाम को सब लोग सरकस देखने गए। रमज़ानी ने पहले से ही एक नक़ली मैनेजर का प्रबन्ध कर लिया था। शेरों की लड़ाई में नवाब साहब ने करीब छ:-सौ रुपया मैनेजर को इनाम दिया।

लौटते समय नवाब साहब ने कहा, 'बड़ा मजेदार सरकस रहा मियाँ।'

रमज़ानी कहने लगे, 'अरे हुजूर सरकस करता था राम-मूरती। एक बार का जिक्र है हुजूर, राममूरती रेल पर जा रहा था। उधर गलती से उसी पटरी पर एक और रेल आ रही थी। हंगामा मच गया कि अब रेल लड़ी। लोग हाय-तोबा मचाने लगे। मगर वाहरे राममूरती ! जो ये माजरा सुना तो खट से कूद पड़ा। देखा तो सामने से रेल आ रही है, ड्रेवर परेशान है, मगर रेल रुकती नहीं। राममूरती वाली रेल खड़ी हो गई, और वह रुकी नहीं, उसकी कोई कल खराब हो गई थी। बस साहब, राममूरती ने लँगोट कसा और सर के बल इंजन को पीछे ढकेलना शुरू किया और उसे स्टीशन पर तक यों ही ले गया। तो ये जोर थे उसमें। तभी तो हुजूर वह दस-दस हाथियों को अपने पेट पर कुदाता था।'

नवाब साहब हैरत में थे। आख़िर रमज़ानी से कहा, 'लो, भई तुम्हारी बदौलत सरकस भी देख आए, बिना टिकट ख़र्चे ही। मगर मनीजर साहब बड़े इख़लाक़ के आदमी हैं। एकदम जण्टुलमैन।'

रमज़ानी, पीरू, क़ादिर सभी ने एक स्वर से कहा, 'ऐसे ऐसे मनीजर आपके क़दमों के जेर-साए पड़े रहते हैं। हुजूर के दम सलामत रहें।'

———

११

दिल्ली का क़िला

हुजूर अभी सोकर ही उठे थे। महरी से पता लगा कि वजू कर रहे हैं। रमज़ानी मियाँ दीवार का सहारा ले बैठकर 'अवध-अख़बार' पढ़ने लगे। क़ादिर मियाँ पहलवान को बुलाने के लिये अखाड़े गए हुए थे। थोड़ी देर बाद नवाब साहब तशरीफ़ लाए।

'अख़्ख़ाह, मियाँ रमज़ानअली हैं! अमाँ, इधर पाँच-छः दिनों से थे कहाँ?'

'कुछ नहीं हुजूर, ज़री दिल्ली तक गया था। बहन के लड़के की शादी थी!'

'कहो भई, दिल्ली में गर्मी के क्या हाल-चाल हैं?'

'कुछ न पूछिये हुजूर। वहाँ भी सर्दी गर्मी पड़ रही है। मगर यह था कि सबेरे जरी रेडियो के सामने बैठ गए। अब गाने सुन रहे हैं। बख़त कट जाता था। रेडियो भी हुजूर बड़े मजे की चीज़ है। बैठे दिल्ली में हैं। मजे में विलायत का गाना सुन रहे हैं। एक विलायत क्या, अमरीका, अफ्रीका, जापान, चैना······।'

'ओफ़्फ़ोह भई रमजानी, तुम्हें तो सब मुल्कों के नाम याद हैं। ख़ुदा क़सम, तुम्हारे मुँह पर की बात नहीं, सच कहता हूँ कि हर एक से तुम्हारी यही तारीफ़ करता हूँ कि भई रमज़ान अली-सा आक़िल आदमी दुनिया में कोई नहीं है।'

रमज़ानी ने खीसें निपोरते हुए तथा हाथ की नसें चट-चट

कर सिर झुकाकर कहा—'अरे हुजूर, इतना शर्मिन्दा न करें सरकार !'

इसी वक्त क़ादिर और पीरू दरबार में आए। आते-ही-आते न अलेक न सलेम, पहलवान चट से कह उठे, 'क्यों भई रमज़ानी, यह माजरा क्या है ? अमाँ, बड़े सुस्त नज़र आते हो, भाईजान ?'

रमजानी मियाँ ने झेंपी हुई मुस्कुराहट के साथ गर्दन उठाई। हुजूर ने वैसे ही फ़रमाया, 'अमाँ, हमारे रमज़ानअली-सा शरीफ़ आदमी नहीं है। ज़री एक सच्ची बात क्या कह दी कि झेंप गए। मानना ही होगा कि हमारे रमज़ानअली-सा आक़िल इस दुनिया में कोई है ही नहीं—बस, इसी पर झेंपे हुए बैठे हैं।'

पीरू मियाँ ने गम्भीर मुँह बनाकर कहा—'गुस्ताख़ी माफ़ हो हुजूर, सच्ची बात तो यही है कि आपके तारीफ़ करने के माने यह हैं, कि इन्हें शरम तो आनी ही चाहिए, कि हुजूर खुद तारीफ़ कर रहे हैं।'

रमज़ानी मियाँ तड़प कर कह उठे—'वल्लाह, तुमने सच्ची बात कह दी पहलवान। अब तुम लोग हो। अगर हमारी तारीफ़ करने लगो, इज्ज़त करने लगो, तो बस हम कहीं के भी न रहे। हुजूर हैं हमारे मालिक। इनकी दी हुई रोटियों से हमारे घर के बच्चे पलते हैं। जब सरकार अगर हमारी तारीफ़ करने लगते हैं, तो हमारी गरदन नहीं उठती मियाँ। और फिर भई, सच बात तो यह है कि जब हम तारीफ़ लायक़ हों भी तो ?'

'हाँ-हाँ, भई, सच बात तो यही है।' पहलवान ने गम्भीरता-पूर्वक कहा।

'और फिर यह भी तो है कि हमारे सरकार के सामने बड़े-बड़े बी० ए०, एम० ए० तो ठहर नहीं सकते। भला हमारी क्या बिसात है।' रमज़ानी ने कहा।

सरकार ने इतमीनान के साथ सटक का एक लम्बा क़श खींच लिया।

मियाँ क़ादिर ने मुस्कराते हुए जरा लहजे के साथ कहा—'तो कहो उस्ताद, दिल्ली में क्या-क्या देखा ?'

नवाब साहब ने जरा मज़ाक-सा करते हुए कहा—'देखा क्या, लालक़िला देखा, परियों का नाच देखा। गाँठ का टिकट फूँका, और ठाठ का तमाशा देखा—और क्या देखा ?'

मियाँ क़ादिर, पहलवान और रमज़ानी—सब एक ही साथ उछल पड़े—'अहा भई, क्या कहा है। भई वाह, सुभान-अल्लाह ! भई, दिल पाये तो हमारे हुजूर जैसा। अहा-हा-हा-हा—क्या गाँठ और ठाठ की साँठ-गाँठ कराई है हुजूर ने, कि तबियत ही फड़क उठी !'

नवाब साहब ने फिर मुस्कुराते हुए कहा—'अच्छा भई, यह तो हुई मजाक की बात। अब वाक़ई बतलाओ कि क्या-क्या देखा दिल्ली में ?'

'हुजूर, यही लाल किला देखा, कुतुबमीनार देखी, नई दिल्ली, हुमायूँ बादशाह का मक़बरा देखा, जन्तर-मन्तर देखा, पुराना क़िला देखा, और क्या-क्या बताऊँ हुजूर, दिल्ली में तो सभी कुछ देखने क़ाबिल है। तीन दिन तक लगातार सब कुछ घूमा किये। मगर सच तो यह है सरकार कि सुबू-शाम रेडियो सुनने से ही फ़ुरसत नहीं मिलती थी, फिर जाते कहाँ ? भई, वह-वह लाजवाब गाने सुने कि तबियत खुश हो गयी। दम-भर में विलायत का

बाजा बज रहा है तो कभी जापान का, और कभी अपने बैठे हुए लखनऊ का गाना सुन रहे हैं।

नवाब साहब ने फरमाया—'लेकिन भाई, समझ में नहीं आता कि सब जगह के गाने कैसे सुनाई पड़ते थे ?'

'हुजूर, सब तार से सुनाई पड़ते हैं; जैसे टेलीफूँक। इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं।' पहलवान ने कहा।

मियाँ रमज़ानी बोले—'अमाँ, तार-फार तो कुछ होता ही नहीं। रेडियो का दूसरा नाम ही है बे तार का तार।'

'भई, यह कुछ समझ में नहीं आता उस्ताद ! जब बे तार का तार है तो ख़बरें कैसे आयेंगी ? सैकड़ों हज़ारों कोस की बात हो गई। कहाँ बिलायत और कहाँ हिन्दुस्तान ? यह कुछ हमारी समझ में नहीं आता उस्ताद।' क़ादिर मियाँ बोले।

'भई, यही बात तो हमारी समझ में भी नहीं आती।' पहलवान ने पूछा।

'अच्छा, कभी रेडियो का नाम सुना है ?' हाथ हिलाते हुए मियाँ रमज़ानी ने कहा।

'हाँ-हाँ भई, सुना क्यों नहीं है ? हमारे पड़ौस में वकील साहब के यहाँ रेडियो लगा हुआ है। छत के ऊपर बाँस के दो डन्डों में तार बँधा हुआ है, बस !' पीरू पहलवान ने कहा।

रमज़ानी मियाँ कहने लगे—'बस-बस मियाँ अब तुम समझ गये। उन्हीं बाँस के डन्डों के सहारे तो आवाज आती है। सारी दुनियाँ भर की आवाज़ें सब हवा में चक्कर मारा करती हैं। रेडियो में मीलों के नम्बर लिखे रहते हैं। जितने मील का हुआ सुई उतने मील पर घुमा दी। चलिये साहब आवाज वहीं से आने लगीं।'

'मगर भई, यह बात कुछ जँची नहीं उस्ताद।' नवाब साहब ने गरदन हिलाते हुए कहा।

'हमारी समझ में तो हुजूर इसमें कुछ जादू है। यह जो ऊपर तार बँधा रहता है, उसमें मन्तर पड़ा हुआ होता है। बस, उसी से यह सब करामातें होती हैं।' मियाँ कादिर बोले।

रमज़ानी ने आख़िरकार हार कर कहा—'यही होगा हुजूर, और क्या? कुछ भी हो, है बड़ी मज़ेदार चीज यह रेडियो भी।'

'अमाँ मिलता कितने का होगा?' नवाब साहब ने पूछा।

'यही कोई दो-ढाई सौ का आता है, सरकार।' रमज़ानी बोले।

'तो फिर खरीद क्यों न लिया जाय? आज ही चल कर ले लें।' नवाब साहब बोले।

उसी दिन शाम को हुजूर नवाब साहब, अपने दरबारियों के साथ रेडियो खरीदने गये।

१२
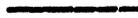
हकीम रमज़ानअली

मज़ाक़ की बात नहीं, यह सच है कि मियाँ रमज़ानअली साहब हकीम हो गए हैं। शफ़ाउल-मुल्क का ख़िताब साइनबोर्ड पर लगाया है। नख़ास से पूरी आठ दर्जन बोतलें और बारह दर्जन शीशियाँ ख़रीदी हैं। बैठके की मरम्मत कराई, परबाबा-जान के जमाने का फ़र्श बिछाया, एक गाव तकिया रक्खा, एक चौकी रक्खी। अब तो हकीम साहब की शान यहाँ तक बढ़ गयी है कि अच्छे-अच्छे इनके यहाँ तशरीफ़ लाते हैं; यहाँ तक कि एक दिन ख़ुद नवाब साहब ने अपनी तशरीफ़-आवरी से मियाँ रमज़ानअली को इज्ज़त बख़्शी। हकीम साहब लुङ्गी और बनियाइन पहने बैठे हुए एक ख़स्ता हालत मरीज़ की नब्ज़ देख रहे थे।

'अख्ख़ा हुज़ूर हैं? वल्ला, यहाँ कैसे आपने तकलीफ़ की? अरे हुज़ूर मैं तो आपका ग़ुलाम हूँ। कुछ फ़र्क़ थोड़े ही आ सकता है आपके लिये।' रमज़ानी ने कहा।

'अरे भाई अब तो तुम हकीम साहब हो गये। अब तो तुम्हारी इज्ज़त करनी ही पड़ेगी भाई जान। अमाँ मैं तो पहले से ही जानता था कि एक न एक दिन रंग लायेगी हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद।' नवाब साहब ने फ़रमाया।

'वल्लाह क्या बात कही है हुज़ूर ने इस दम। च-हा-हा-हा! लेकिन हुज़ूर यह सब कुछ आप ही की मेहरबानी से हुआ।

हें-हें-हें, वरना मैं क्या और मेरा इल्म क्या ? यह तो हुजूर की इज्ज़त-अफज़ाई है। ख़ुदा कसम, बन्दा नवाज़, सच मानियेगा कि इस वक़्त मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं। कहाँ बिठाऊँ कहाँ उठाऊँ, आज तो हुजूर ने इस ग़ुलाम को इतनी इज्ज़त बख्शा दी जिसके क़ाबिल मैं क़तई नहीं हूँ।'

'अरे भई वाह, अमाँ तुम तो तकल्लुफ़ करने लगे भाई जान। इसमें भला इज्जत-अफ़ज़ाई की कौन-सी ख़ास बात है ? तुम तो हमारे जिगरी दोस्त हो। कभी मैं तुम्हारे यहाँ आया कभी तुम मेरे यहाँ आए, इसमें भला कौन-सी ऐसी बात है ? लेकिन यह तो बताओ उस्ताद यह हकीम कब से हो गये ? अमाँ हमें तो आज सुबू पता चला।'

'यही कोई छै: सात रोज से मतब खोला है हुजूर। कुछ एक हिकमत से पुरानेनुसख़े हाथ लग गये जो कि यूनान के सबसे बड़े हकीम जनाब मुमताजअली साहब ने हुजूर यूनान के बादशाह के लिये वख्तन्बवख्तन तैयार किये थे।'

'चलो भाई बड़े खुशनसीब रहे तुम। मगर यह हासिल कहाँ से हुए उस्ताद।'

'हुजूर हमारे बाबा जान जो थे, वह बड़े मशहूर मौलवी थे। दुनिया भर में उनका नाम रोशन था। हकीम साहब और बाबा जान में बड़ी गहरी दोस्ती थी। अब आप यह ख्याल फ़रमाइये हुजूर कि उनका एक खत रोज़ बिला नाग़ा बाबा जान के पास आया करता था। यूनान से हिन्दुस्तान तक हरकारे सदा दौड़ा ही करते थे। एक बार हमारे बाबा जान ने उन्हें बड़ी मदद पहुँचाई थी, और उसी वजह से इनको इतना रुतबा मिला, बस साहब उन्होंने भी कुछएक वह-वह नुस्ख़े लिखवा दिये कि छै: महीने का मरा हुआ आदमी भी खड़ा होकर टइयाँ-सा बोलने

लगे। बस हुजूर क़िस्मत कुछ तेज थी, आप लोगों की मेहरबानी की बदौलत वह नुस्ख़े मुझे हाथ लग गये। अब आपके जेर-साये इसी की बदौलत परवरिश पाऊँगा बंदानवाज।'

'अच्छा है मियाँ, यह तो बड़ी ख़ुशी की बात है। मगर भई अब तो तुम बड़े आदमी हो गये। पर हमको भूल न जाना उस्ताद।'

मियाँ रमज़ानअली साहब इसके उत्तर में कुछ कहना ही चाहते थे कि मियाँ कादिर ने कमरे में प्रवेश किया।

'अख्ख़ा, हुजूर खुद यहाँ तशरीफ़ लाये। भाई रमज़ानी तुम बड़े खुश-किस्मत हो। याने कि खुद हुजूर तक तुम्हारे यहाँ तशरीफ़ लाते हैं।'

मियाँ रमज़ानी बड़े ही खुश नज़र आ रहे थे।

नवाब साहब ने मुस्कराते हुए कहा—'भई अब इन्हें हकीम साहब कहा करो अब यह बड़े आदमी हो गये हैं।'

'अरे हुजूर इतना शरमिन्दा न करें सरकार, भला आप लोगों के लिये थोड़े बदल सकते हैं हम? भाई कादिर हुए, पहलवान हुए—इन लोगों के लिये जैसे पहले थे वैसे अब भी है और ख़ुदानख़ास्ता, अगर आप लोगों की मिहरबानी और परवरिश पाकर हम बड़े भी हो गये तो भी हुजूर आप लोगों के लिये वही हैं। हमने तो पहलवान से भी······'

बात काटकर हुजूर ने फ़रमाया—'अमाँ हाँ, पहलवान कहाँ हैं आजकल? अरसे से उन्हें नहीं देखा उस्ताद।'

'पहलवान तो हुजूर अन्दर दवा कूट रहे हैं। अब वह मेरी कम्पाउन्डरी करेंगे। कहिये तो बुला लाऊँ?' मियाँ रमज़ानी ने कहा और नवाब साहब की स्वीकृति पाये बिना ही अन्दर पहलवान को बुलाने चले गये।

देखा तो पहलवान क़ूँड़ी के दोनों तरफ़ मजे से टाँगे फैलाये हुए, तथा दीवाल का सहारा लेकर बीड़ी पी रहे हैं।

'कहो भाई पहलवान क्या हो रहा है ?'

'आओ जी, ज़री बीड़ी पी रहा था उस्ताद। लो भाई तुम भी एक दो कश।'

'अमाँ नहीं जी, बाहर नवाब साहब बैठे हैं, तुम्हें बुलाया है।'

'अमाँ कौन से नवाब साहब ? अपने वाले ?'

'हाँ हाँ यार और कौन।' मियाँ रमज़ानी ने उत्तर दिया। पहलवान लुन्गी सम्भालते हुए उठ खड़े हुए और कहा—'अमाँ इनसे कुछ ऐंठा जाये।'

'नहीं यार अभी नहीं; किसी वक्त मौके से। मगर देखो उस्ताद ज़री हमारी इज्जत······।'

'अमाँ इससे तुम निसाख़ातिर रहो। मैं सब कुछ देख लूँगा ?'

दोनों नवाब साहब के हुजूर में पेश हुए। 'सलामवालेकुम सरकार', पीरू ने कहा।

'वालेकुम सलाम भाई। अमाँ तुम तो बहुत कम दिखाई देते हो पहलवान।'

'हाँ हुजूर इधर ज़री काम में फँसा हुआ था। आप तो जानते ही हैं सरकार, कि जब हमारे हकीम रमज़ानअली साहब को बड़े-बड़े तालुकेदारों के यहाँ से बुलौवा आता है, तो मुझे भी दिन भर दवाइयाँ कूटनी-पीसनी पड़ती हैं। मैंने तो हुजूर अब इनकी कम्पौन्डरी कर ली है। अब आप समझिये कि दिन भर में इनकी बदौलत चालिस-पचास रुपया पीट लेता हूँ। और यह तो सब से मजे में रहे, सौ रुपया फीस है इनकी, और दिन भर में दो-चार बड़े-बड़े आदमियों के यहाँ से बुलौवा

आया ही करता है। इन्हें हुजूर सब मिला के कोई पाँच सौ रुपया रोज की आमदनी है।'

नबाब साहब हैरत-भरी निगाहों से इनकी तरफ देख रहे थे। मियाँ क़ादिर ने कहा—'भई, हुजूर का इख़लाक़ भी क्या-ही अच्छा है कि यहाँ तक तशरीफ़ ले आये।'

'अरे भई, हमारी क्या हस्ती है मियाँ जब बड़े-बड़े लोग तक यहाँ आते हैं।'

'अरे हुजूर, इसकी तो कुछ न पूछिये सरकार! डिप्टी कमिश्नर और कलक्टर और बड़े-बड़े अंगरेज इनके यहाँ आया करते हैं। एक जंसन साहब पादरी हैं यहाँ, वह हुजूर लाट साहब का पादरी है। लाट साहब उसी के मुरीद हैं सरकार, उसको तो ऐसा एतबार हो गया है कि वह और कहीं जाता ही नहीं। वह तो कहता था कि लाट साहब से सिफारिश करके हम रमज़ानी साहब को ख़ानबहादुर का खिताब दिलवा देंगे।'

हुजूर नवाब साहब को अरसे से खान साहबी की बड़ी तमन्ना थी।

तृषित नेत्रों से मियाँ रमजानअली की ओर ताकते हुए उन्होंने कहा—'चलो भई, यह सुन कर तो बड़ी ख़ुशी हुई। तब तो मियाँ रमजानअली हमसे बात भी क्यों करने लगे? हाँ भई, बड़े आदमी होंगे तब।'

मियाँ रमजानी ने खीसें निपोर दीं। क़ादिर मियाँ ने कहा—'इनके पास एक दवाई है जिसकी बदौलत यह आजकल बहुत कमा रहे हैं।'

'वह क्या?' नवाब साहब ने पूछा।

'जिसको हुजूर सब डाक्टर, बैद-हकीम जवाब दे देते हैं, उसे यह पाँच मिनट में चंगा करके खड़ा कर देते हैं। आप सच

मानियेगा गरीबपरवर, अपनी आँखों देखी बात है कि परसों टूरियागंज के नवाब जनाब बच्छन साहब की हालत अबतर हो चुकी थी। घर में रोना-पीटना मच गया। इत्तफ़ाक़ से रमजानी मियाँ उस तरफ चले जा रहे थे। जो सुना तो चट से महल में दाख़िल। मैं भी इनके साथ था हुजूर। सारा बदन टटोल के देखा। फ़कत पैर की छोटी उँगली के नाखून में एक जरी-सी जान रह गई थी; बस साहब, इन्होंने उसे मालिश करना शुरू किया तो पन्द्रह मिनट में नवाब साहब उठ बैठे, और लगे टइयाँ से बोलने।'

नवाब साहब ने यह सब ग़ौर से सुनते हुए एक ठण्डी साँस ली और कहा—'भई, आज से तुम हमारे जिगरी दोस्त हुए। अब तुम हमें हजूर कह के मत पुकारा करो। अल्लाह जानता है, शर्म से गरदन झुकी जाती है। जिस शख्स को लाट साहब का पादरी भी झुक कर सलाम करे और वह हमारे सामने इस तरह से पेश आवे, भई यह तो कुछ समझ में नहीं आता।......मगर उस्ताद, एक बात का ख्याल रखना। हमें भी खानसाहबी दिलवा दो। जिन्दगी भर तुम्हारा एहसान न भूलेंगे मियाँ।'

मियाँ रमजानी ने लपक कर हुजूर का हाथ अपने दोनों हाथों में दबा लिया और कहने लगे—'अरे वाह सरकार, ऐसी बात कहते हैं? पहले आप, बाद में हम। आपका नमक खाया है। मगर हुजूर, एक दावत देनी होगी। यही कोई तीन-चार हजार रुपये का खरचा होगा। बाद में अल्ला चाहेगा तो खान-बहादुरी का खिताब और आनरेरी मजिसट्रेटी ऊपर से।'

'रुपये की परवाह मत करो मियाँ! जितना खर्च होगा

लगाएँगे, मगर यह तो बताओ कि यह मजिसट्रेटी कहीं हमारे मामूँजात भाई की तरह से छिन तो न जायगी। अमाँ हाँ, यह कांग्रेस वाले हैं, कौन ठिकाना—कहीं छीन लें।'

'नहीं, यह कैसे हो सकता है सरकार? मैं इस बारे में पंथजी से कहूँगा। वो भी इस खाकसार के गरीबखाने को दो-तीन बार रौनक-अफरोज़ कर चुके हैं।'

नवाब साहब ने गद्गद होकर मियाँ रमज़ानी की पीठ पर हाथ रख दिया।

१३
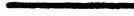
जुकाम का ज़ोर

क़रीब डेढ़ हफ़्ते से अजब परेशानी बढ़ी हुई है। नवाब साहब को जबर्दस्त जुकाम हो गया है। मारे सर्दी के छाती अपने हिसाब कफ़ की जंजीरों से जकड़ गई है। बड़े-बड़े डॉक्टर, बैद, हकीम—सब परीशान, घरवाले उनकी तीमारदारी करते-करते परीशान, मोहल्लेवाले उनकी हाय-हाय से आजिज़; मगर जुक़ाम भी ऐसा क्या, कि कम्बख्त जुम्बिश तक नहीं खाता!

अच्छे-भले उस दिन दरबार में बैठे थे। गप-शप, चीं-चपड़ का दौरदौरा था, हँसी पेट में समाती न थी। हकीम रमज़ानअली साहब भी उस दिन वहीं तशरीफ़ रख रहे थे। दरवाजे से यकायक एक मूलीवाला गुज़र गया। हकीम साहब ने खट से अपनी नाक रूमाल से कस कर दबा ली।

नवाब साहब ने हँसते हुए पूछा—'क्यों भई, क्यों? अमाँ, अभी तक तो अच्छे-भले थे! इतनी देर में क्या हो गया? अमाँ, क्या हकीम होने के बाद से तुम भी हिन्दुओं की तरह नाक दबाने लगे?'

मियाँ क़ादिर और पहलवान भी नवाब साहब के मज़ाक़ में शरीक हुए।

हकीम साहब ने रूमाल हटाते हुए फ़रमाया—'आप मालिक हैं सरकार, चाहे जो कह लें; मगर सच यह है कि इस बारिश के मौसम में मूली की हवा भी संखिये का काम करती है। ऐसा

जबर्दस्त ज़ुकाम होता है—ऐसा जबर्दस्त कि बस, मर्ज़ लाइलाज है।' कहते हुए उन्होंने एक निश्वास छोड़ दिया। और उसका असर नवाब साहब के नन्हें-मासूम-दिल पर इतना जबर्दस्त पड़ा कि उस दिन से जो चारपाई पकड़ी तो उठे ही नहीं। उस दिन भी हकीम साहब के सामने तीन बार ग़श आया, चार बार रोए—'हाय, तुमने मुझे पहले क्यों न बताया? तभी मैं कहूँ कि इस कम्बख्त मूलीवाले के इधर गुज़रते ही मुझे ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मेरी छाती पर किसी ने बरफ़ की सिल रख दी। हाय, अब मैं क्या करूँ? अरे, तुमने मुझे पहले क्यों न बताया?'

क़िस्सा-क़ोता यह कि जो ग़श आया तो फिर मसनद ही पर गिर पड़े। हरम में कोहराम मच गया। बेगम साहबा ने गालियों का तोहफ़ा हकीम साहब को भिजवाया। सब दरबारियों को मुँह काला करके निकल जाने को कहा। अपने परनाना नवाब वाजिदअली शाह की हुकूमत का जमाना याद करके रोईं—'कोल्हू में पिलवा दिया होता इन मरी-पीटों को!'... गर्जेकि फिर डाक्टर आए, 'सिविल-सार्जण्ट' तक आए, बैद-हकीम सब आए, मगर मर्ज का पता किसी को भी नहीं लगा। दस पन्द्रह रोज़ में कोई चार-पाँच हजार रुपया सरफ़ा हो गया, मगर दिन में चैन नहीं, रात को नींद नहीं।

आखिरकार एक दिन मौलवी साहब तशरीफ़ लाए। बेगम साहिबा ने चिक की आड़ में बैठ रो-रो के पूछा—'आखिर यह मर्ज क्या है जो किसी की समझ में नहीं आता। आप ज़री बताइए तो सही, कोई शय वग़ैरः तो नहीं? आप यक़ीन मानिये मौलवी साहब, यहाँ तो जान निकली जा रही है, कैसे अच्छे-भले उस दिन बैठे थे। इधर तन्दुरुस्ती भी कैसी अच्छी हो गई

थी, मुँह पर कैसा निखार था !' कहते-कहते बेगम साहिबा को ग़श आ गया। हरम में ले-दे पड़ गई। ख़ैर साहब, किसी तरह वह उठ बैठी। झुनिया कहारी पंखा झल रही थी। कानों के कनफूल झमका कर बोली—'ज़री देखिए तो मौलवी साहब, कोई आसेबी हरकत तो नहीं है। दिन में तीन-तीन चार-चार बार हज़ूर आली बेगम साहबा को गस-पर-गस आ जाते हैं !'

मौलवी साहब ने सोचकर बतलाया कि कोई आसेबी-शिकायत नहीं।

'ज़री तस्बीह तो उठाइए मौलवी साहब, किसका इलाज शुरू किया जाय ?' बेगम साहबा ने फ़रमाया।

मौलवी साहब ने तस्बीह उठानी शुरू की। बड़े-बड़े शफ़ा-उल-मुल्क, डाक्टर, बैद—किसी के नाम पर भी तस्बीह न उठी। बड़ी परेशानी। महरी पँखा झलते-झलते बोली—'अच्छा मौलवी-साहब, ज़री रमजानी हकीम की भी तस्बीह उठाइए।'

'अह, तुम भी किस मरी-पीटे का नाम ले बैठीं ! ख़ुदा उसे ग़ारत करे। अल्ला करे, आज से चौथे दिन उसके घर वाले 'है-है' करें।' बेगम साहबा रोने लगीं।

महरी ने तसल्ली देते हुए कहा—'इतना दिलगीर न हों सरकार, इस वक्त अपनी गरज़ है, उसे भी देख लिया जाय।'

बेगम साहबा राजी हो गई। मौलवी साहब ने हकीम रमज़ानी के नाम पर जो तस्बीह उठाई तो खट से उठ गई। बेगम साहबा देखती ही रह गई। फ़ौरन ही फ़रमाया—'अरे, कोई लपक के रमज़ानी को बुला लाओ।'

पास-पड़ोस तक में ख़बर लग गई कि हकीम रमज़ानअली के नाम की तस्बीह उठी है।

'सलाम-वाले-कुम सरकार !'—तीनों एक साथ आए। हकीम साहब लम्बा चोग़ा पहने हुए, पहलवान रेशमी लुङ्गी बाँधे हुए और क़ादिर मियाँ बीड़ी पीते हुए।

नवाब साहब ने कराहते हुए कहा—'अरे, आओ भाई रम-ज़ानी। तुमने तो हमारी याद ही भुला दी, मियाँ !'

'अरे वाह ग़रीबपरवर, यह कैसे हो सकता है। अरे हम तो आप ही के जेरसाए परवरिश पाते हैं, गरीबपरवर !' हकीम रमज़ानी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

नवाब साहब इतने कमजोर हो गए थे कि ठीक तरह से हाथ भी नहीं ऊँचा होता था—मुँह पर मक्खी बैठ गई तो तिलमिला रहे हैं, या फिर कराहते हुए सलारू को गालियाँ सुनाना शुरू किया। नवाब साहब बोले—'अरे भाई, यहाँ तो अब आख़िरी वक्त आ पहुँचा है ! जो कुछ जिन्दगी में मैंने तुम लोगों से कहा-सुना हो, उसे माफ़ कर दो, भाई जान।'

'अरे ये आप कैसी बातें कह रहे हैं, बन्दानवाज़ ? आख़िरी वक्त तो अल्लाह करे, आपके दुश्मनों को देखना नसीब हो। अभी अच्छे हुए जाते हैं आप। आपको हुआ ही क्या है ?' पहलवान ने तसल्ली देते हुए कहा।

'अरे मियाँ, अब क्या अच्छे होंगे ? सब डाक्टर, बैद, हकीम तो जवाब दे चुके हैं, भाईजान। बस, अब तो आख़िरी वक्त है। ख़ुदा की बन्दगी करने को जी चाहता है।'—कहते हुए नवाब साहब ने तकिए से एक ओर अपनी गर्दन लटका दी।

हरम से फफक-फफक कर रोने की आवाज साफ़ सुनाई पड़ी।

मियाँ रमज़ानी ने लपककर नवाब साहब की छाती पर हाथ रक्खा, कहा—'ये आप क्या बक रहे हैं, हुजूर? देखिए तो सही, बेगम साहबा के दुश्मनों की तबियत ख़राब हो जाएगी। अपनी तरफ़ से नहीं तो कम-से-कम उनका ख़याल तो करना ही चाहिए आपको। और फिर आपको हुआ ही क्या है? अभी ठीक हुए जाते हैं आप। लाना तो भई पहलवान, मेरा बैग तो देना ज़री। अभी ठीक करता हूँ—पाँच मिनट में।'

❀ ❀ ❀

थोड़ी देर बाद पड़ोस वालों ने सुना कि हकीम रमज़ानअली साहब के दवा सुँघाते ही हुजूर की तबियत बहाल हो चली है और अब वह दरबारियों से हँस-बोल रहे हैं।

१४

अर्क-फ़ायरब्रिगेड

अगर ईमान से पूछा जाय तो हकीम रमज़ान अली साहब की ज्यादती थी कि जब खुद नवाब साहब ने तीन-तीन बार सलारू को उन्हें बुलाने के लिये भेजा और फिर भी वह न आए, और आख़िरी मर्तबा तो उन्होंने झल्लाकर यह कह दिया कि भाई हमें इस वक्त नवाब साहब के यहाँ जाकर गप लड़ाने की फ़ुरसत नहीं है। इस पर नवाब साहब को अगर गुस्सा आ जाय तो कोई ज्यादती नहीं है। ताव में आकर नवाब साहब बोले, 'इसके मानी तो यह हैं कि गोया मेरा दरबार न हुआ, चण्डू-खाना हो गया कि जहाँ गपबाजी होती रहती है! रमज़ानी की अब इतनी ज़ुर्रत हो गई कि···उफ, इतनी तौहीन कर दी मेरी।'

मियाँ क़ादिर और पहलवान दोनों ही आजकल मियाँ रमज़ानी से सख्त नाराज हैं और इसका सबब है मियाँ रमज़ानी का गरूर।

पहलवान को भी अब रमज़ानी ने अपना जर-ख़रीद गुलाम समझ लिया था। न अपना देखा न पराया देखा; झप से सबके सामने ही पहलवान पर धौंस जमाने लगे। आख़िर पीरू की भी कुछ इज्ज़त है। इसी से तैश में आकर कम्पौंडरी पर लात मारकर चले आए। मियाँ क़ादिर भी एक दिन क़रीब-क़रीब दो घण्टे तक रमज़ानी के यहाँ बैठे रहे, मगर बन्दे ने

बात तक न पूछी। और-तो-और, दुआ सलाम तक न की। क़ादिर मियाँ उठकर चले आए। उसी दिन से बोल-चाल और दुआ-सलाम सब बन्द।

क़ादिर ने हुज़ूर से कहा—'बड़े दिमाग़ हो गए हैं, हुज़ूर! अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं।'

'अमाँ अपने को लाट साहब का बच्चा समझता है!' पहलवान ने कहा।

'अमाँ लाट साहब होगा तो अपने घर का होगा, यहाँ कौन किसी को कुछ समझता है?' एक टाँग सीधी करते हुए क़ादिर ने मुँह बिचकाकर कहा।

'ज़माने भर का टुकड़खोर! कल मेरी जूतियाँ सीधी करता था, और आज हकीम बन गया है कि···'

नवाब साहब की बात काटते हुए मियाँ क़ादिर बोले—'बे अदबी माफ़ हो, ग़रीब परवपर! हमने क्या आदमी को बनते हुए नहीं देखा? मगर इतना गरूर! तोबा रे, तोबा!' कहकर क़ादिर मियाँ ने कान पकड़े और फिर कहा, 'हुजूर एक हकीम साहब थे। यहीं जहाँ कम्पनी बाग़ है हुज़ूर, वहाँ, फव्वारे के पास चाँदी-बाजार था, और 'चुध्घू सय्यद' की कबर के सामने दो मंजिले पर एक हकीम साहब रहा करते थे। किसी जमाने में वह घसियारे थे, जहाँपनाह। और फिर ख़ुदा की मर्जी कुछ ऐसी हुई कि एक दिन जंगल से घास छीलते वक्त एक फ़क़ीर मिले। इन्हें देखते ही वह बोले, अमाँ, भाई, तुमसे मिलने के लिये मैं आज दो सौ बरस से यहीं पड़ा सिसक रहा हूँ। आज दिन का इन्तजार देख रहा था कि तुम आओगे। अब ये बेचारे घसियारे, बुद्धू से खड़े उस फकीर की ओर देख रहे हैं। वह फकीर फिर यों कहने लगे कि मेरे उस्ताद ने कहा था,

फलाँ-फलाँ घसियारे को अपने पाँच नुस्ख़े बताकर मरना, वरना तुम्हें दोज़ख़ मिलेगा। सो भाई, आज मेरी पौने दो हजार बरस की जिन्दगी पूरी हुई। अब तुम्हें बतला कर अपना चोला छोड़ता हूँ। आज दो सौ बरस से तो मैं चलने-फिरने से भी मोहताज हो गया हूँ। बुढ़ापे की वजह से आज तो करवट भी नहीं ली जाती, यह कहते हुए उन्होंने पाँच नुस्ख़े बताये।

'एक तो हुजूर यह कि चाहे आदमी दस हजार बरस का क्यों न हो; उनका बनाया हुआ कुश्ता खाले तो पचीस बरस का जवान हो जाय। बड़ी आजमूदा दवा थी, गरीबपरवर! नवाब वाजिदअली शाह साहब इसी की वजह से हरदम शेर बने रहते थे, सरकार! और एक दवा यह बताई कि हुजूर गरमी-से-गरमी पड़ती हो, फ़क़त एक चुटकी खा लीलिए, गरम कपड़े पहनने की जरूरत महसूस होने लगेगी। बड़े-बड़े पागल उससे ठीक हो जायँ। गजब की ठंडी थी, सरकार! एक बार का जिक्र है, चाँदी-बाजार में आग लगी। अब तो चारों तरफ़ा दुहाई मचने लगी। भिश्ती-पर-भिश्ती पानी छोड़ रहे हैं, मगर आग है कि कम्बख्त बुझती ही नहीं।

'हकीम साहब खाके जरी झपकी ले रहे थे। इतने में बीबी भी, बच्चे भी, नौकर भी, चाकर भी—जिसको देखिये वही हकीम साहब को जगाने चला आ रहा है कि हुजूर आग लग गई।/हकीम साहब को बड़ा गुस्सा आ गया। चिल्लाकर कहने लगे, आग लग गई! आग लग गई!! कह के सालों ने घर उठा रखा है। आग क्या लगी; गोया कयामत आ गई! जाके आलमारी खोल के फलाँ-फलाँ दवा की शीशी का अर्क आग

में छोड़ आ। अब नौकर खड़ा मुँह ताक रहा है। हकीम साहब का गुस्सा आ गया।

'बोले, अबे, खड़ा देखता क्या है ? जाके छोड़ आ। जब अरबों रुपये का नुकसान हो जायगा, तब जायगा क्या ?

'ख़ैर साहब, डरते-डरते नौकर ने दवा की शीशी आग में डाल दी। ये लीजिये बन्दानवाज़, कोई पन्द्रा मिनट में क्या देखते हैं, कि आग आप ही आप बुझ गई। मकानात जितने जल चुके थे, उनके अलावा बाकी सब बच गए। तो यह तासीर थी उन नुस्ख़े में। और हकीम साहब का यह हाल था कि सोने और ख़ाने की भी फ़ुरसत नहीं रहती थी। मगर जनाब आली, अपने पुराने घसियारे साथियों के साथ रोज खुरपी तेज किया करते थे।

'उनका कहना था बन्दानवाज़, कि हकीम हो गए तो क्या, हैं तो हम घसियारे ही। चाहे उनके यहाँ पाँच बरस का बच्चा क्यों न जाय, उससे भी तपाक के साथ मिलेंगे। गजब का इख़लाक़ था हुजूर उनका भी।' कहकर कादिर मियाँ उँगली की नसें चटखाने लगे।

नवाब साहब बड़े गौर से सुन रहे थे। पहलवान ने एक निश्वास फकते हुए कहा, 'हाँ साहब, सभी कोई रमजानी की तरह नमक-हराम थोड़े ही होते हैं! अरे भाई, अब वह हकीम हो गए हैं। अब उनके मिजाज न मिलेंगे, तो कब मिलेंगे ?'

'हकीम क्या है, टिकियाचोट्टा है साला ! मैं तो ऐसों से बात करना भी पसन्द नहीं करता। देखिये, ज़री उस दिन हुजूर खुद उठ करके गये, मगर वह पट्ठा आज सौ-सौ बुलावों पर भी नहीं आया। तुफ़ है ऐसे आदमी की औक़ात पर !'

नवाब ने ताव में आकर कहा, 'अब वह अगर दरबार में पैर रक्खे तो कान पकड़ कर बाहर निकाल दो। नमकहराम कहीं का !'

'अरे, इस पर तो हुजूर रमज़ानी मियाँ के ऊपर हतकइज्जती का दावा भी ठोक सकते हैं।'

'कोई मामूली आदमी हैं जो कि बुलाया तो भी न आये। जिसके यहाँ बड़े-बड़े डिप्टी कलक्टर रोज आया करते हैं, वहाँ इस बेचारे रमज़ानी की क्या हक़ीक़त कि न आये।'

'मेरी तो अर्ज यह है हुज़ूर, कि आप एक बार इसे सबक़ सिखा ही दें। क्या मुज़ायका है?' मियाँ क़ादिर ने फ़रमाया।

नवाब साहब मौन थे। क़ादिर ने पीरू की तरफ़ मुह करके कहा—'क्यों भई पहलवान, चल सकता है न मुक़दमा?'

'अमाँ, चल क्यों नहीं सकता। लाखों में चल सकता है। मुझसे कहिए तो अभी चलवा दूँ मुक़दमा! हमारे मकान के पड़ोस वकील साहब रहते ही हैं।' पीरू ने कहा।

नवाब साहब को फिर भी जोश न आया। वह कुछ भी न बोले। खट से पहलवान ने बात फेर दी, 'आज हुजूर, चेहरा आपका बड़ा सुस्त है। वैसे मजे में तो हैं न? हाँ, मेरा कलेजा धकसे रह गया कि क्या बात है?'

'कुछ भी तो नहीं मियाँ! क्यों, क्या चेहरा उतरा हुआ नजर आता है? वैसे अन्दर से तो बुख़ार वगैरह कुछ भी तो नहीं मालूम हो रहा, मगर अब शायद चढ़ रहा हो…।' उदास-उदास चेहरे से नवाब साहब बोले।

'अरे, खुदा न करे! हुजूर के दुश्मनों को...। मगर हमारा ख्याल तो यह है गरीबपरवर, कि आज शायद आपने सुरमा नहीं लगाया?'

नवाब साहब उछल पड़े। बोले, 'अरे हाँ, खूब याद दिलाया। अमाँ, आज तो भूल ही गये थे। तभी मैं कहूँ कि भाई, आज मेरा चेहरा पहलवान को सुस्त कैसे दिखाई दिया?' कहते-कहते वे ठहाका मार कर हँस पड़े।

१५

चौक का चक्कर

गले में मोतिये का हार डाले, सिर पर बढ़िया आठ आने वाला पल्ला, चिकन का चुन्नटदार कुरता, रेशमी तहमत, कामदार दिल्लीवाल जूता--पहलवान का फ़िशन आज अजीब ही था। पहलवान मियाँ क़ादिर से बोले—'अच्छा भई, चलें उस्ताद! ज़री चौक की सैर ही कर आएँ।' सुरमीली आँखों से मियाँ क़ादिर की ओर देखकर ज़रा मुस्कुराते हुए पहलवान ने अकड़ कर मूँछों पर हाथ फेरा।

मियाँ क़ादिर पहलवान की बस इसी अदा पर मर मिटे। फ़रमाया—'आज तो उस्ताद चौक के कोठे ही उलट पड़ेंगे। अमाँ, ये गज़ब! आय-आय, अमाँ कौन कह सकता है कि पहलवान आज पचीस बरस के पट्ठे नहीं हैं!'

'अमाँ, हटो भी भई, खुदा के लिए आप मेरी ऐसी तारीफ़ न किया कीजिए। तुमने तो ऐसे कह दिया, गोया मैं सत्तर का बुढ्ढा ही हूँ।' पहलवान ने जवाब दिया।

'अरे खुदा न करे पहलवान कि तुम्हें कभी बुढ़ापा नसीब हो!' मियाँ क़ादिर मुस्कराते हुए बोले।

'ये लीजिये, अब लगे कोसने। नहीं मज़ाक नहीं उस्ताद, ज़री ईमान से बताओ, हम आज लगते कैसे हैं।'

'क़सम खुदा की झूठ नहीं आज तो तुम गुलफाम जच रहे

हो, यार ! देख लेना मियाँ, आज बाजार में क्या दुहाई मचती है।' मियाँ क़ादिर ने फ़रमाया।

पहलवान ने जरा तन कर गले में पड़े हुए हार को सीधा कर एक बार अपने कामदार जूते पर नज़र डाली।

गली पार कर नवाब साहब की कोठी के नीचे से होकर गुजरे। गाने की आवाज आ रही थी। मियाँ क़ादिर और पहलवान दोनों जरा ठिठक कर खड़े हो गए।

'अमाँ, यहाँ तो गाना हो रहा है।' मियाँ क़ादिर ने ललचाई दृष्टि से पहलवान की ओर ताका।

क़ादिर की बग़ल में हाथ डालकर घसीटते हुए पहलवान बोले—'अमाँ चलो भी। यहाँ क्या रक्खा है ? वो उम्दा-उम्दा चीजें सुनवाऊँगा बस, तबियत खुश हो जाएगी।'

क़ादिर बोले—'अभी, रहने भी दो। अब गोली मारो उस्ताद। न भई, कौन जाय इतनी दूर। यहीं बैठकर ज़री सुनो। च्-हा-हा-हा ! कोई मशहूर रण्डी का गाना हो रहा है। क्या प्यारी आवाज है कि आय-हाय !' आँखें बन्द करते हुए पहलवान के सीने पर झुककर मियाँ कादिर ने अपने ओठ दाँतों के नीचे दबा लिये।

दोनों हाथों में जरा नजाक़त और नफ़ासत के साथ मियाँ कादिर को सहारा देते हुए पहलवान ने हँसकर कहा—'ये लीजिये। अमाँ, रास्ते चलते ऐसे मजनूँ ढेर हुआ करें तो बस हो गया। अभी सूरत भी नहीं देखी कि बस मर गये। अमाँ, हम तुमसे कहते हैं कि कमरजहाँ के कोठे पर चलो। कसम खाके कहता हूँ भाईजान कि तबियत खुस न हो जाय तो वहीं पचास जूते कस-कस के मार देना मेरी खोपड़ी पर। सच कहता

हूँ, याद करोगे बच्चू कि कभी पहलवान के साथ किसी कोठे पर गये थे !'

एक ठंडी साँस लेकर मियाँ क़ादिर ने कहा—'अमाँ भई, फिर कभी चलेंगे। बस, आज तो यहाँ से एक कदम भी आगे नहीं रेंगा जाता, यार ! न हो, तो तुम चले जाओ। मैं तो अब न जाऊँगा, भाईजान।'

पहलवान ने एक ठंडी साँस लेकर कहा–'अच्छा, तो फिर मारो गोली। तुम्हारे बिना तो कुछ भी मजा न आयेगा, यार। तुमसे कहते हैं, चलो, बड़ा मजा रहेगा। चलो, आज तुम्हें विलायती सराब पिलाएँगे उस्ताद, 'लम्बर-बन' वाली।' कहते हुए पहलवान ने तहमत की खूँट से दस का नोट निकाल कर मियाँ क़ादिर को दिखलाते हुए आजिज़ी के साथ कहा—'ये देखो, ये ! क्या काली-काली घटा घिर रही है, अ···हा···हा···हा···हा···!'

नवाब साहब की कोठी से आवाज आ रही थी—'नहीं आये घनश्याम घिरि आईं बदरी। हाँ, नाहिं आ···।'

मियाँ क़ाहिर तड़प गये। जोश में आकर पहलवान का हाथ पकड़ कर खींचते हुए कहा—'बस भई बस, अब न मानेंगे, उस्ताद ! आज तो यहीं डेरा जमेगा, मियाँ। चौक कल चलेंगे, कल। लो, चहे हाथ मार लो मियाँ ! कल हम तुम्हें सराब की दावत देंगे। मगर आज तो···।'

पहलवान मियाँ क़ादिर की प्रेम-डोर में बँधे हुए चले यह गाते हुए—'जो मैं ऐसा जानती कि पति किये दुःख होय।'

मारे मुहब्बत के मियाँ क़ादिर ने पहलवान की पीठ पर एक घूँसा मार दिया, कहा 'अरे वाह, उस्ताद ! कमाल किया इस दम तो तुमने।'

पहलवान ने हँसकर आवाज लगाई—'अमाँ, सलारू होत !'

'कौन है ?' मियाँ सलारू ने ऊपर से झाँककर देखा।

'अमाँ, हम हैं हम।' मियाँ क़ादिर ने जवाब दिया, 'ज़री हुज़ूर को इत्तिला कर दो, मेरे भाई।'

'हुज़ूर अन्दर बैठे हुए रेडियो सुन रहे हैं।' सलारू ने जैसे जवाब फेंक सा दिया।

बुरा तो बहुत लगा, मगर कर ही क्या सकते थे। हाँ, अगर नवाब साहब के सामने कहीं ऐसी वारदात हो जाती तो बस, सलारू को फाँसी पर टँगा हुआ ही देखते। मगर खैर।

ठंडी साँस लेकर मियाँ क़ादिर बोले—'चलो भई, कमरजहाँ के यहाँ ही चला जाय, टूटे दिल जोड़ने के लिए।'

पहलवान बोले—'चलो।'

कमरजहाँ के यहाँ पहुँच कर बीमहरी से पता चला कि वह आज रैडियो पर गाना सुनाने गई हैं।

'खुदा गारत करे इस रैडियो को ! इसने तो कहीं का न रक्खा, उस्ताद ! अब क्या किया जाय ? चलो, कहीं और चला जाय।'

'और कहाँ जायँ, भाई जान ? यहाँ कोई अच्छा माल नहीं।' पहलवान ने ठंडी साँस ली।

'तो चलो, फिर पारिक में ही बैठा जाय। मुफलिस तमासबीनों का पारिक मुकाम है।'

कहकर क़ादिर मियाँ एक फीकी हँसी हँस दिये।

१६

सौतियाडाह

आज हुजूर को गुसल करने और कपड़े बदलने में जरी देर हो गई। किसी काम में मन ही न लगता था। कुरते में बटन भी ग़लत लगा लिए। बेगम साहब ने इस पर जरा फटकार कर कहा—'ऐसा भी क्या उतावलापन कि कपड़े पहनने का भी होश नहीं! वाह, रैडियो मुआ क्या कहीं भाग जाएगा जो इतने बावले हुए जाते हो! ऐ-हाँ, आग लगे इस मुए रैडियो में! बाजा क्या हुआ, मुआ नदीदे की आरसी हो गया! बैठे-बैठे दिन भर बस यही रोना, उसी की बात-चीत और वैसे ही मुए उठाईगीरें इनके साथी कादिर, पीरू!'

हुजूर ने निहायत आजिजी के साथ फरमाया—'अरे क्यों उन बिचारों को कोस रही हो? क्या बिगाड़ा है उन्होंने तुम्हारा?'

हाथ के पंखे को लापरवाही के साथ पीछे की तरफ़ फेंकते हुए, गर्दन मटका कर, कमर लचका और मुँह बनाकर कहा—'ऊँह, क्या बिगाड़ा है—यह बताइए साहब इन्हें! जैसे ख़ुद तो इतनी समझ है ही नहीं कि गाँव वाले इस साल लगान दे ही नहीं रहे हैं। कल मुंशी ने कहलाया कि हुजूर के बिना वसूली-निकासी मुश्किल ही है। यह तो नहीं कि ख़ुद जाकर बस दो फ़टकार बताएँ तो सब ठीक हो जाए। ऐसी भी क्या कांग्रेस बीबी की गुलामी है कि जो कुछ वह कह दें वही हो। ऐ हाँ, यह

तो बताओ जरी, क्या काँगरेस बीबी बड़ी हसीन हैं कि जिसको देखिए वही उन पर फ़िदा है। अच्छा जी तुमने कभी देखा है, काँगरेस बीबी को ? देखा जरूर होगा। होंगी कोई राजा इन्दर की परी, बड़ी चटक-मटक वाली। देखो सच बताना, तुम्हें मेरे सिर की क़सम !'

एक बड़े विद्वान की तरह बेगम साहिबा की नासमझी पर, नवाब साहब जरा तनकर मुस्करा दिए।

बेगम साहिबा ने जिद्द पकड़ ली—'अब खड़े-खड़े मुस्कुरा रहे हैं, यह नहीं कि बता दें। तुम्हें मेरे सिर की क़सम बता दो।'

नवाब साहब ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—'क्या बताएँ ? अरे, काँगरेस कोई परी नहीं; वह तो एक जमात का नाम है जो मुल्क को आजादी दिलाने की कोशिश कर रही है।'

'ऊँह, अब लगे बहलाने ! यह सब किसी बच्चे को जाकर समझाओ जो तुम्हारी बातों में आ जाए। मैं इतनी नादान थोड़े ही हूँ !'

'ये लीजिए, ये मजा देखिए ! अरे ख़ुदा की क़सम, मैं सच कहता हूँ। यकीन मानो, मैं तुम्हें 'अवध अख़बार' में दिखा सकता हूँ।'

बेगम साहिबा मुँह फुलाकर पलंग पर चली गईं। नवाब साहब ने काफी कोशिश की कि बेगम कुछ मुँह से बोलें, मगर वह ख़ुदा की बंदी क्यों बोलने लगी। आखिर आजिज़ आकर नवाब साहब गरदन झुकाकर बाहर जाने लगे।

बेगम साहबा चट से उठ बैठीं और दीवारों को सुनाकर कहने लगीं—'जो हमें यों अकेला छोड़कर जाय, वह हमी को है-है करे !'

नवाब साहब बेचारे दरवाजे से बाहर जाकर लौट आए। बोले—'कौन तुम्हें छोड़ के जा रहा है! तुम तो आप ही मुँह फुलाए बैठी हो।'

'मैं मुँह फुलाए बैठी हूँ? हाँ भाई, अब तो हम ऐसे हो गए कि कोई हमें दो बातें सुना ले।'

नवाब साहब के दिल को काफी सदमा पहुँचा। बोले—'कौन तुम्हें कुछ कह रहा है, जो इस तरह तूफ़ान मचा रही हो!'

'मैं तूफ़ान मचा रही हूँ? हाँ भाई, अब तो हम बुरे लगेंगे ही। यह काँगरेस मुई के सामने हमारी बात कौन पूछेगा?' बेगम साहबा फफक-फफक कर रोने लगीं।

नवाब साहब पर बुरी बीती। बेचारे बड़े शशपंज में पड़े कि आख़िर इस बला से कैसे छुटकारा मिले। गाँव के मुंशी को मन ही मन कई हजार बार कोसा। अगर कहीं इस वक्त वह मौजूद होता तो फ़ौरन ही मौक़ूफ़ कर दिया जाता। ख़ैर साहब, किसी तरह समझा-बुझाकर बाहर आए। मगर काँगरेस बीबी का शक न दूर होना था। हाँ, मामला कुछ रफ़ा-दफ़ा जरूर हो गया।

बाहर आते ही मियाँ क़ादिर और पहलवान ने उठकर ताजीम की—'सलामवालेकुम, हुजूर!'

'वालेकुम सलाम, भाई!' कुछ फिरे मन से जवाब देकर नवाब साहब धम से मसनद पर बैठ गए।

मियाँ क़ादिर ने फ़ौरन ताड़ लिया कि आज सरकार किसी पर बिगड़कर आए हैं, लिहाजा झट से बात छेड़ दी—'आज हुजूर बड़े मजे की ख़बर छपी है। आगरे में हुजूर एक औरत ने एक पहलवान से कुश्ती निकाली।'

पहलवान ने हाथ पर बैठे हुए मच्छर को दूसरे हाथ से, पट से मारते हुए कहा—'अमाँ हटो भी, तुम भी बस ऐसी-ऐसी ही खबरें लाया करते हो।'

मियाँ क़ादिर ने जरा मुस्करा कर कहा—'अब झेंप गए। अरे उस्ताद, सच कहता हूँ, दो-ही दाँवों में तुम्हारे हवास बिगाड़ दे, ऐसी सकत है वह।'

'अरे जाओ भी। ऐसे-ऐसे पटकने वाले बहुत देखे हैं। जब सादक को ही दन्न-से चुटकी बजाते-बजाते पछाड़ दिया, तब वह भला औरत? उस बेचारी की क्या हस्ती, जो हमारे सामने आए!' कहते-कहते पहलवान ने जरा अपना सीना फुला लिया।

'अरे हुजूर, सच कहता हूँ, उसने जब फ़रीद को पछाड़ दिया तो फिर ये किस खेत की मूली हैं?'

नवाब साहब को अब जरा कुछ मजा आने लगा। बोले—'अच्छा, फ़रीद को पछाड़ दिया! अमाँ नहीं, हम यह नहीं मान सकते। मियाँ, फ़रीद को कौन पछाड़ सकता है? देखा तो था किरेमर पहलवान को, वह जोर से पटखनी बताई कि······'

'अरे, आप यकीन मानिये सरकार, उसने फ़रीद को चित कर दिया। जैसे ही पहलवान लँगोटा कसके अखाड़े में उतरे, हाथ मिलाया, तो उसने उनकी उँगलियाँ तो चुर-मर कर दीं। बस साहब, फ़रीद फिर ठहर न सके, दो ही मिनट में खट से सीधे हो गए।'

पहलवान जरा कुछ जल-भुन गए। कहा—'ले बस, रहने भी दीजिए। इतनी आसानी से फ़रीद को चित करनेवाला है कौन? अमाँ, हमीं को जब उसे दबाने में पूरे चार घण्टे लग गए और फिर भी बराबर की ही छूटी, तब भला वह बेचारी—'

'अच्छा, तो यह बताओ कि लड़ोगे उससे ? दम हो तो फ़ौरन उसको चाइलन करो।

नवाब साहब मुस्कराए और बोले—'क्यों भाई पीरू, है दम ? चाहो तो लड़वा दें।'

पहलवान ने जरा अप्रतिभ होकर कहा—'अब जैसी हुजूर की मर्जी। मगर खाँमखाँ की परेशानी है, वह मुझसे लड़ेगी ही नहीं। आप यकीन मानिये।'

क़ादिर मियाँ बोले—'अच्छा, तो फिर क्या हर्ज है ! चलो हो जाए; मगर, सच बताना, जी तो तुम्हारा धुकुर-पुकुर होता होगा, उस्ताद।'

'अमाँ जाओ भी, एक औरत से लड़ने में मुझे किस बात का खौफ़ ?' पहलवान बोले।

'अच्छा तो बुलाओ उसे। हो जाय फिर।' नवाब साहब ने कहा।

क़ादिर मियाँ बोले—'अच्छा तो फिर कल चिट्ठी लिखता हूँ। मगर हुजूर, फिर कहता हूँ, इस दरबार की बड़ी बदनामी फैल जाएगी कि पीरू पहलवान एक औरत से हार गए।'

'अमाँ जाओ भी, दो फटकारों में मैदान छोड़कर भागेगी।' पहलवान बोले।

'अजी जनाब, उसने गप्पे पहलवान से भी कुश्ती बदी है। भला तुम फ़रीद और गप्पे के आगे क्या चीज हो !' क़ादिर बोले।

'अब यही तो गुस्सा मालूम होता है। मैं फिर कहता हूँ कि इनका खयाल कहाँ है ? भला, इन दोनों का और मेरा मुकाबला ?'

'अच्छा, तो फिर क्या है, बद लो कुश्ती। कल तार दे दो

उस औरत को, आ जाएगी। परसों हो जाय।' नवाब साहब बोले।

सिर खुजलाते हुए पहलवान बोले—'लेकिन हुजूर, परसों तो मुझे जरी काम से जाना है। दो हफ्ते लगेंगे।'

क़ादिर मियाँ हँसकर बोले—'देखा हुजूर अभी से ही ढीले पड़ गए। मैंने पहले ही अर्ज किया था।' कहते हुए मियाँ क़ादिर हो-होकर हँस पड़े।

इसी वक्त जनानख़ाने से ख़बर आई कि बेगम साहबा को ग़श आ गया। हुजूर गर्दन झुकाकर अन्दर चले गए और ठंडी साँस लेते हुए पहलवान ने क़ादिर की तरफ़ देखा। वह इन्हें देखकर मुस्करा रहा था!

१७

रेल का सफ़र

गाँव से ख़बर आई कि इस साल लगान की वसूली नहीं हो पा रही है। बेगम साहबा ने काफ़ी लानत-मलामत की। नवाब साहब ने सोचा कि अरसे से रेल पर सफ़र नहीं किया, चलो, इसी बहाने घूम आया जाएगा। यारों ने कहा, 'आम की फ़सल है, ग़रीब-परवर ; चलिए, जरी बहार रहेगी !'

मियाँ क़ादिर बोले—'एक बात अर्ज कर दूँ, हुजूर ! बिना······हाँ, मजा नहीं रहेगा। ये बरसात का मौसम देखिए ! झीनी-झीनी फुहारें पड़ रही हैं, ये समा बँधा हुआ है, और जो कहीं······कमरिया नागिन सी बल खाय······क्यों भई, पहलवान ?'

पहलवान क़ादिर की इस एक बात पर ही अपनी तमाम रियासत लुटा देने को तैयार हो गए।

मुस्करा कर हुक्म हुआ कि तुम मुन्नन को लेकर स्टीशन पर मिलना।

बटेर की काबुक के लिए नई खोल सिलवाई गई। सटक की निगाली नई बनी। उसमें सलमें के छोटे-छोटे गुच्छे लटकाए गए। गुलामहुसैन के पुल से, ख़ास तौर पर, बढ़िया बीस रुपए सेर वाली असली अम्बरी तम्बाकू आई। ग़रज यह कि पूरी-पूरी तैयारी हो गई। हुजूर के साथ नौकर भी चलेंगे, इसका इन्तजाम सलारू को सौंपते हुए हुजूर ने फ़रमाया—'सुनते हो

सलारू, जरी बाहर अदब से पेश आइएगा। ऐसा न हो कि गुस्ताखी कर बैठो, वरना उसी दम मौकूफ़ कर दूँगा! आँख के इशारे पर सारे काम हों।'

हाथ में झाड़ू लिए सलारू ने एक बार उचटती हुई नजरों से हुजूर की तरफ देखा, फिर कहा—'अच्छा मियाँ, अच्छा!'

'हाँ, खूब याद आई। जरी कान खोल कर सुन लीजिए, वहाँ हमें मियाँ कहके मत पुकारिएगा।' नवाब साहब ने आदेश दिया।

'अच्छा तो फिर?' गौर से सुनने के लिए मियाँ सलारू जरी तन कर खड़े हो गए।

नवाब साहब ने फ़रमाया—'वहाँ हुजूर, सरकार, गरीबपरवर, बन्दापरवर, बन्दानवाज—यही सब अल्फ़ाज हमारी शान में इस्तेमाल हों।'

बुहारी ढीली हो गई थी। सुतली से कसते हुए सलारू ने उत्तर दिया—'बहुत अच्छा, हुजूर सरकार!'

नवाब साहब की जिमींदारी थी मल्हौर में। जुग्गौर में एक और जमींदार दोस्त रहते हैं। इतनी दूर आकर अगर उनसे मिलने न गए तो वह बुरा मान जाएँगे। बाद उसके बाराबंकी तक चला जाएगा, यहाँ तक आकर बाराबंकी घूमने न गए तो दुनियाँ में देखा ही क्या? बहरहाल, यह तय पाया गया कि इस बार बाराबंकी तक का धावा मारा जाएगा।

चारबाग़ स्टेशन से गाड़ी छूटती है, आठ बज के दो मिनट पर। सबेरे चार बजे से ही बेगम साहबा ने धूम मचा दी।

तू चल और मैं चल, और ये असबाब बँध रहा है, और ये नाश्ता तैयार हो रहा है—ग़रज कि मुहल्ले वालों ने भी जान लिया कि आज सूरज पच्छुम से उरूज होने वाला है।

स्टेशन पर पहुँच कर हुजूर ने पहलवान से दरयाफ़्त किया—'क्यों जी पहलवान, रेल में जो गद्दे बिछे रहते हैं, उसे क्या कहा जाता है ?'

एक-दो सेकेण्ड तक कनपटी खुजला कर पीरू ने कहा—'शायद फस्ट किलास होता है हुजूर !'

'अच्छा, तो उसका ही टिकट खरीदना, समझे !' नवाब साहब ने फ़रमाया।

पीरू ने निहायत अदब के साथ गरदन झुका कर ताजीम की। नवाब साहब ने चारों तरफ गरदन घुमाकर देखा। दूर पर दो-चार आदमी खड़े हुए उनकी तरफ़ देख रहे थे।

सलारू झल रहा था पंखा, कल्लू ने चाँदी के बने हुए गंगा-जमुनी काम के डिब्बे को खोल कर चाँदी की बनी हुई पत्तेनुमा छोटी-सी तश्तरी में वर्क से लिपटी हुई दो पान की गिलौरियाँ हाजिर कीं। नवाब साहब ने निहायत नजाकत और नफ़ासत के साथ एक गिलौरी उठाकर मुँह में रख ली।

इलाहीबख्श ने झुक कर रेशमी रूमाल निकाला, हुजूर ने हाथ और मुँह पोंछ लिया।

नवाब साहब जरा कुछ तुनुकते हुए बोले—'ये हैं क़ादिर के इन्तजाम ! अभी तक आए ही नहीं हजरत ! और अगर कहीं गाड़ी छूट गई तो बस हो गया।'

अजब बेचैनी थी, अगर क़ादिर मियाँ वक्त पर न आए तो आधा मजा गायब हो जायगा, और क़ादिर मियाँ चाहे आयें चाहे न आयें, मगर मुन्नन······? बस, इसी उलझन में हुजूर प्लैटफार्म पर चक्कर लगा रहे थे। सलारू पंखा झलता हुआ, कल्लू पानदान लिए, हुसैनी के हाथ में पीकदान, नब्बन के हाथ में फर्शी और ख़ुदाबख्श सटक की निगाली थामे हुए। प्लैटफार्म

पर एक मेला-सा लगा हुआ—लोग बस इसी क़वायद को देख रहे थे।

एक बार चारों तरफ नजर उठा कर हुजूर ने देखा। फिर जरी तेजी से चहलक़दमी शुरू हुई।

बस जनाब, फिर यकायक क्या देखते हैं कि स्टेशन-भर में एक बिजली-सी चमक गई। जरदोजी के काम के लक़दक़ आला-साड़ी पहने हुए बीबी मुन्नन जान ने आकर हुजूर को झुककर सलाम किया! हुजूर की बाछें खुल गईं।

'आय-हाय, यह ग़जब! भई क़सम ख़ुदा की, सच कहता हूँ, अभी थोड़ी देर में ही देख लेना कि स्टीशन भर में बस लाशें ही लाशें नजर आएँगी!' नवाब साहब ने मुस्कराकर कहा।

साड़ी के पल्ले को सिर पर जरा और खींचते हुए मुन्नन कटीली चितवन से नवाब साहब के दिल पर मशीनगन चलाती हुई बोलीं—'ले, बस रहने भी दीजिए! आते ही आते बनाना शुरू कर दिया। ख़ुदा क़सम, मैं चली ही जाऊँगी!'

'अरे-अरे, कहीं ऐसा करना भी मत। शहर में गदर मच जाएगा।' नवाब साहब आज मजाक कर रहे थे।

मियाँ क़ादिर ने कहा—'आज हुजूर, जरी देखिएगां तो रेल आज हवा से बातें करेगी।'

पहलवान—'अमाँ, कहते क्या हो? देख लेना आज, रेल ड्रेवर के सम्भाले भी नहीं सम्भलेंगी।'

नवाब साहब मुन्नन की ओर देखकर मुस्करा दिए और गाड़ी ने सीटी बजाते हुए प्लैटफार्म पर कदम रखा।

फर्स्ट क्लास के डिब्बे में एक साहब तशरीफ रख रहे थे।

नवाब साहब ने फरमाया—'अमाँ पीरू, गाड़ी रिजर्व क्यों नहीं करा ली!'

'मैंने तो हुज़ूर गार्ड साहब से कहा था। पहले तो वह बोले, 'गाड़ी रिजर्व ही नहीं हो सकती!' फिर जब मैंने हुज़ूर का नाम लिया तो कहने लगे, 'पहले से इत्तिला क्यों नहीं कर दी? हमें मालूम होता कि नवाब साहब सफर कर रहे हैं, तो पहले से अलग इञ्जन जुतवा देते। अब इस वक्त तो कोई इञ्जन भी खाली नहीं, सब गाड़ियों में जुते हुए हैं।

नवाब साहब कुछ न बोले। पहलवान ने फिर कहा—'गार्ड साहब तो ख़ुद हुज़ूर से माफ़ी की दरख़ास्त करने आ रहे थे, मैंने ही उन्हें रोक दिया।'

नवाब साहब बोले, 'अच्छा किया। अरे हाँ, गार्ड आदमी, हजारों काम पड़े हैं। मुफ़्त में तकलीफ हो जाती। ख़ैर, कोई बात नहीं, मजबूरी थी। और नहीं तो क्या इन्तजाम न हो जाता?'

पीरू कहने लगे—'उन्होंने तो कहा गरीबपरवर, आस-पास के स्टीशनों पर भी कोई इंजन नहीं। कलकत्ते से इंजन बुलाना पड़ जाता।'

मुन्नन ने पीरू को टोकते हुए कहा—'अच्छा, होगा जी, ऐसे तो तुम्हारे नवाब साहब कोई ख़ूबसूरत भी नहीं जो उनके लिए कलकत्ते से इंजन आता!'

नवाब साहब एक सर्द आह फेंक, दिल पर हाथ रखते हुए मुन्नन की ओर देखकर मुस्करा दिए। कहा—'हाँ भई, कह लो जो जी में आए, तुम्हारा जमाना है!'

फिर बैठे हुए शरीफ-ज़ात की ओर मुख़ातिब हो नवाब साहब ने मुस्कराकर फरमाया—'क्यों साहब, मैं सही अर्ज कर रहा हूँ न?'

उन्होंने उचटती हुई नजरों से इनकी तरफ देखकर कहा—'जी हाँ!' और फिर अख़बार पलट कर पढ़ने लगे!

'अरे सरकार, ताँगेवाला इन्हें बिठाने को राजी ही नहीं होता था। कहता था, हमारा घोड़ा मचल जाएगा!' मियाँ ने हँसकर कहा।

मुन्नन ने आँखें तरेरीं—'ए मियाँ कादिर, जरी अपनी औकात समझ के बात कीजिए। मैं ऐसे बेहूदा मजाक नहीं पसन्द करती। सुनते हो जी, मना कर लो अपने मुसाहबों को।'

नवाब साहब ने कादिर की तरफ कड़ी निगाह कर देखा। क़ादिर मियाँ एकदम बुत बन गए।

'अच्छा लो, गुस्से को थूक डालो। अब कोई चीज सुना दो। बड़ा मजा आ जाए, ख़ुदा क़सम!' नवाब साहब ने सटक का एक क़श खींचकर कहा।

'मैं नहीं सुनाती कुछ भी। मेरी तबियत नहीं करती।'

'अरे सुना दो न, जरी बाबू साहब की खातिर ही। अरे हाँ, ये भी क्या कहेंगे।'

लेकिन मुन्नन चुप रहीं।

'क्यों बाबू साहब, आप कहाँ तशरीफ ले जाएँगे?'

'कलकत्ता।'

नवाब साहब ने ताज्जुब के साथ कहा—'अच्छा!' फिर हुक्के का क़श खींचने लगे।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। फिर नवाब साहब ने पूछा—'क्यों साहब, अख़बार में कोई नये हाल चाल?'

'जी हाँ, यही कि रन्डियाँ शहरों से निकाल दी जाएँगी।'

मुन्नन चमक के उठ बैठी। पूछा—'क्यों साहब, रंडियों ने क्या कुसूर किया है ?'

साहब ने फरमाया—'यही कि वे लोगों को गाना नहीं सुनातीं।'

नवाब साहब, पीरू, क़ादिर—सभी, हँस पड़े।

'च्-हा-हा, क्या तबियत पाई है हुजूर ने भी, कि सुभान-अल्ला ! वाह-वाह, क्या ख़ूब कहा कि गाना नहीं सुनातीं, इस-लिए—वाह !' पीरू मियाँ ने झूमते कहा।

नवाब साहब ने फरमाया—'भई वाह, आपके नियाज हासिल कर तबियत बहुत ख़ुश हुई। जनाब का दौलतखाना कहाँ है ?'

'जी, गरीबख़ाना तो लखनऊ में ही है।'

'अच्छा, तो ये कहिए, आप हमारे ही शहर के बाशिन्दे हैं। भई सचमुच, ख़ूब मुलाक़ात हुई आज आपसे भी। तो जनाब, वहाँ किस मुहल्ले में तशरीफ रखते हैं ?'

'खाकसार क्लाइव रोड पर रहता है।'

नवाब साहब जैसे कुछ सोचने लग गए। फिर क़ादिर से पूछा—'क्यों भई कादिर, ये किलाई रोड कहाँ पर है ?'

'किलाई रोड का नाम तो हमने नहीं सुना। शायद कहीं झवाँईटोले के पास ही है। मियाँ कादिर ने उत्तर दिया, फिर 'जनाब' की ओर मुख़ातिब होकर कहा—'क्यों हुजूर, मेरा ख़याल दुरुस्त है ?'

'जी हाँ, बिल्कुल सही। बस, झवाँईटोला से जो गली गई है न, बड़ी पतली-सी, उसके अन्दर होकर ही, नवाब साहब के मकान का बरामदा पार कीजिए और क्लाइव रोड आ गया।' जनाब ने फरमाया।

'अजी नहीं, आप तो मजाक कर रहे हैं।' नवाब साहब हँसकर बोले।

'वल्लाह, आपके यहाँ से तो मैंने मजाक का रिश्ता भी नहीं जोड़ा।' नवाब साहब झेंप गये।

पीरू पहलवान ने जरा तपाक के साथ 'जनाब' से कहा—'हमारे हुजूर का नाम तो आपने सुना ही होगा, दुनियाँ-भर में यह तो मशहूर ही है कि आप लखनऊ के सबसे बड़े नवाब साहब हैं। खास मलिके जमनियाँ नवाब वाजिदअली शाह साहब के पोते।'

जनाब ने जरा चौंककर बड़े तपाक के साथ मिलते हुए कहा—'ओहो, नाम तो एक अरसे से सुनता चला आ रहा था। आपसे तो मिलने का भी बहुत इश्तियाक था। मगर खुदा की मर्जी, मिले भी तो सफर करते हुए।'

खुशी से बत्तीसी निकालकर गर्व से सिर हिलाते नवाब साहब ने कहा—'और जनाब का इस्म मुबारिक ?'

'फिदवी को हसन इमाम कहते हैं।'

'हुजूर, वहाँ कोई बड़े ओहदे पर होंगे ?' पीरू ने प्रश्न किया।

'अरे नहीं यार, लालकुएँ वाले नवाब साहब का मुसाहब हूँ।'

'हा-हा-हा, आप बात-बात में मजाक करते हैं। भई यकीन मानियेगा, सचमुच बड़ी तबियत खुश हुई आज आपसे मिलकर। अहा, क्या पुरमजाक तबियत पाई है आपने, वल्लाह !' नवाब साहब ने कहा।

'अजी वाह, यह तो फकत आपकी इज्जत-अफजाई है, वरना मैं क्या और मेरा मजाक क्या !'

एकाएक जङ्गल में ही गाड़ी खड़ी हो गई। मि० हसनइमाम ने बाहर झाँक कर देखा।

नवाब साहब ने पूछा—'क्यों साहब, यहाँ तो कोई स्टेशन भी नहीं। गाड़ी क्यों खड़ी हो गई ?'

'सिगनल डाउन नहीं है।'

'ये अभी-अभी आपने कौन-सा लफ़्ज इस्तेमाल किया ?'

'सिगनल।'

'जी हाँ। अब समझ में आया, तो इस सिगनल से क्या होता है, जनाब ?'

'इससे गाड़ी नहीं लड़ती जनाब।'

'तो अब ये यहाँ खड़ी क्यों है ?'

'किसी गाड़ी से भिड़ने का इंतजाम कर रही है।'

नवाब साहब एकदम घबरा गए—'नहीं, सच ? आप मजाक कर रहे हैं।'

इमाम साहब ने बड़े दुख के साथ कहा—'अजी साहब, मजाक, कैसा, यहाँ तो जान पर बीत रही है।'

'तो क्यों साहब, लड़ने का इन्तजार क्यों कर रही है ?'

'सरकारी हुकुम।'

'सरकारी हुकुम कैसा साहब ?'

'यही कि सिगनल डाउन नहीं है, अब ड्राइवर कैसे जाय ? हुक्मअदूली तो कर नहीं सकता, इसलिए यहीं खड़ा रहेगा। दूसरी गाड़ी आएगी, बस सब मामला खत्म ! या ख़ुदा, अगर ऐसा मालूम होता तो आते ही क्यों ?'

मुन्नन रोने लगी। नवाब रोते हुए बोले—'अजी साहब, आप तो पढ़े-लिखे हैं, जरी जाकर ड्राइवर को समझाइए कि आख़िर ये क्यों सबकी जान लेने पर तुला है ! अरे हाँ, जान

है तो जहान है। मैं ही उसे अपने यहाँ नौकर रख लूँगा। बड़ी मेहरबानी होगी, जरी जाकर समझाइए उसे।

'मगर साहब, वह मानेगा नहीं। बहुत ही खैरख्वाह नौकर है। लेकिन शायद चार-पाँच सौ रुपया देखकर मान जाय।'

नवाब साहब फौरन उठे और पाँच सौ रुपया निकाल कर उन्हें दिया।

इमाम साहब ज्योंही रुपया लेकर गाड़ी से उतर कर जरा आगे गए थे कि गाड़ी चल दी।

'देखा हुजूर, मैंने पहले ही समझा था कि ये चोर है, लेकर भाग गया ! गाड़ी इसी वजह से रुक गई थी, अब चल दी।'

मुन्नन बोली—'बना गया इन्हें बेवकूफ !'

नवाब साहब कुछ न बोले—फकत 'आह' भर कर रह गए।

१८

कालेज के लड़के

सारे ख़ल्क में छान मारिये, पर इन कालिज के लौंडों-सा शरीफ-जात इन्सान या हैवान कोई भी दूसरा इस दुनिया के परदे पर और न मिलेगा। न इन्हें यह ख़याल कि हम किससे बातें कर रहे हैं, किससे किस तरह पेश आना चाहिये। भई, सच तो यह है कि बुजुर्गों ने सच ही कहा है कि यह उनका क़सूर नहीं, अंगरेजी तालीम का ही असर है जो आज वह इस किस्म की बेहूदा हरकत करते हैं कि ख़ुद नवाब साहब का ही मजाक उड़ाना शुरू कर दिया—और वह भी ख़ास उनके मुँह पर ही।

बात यह है कि उस दिन जरी मौसम निहायत ही आला था। हुजूर उस दिन पिछली रात ही जग पड़े थे, यानी कि सुबह पाँच बजे ही पलङ्ग छोड़कर खिड़की पर बैठे हुए गली की तरफ देख रहे थे, कि देखा हकीम रमजानअली साहब हाथ में पतली-सी ख़ुश्नुमा छड़ी लिये चहल-कदमी करते हुए चले जा रहे हैं।

अरसे बाद हुजूर ने उन्हें देखा था। कुछ दोस्ती ने जोर मारा। बस आवाज दे ही बैठे—'अक्खा, हकीम साहब हैं!'

हकीम साहब ठिठक कर एकदम खड़े हो गए और ऊपर देखा, एकदम झुककर सलाम करते हुए फरमाया,—'सलाम-

वालेकुम, गरीबपरवर ! बड़ा ही ख़ुशक़िस्मत हूँ जो आज अलस्सुबह ही हुजूर का दीदार हासिल हुआ—'

हँसते हुए नवाब साहब ने फरमाया—'ठहरो-ठहरो भाई-जान, नीचे ही आ रहा हूँ।'

बस फिर तो न कपड़े बदले न वजू किया, और फ़जिर की नमाज तो शायद ही कभी पढ़ी हो, बस झप से नीचे आगए।

'कहाँ जा रहे थे, इतने तड़के ?'

'कुछ नहीं गरीबपरवर जरी कम्पनी बाग तक जा रहा था। सुबह की हवा सेहत के लिए बड़े फायदे की चीज है। मैं तो सरकार से इल्तजा करूँगा कि हुजूर भी चलें। दो-चार दिनों बाद खुद ही मुलाहजा फरमाइयेगा कि चेहरे पर चौगुनी रौनक आ गई है। और सबेरे तो हुजूर बड़े-बड़े अफ़सरान कम्पनीबाग की हवा खाते हैं। यानी कि आप ये खयाल फ़रमाएँ, अभी कुछ ही दिन हुए मैंने अखबार पढ़ा था कि लखनऊ के कम्पनीबाग़ की हवा दुनिया भर में सबसे अच्छी है। तभी तो हुजूर यह मुलाहजा फ़रमायें कि लाल कुएँ वाले नवाब साहब भी बिला-नाग़ा रोज तशरीफ़ लाते हैं।'

नवाब साहब ने कहा—'ये तो ठीक कह रहे हो, भाईजान। अच्छा कल से हमें भी पुकार लिया करो। हम भी तुम्हारे साथ सैर करने चलेंगे !······भई जरी दो मिनट रुकना मियाँ, अभी कपड़े पहन कर आया।' कह कर नवाब साहब लपकते हुए अन्दर चले गये।

नवाब साहब की घड़ी जब तक दो मिनट बजाती रही, हकीम साहब तब तक खड़े-खड़े मक्खियाँ मारा किये।

खैर साहब, नवाब साहब घूमने चले।

कहना शुरू किया—'भई पूछो मत, उस दिन बारिश की वजह से पंथजी हमारे यहाँ रुक गए। पुराने मुलाकाती भी हैं। बात-चीत, हँसी-मजाक चलने लगा। लोगों ने जो देखा तो हैरत में पड़े। बस अब आप यह मुलाहिज़ा फ़रमायें कि सुबू से शाम तक लोगों का ताँता बँधा रहता है। सब कोई कहते हैं कि हमें एक सिफ़ारशी-रुक़्क़ा लिख दें तो उनको नौकरी मिल जायगी। मैं हर चन्द समझाने की कोशिश भी करता हूँ कि कांग्रेस वाले सिफ़ारिश को कुछ भी नहीं समझते; मगर वह लोग मानते ही नहीं। भई कसम ख़ुदा की, यक़ीन मानना उस्ताद, कि बड़ा आदमी होना भी जी का जञ्जाल है। मैं तो उन्हें समझाता हूँ कि सिफ़ारिश का कुछ भी असर नहीं होता, और वह पीछे पड़े हैं, कहते हैं, साहब कांग्रेसी-राज में जितनी सिफ़ारिशें चलती हैं, उतनी तो कभी चली ही नहीं।'

बग़ल से तीन-चार लड़के मजे में बातें करते चले जा रहे थे। नवाब साहब की तरफ देखा तो देखते ही एक दूसरे के कानों में कुछ कहा और मुस्करा दिये। नवाब साहब ने समझा शायद मेरी तारीफ़ हो रही है। लिहाजा अपना रोब ग़ालिब करने के लिए रमजानी मियाँ से कहने लगे—'अभी उसी दिन सज्जाद मियाँ अपने लड़के के साथ आए। कहने लगे, मियाँ तुम्हारे ही हाथों हमारी इज्जत है। हमारी गोदियों खेले हो तुम तो जरी-सी क़लम घिस दोगे तो इसे डिप्टी-कलक्टरी मिल जायगी। अब उनसे इन्कार भी न करते बना। मैंने चिट्ठी लिख दी। साहब आप यकीन मानिये, एक घण्टे भर के बाद वह फिर आए, और हमें गले से लगाकर रोने लगे। कहा, भई तुम्हारा एहसान न भूलेंगे। तुम्हारी चिट्ठी दिखाते ही फौरन हुक्म हुआ कि हामिदहुसेन को डिप्टी कलक्टरी मिल जाय।'

रमजानी मियाँ ने कहा—'अरे हुजूर, आपके बड़े रुआब हैं। सारी दुनिया जानती है कि हर दूसरे-तीसरे दिन बादशाह सलामत तक के ख़त आपके पास ख़ास विलायत से आया करते हैं।'

हाथ की छड़ी को जरा इतमीनान के साथ घुमाते हुए नवाब साहब ने एक बार घूमकर उन लड़कों की तरफ़ देखा।

अपनी तरफ़ इन्हें यों देखते हुए लड़के मुस्कराए। आप ख़ुश हो गए।

बातें करते हुए जरा आगे बढ़े ही थे कि चारों लड़के तेजी से आकर इनके सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। कहा—'हुजूर !'

हुजूर थोड़ा-सा तन कर खड़े हो गए, फिर निहायत ही मुलायमियत के साथ कहा—'फ़रमाइए, फ़रमाइए।'

लड़के ने हाथ जोड़ कर कहा—'हुजूर आप के हाथ में सब कुछ है, आप मालिक हैं। आपको सब अख्तियार है।'

निहायत आजिजी के साथ खीसें निपोरते हुए नवाब साहब बोले—'अजी वल्लाह, यह आपकी इज्जत अफ़जाई है, वरना मैं क्या—'

'अजी वाह, आप तो बादशाह सलामत के दोस्त हैं। और हमारे मालिक हैं। आपकी नजरे-इनायत से हम लोग जी उठेंगे। आपसे बढ़कर बड़ा आदमी दुनिया के परदे पर कोई नहीं। हम सब आपके ही जेरसाये परवरिश पाते हैं।'

नवाब साहब ने जरा मुस्करा कर अपनी ठोढ़ी पर हाथ फेर लिया।

लड़कों ने फिर कहना शुरू किया—'अगर आप सिफ़ारिश कर दें तो—'

'देखिये साहब, सिफ़ारिश करते-करते तो मैं आजिज आ गया हूँ। अब आप ख़ुद ही ख़याल फ़रमाइए कि रोजाना कम-से-कम तीन-चार हजार आदमियों की सिफारिश करनी पड़ती है।'

'अजी हुजूर को ख़ुदा सलामत रक्खे। अल्लाह करे हुजूर के हजार बच्चे हों।'

नवाब साहब एक बड़े आदमी की तरह गर्दन हिलाकर हँस पड़े। कहा—'वल्लाह, ये हजार बच्चों वाला फ़िकरा भी एक ही रहा। भई क्या जिन्दा-दिल आदमी हैं, आप लोग भी! ख़ैर फ़रमाइए।'

एक लड़का बोला—'हमारी मंशा है हुजूर, हमें म्युनिसिपैलटी की जमादारी मिल जाय। हम एक ही झाड़ू में आपके दिमाग की तमाम गर्द बुहार देंगे।'

दूसरा बोला—'हुजूर, हम तो आपके साथ ही काम करना चाहते हैं। हमने सुना है गरीबपरवर, आप जूते अच्छे गाँठ लेते हैं। हमें भी सिखा दीजिए।'

ख़ुदा ख़ैर करे। आज तक किसी की हिम्मत भी न हुई थी कि नवाब साहब से ऐसी लगो बातें कहे। हुजूर का चेहरा लाल हो गया।

तीसरे लड़के ने दूसरे से कहा—'तुम्हें इतनी तमीज भी नहीं रामदास कि तुम किससे बातें कर रहे हो। ख़ैर माफ़ कीजिए हुजूर। इन लोगों की बातों का ख़याल न कीजिएगा। इनका दिमाग खराब हो गया है। इसीलिए हम लोग इन्हें सुबह की हवा खिलाने लाते हैं। मैं इनकी तरफ से मुआफी का ख्वास्तगार हूँ। और हुजूर, बड़ी इनायत होगी अगर मेरे लिए सिफारिश कर देंगे। आपकी मेहरबानी से अगर मैं डिप्टी-कलक्टर हो

गया तो आपका खयाल कभी न भूलूँगा। बाल आप ही से कटाया करूँगा।'

चौथे ने कहा—'अमाँ नहीं जी, ये तो घाट वाले की मिल-कियत हैं। मैं इन्हें धोबी से खरीदकर बाद को आजाद कर दूँगा।'

नवाब साहब की सूरत इसी वक़्त मुलाहजा फ़रमाने लायक़ थी। और रमजानी मियाँ तो एकदम बुत बन गए थे। हुजूर ने रमजानी से कहा—'रमजानी, जरी इन्हें समझा तो देना जी कि हम कौन हैं।'

रमजानी मियाँ एक मिनट तक चुप रहे फिर लड़कों की ओर मुख़ातिब होकर बोले—'आपको वाजे हो जनाबमन, कि हमारे हुजूर—'

'जी-हाँ, आपके हुजूर अभी-अभी काँजीहौस से पगहिया तुड़ाकर भागे हैं, कम्पनीबाग की घास चरने के लिए।'

नवाब साहब तेजी से चार क़दम आगे बढ़ गए। लड़कों ने क़हक़हा लगाना शुरू किया।

नवाब साहब रमजानी से कुछ कहने ही जा रहा थे कि लड़के फिर दौड़कर इनके नजदीक आ गए और एक साथ ही कहना शुरू किया—'तो हुजूर, पंतजी के नाम सिफ़ारिशी-रुक्क़ा लिख दें।'

हलफ़ उठा के कहा जा सकता है कि नवाब साहब की आँखों में आँसू छलछला आए थे, दो मिनट बाद ख़ुदा जाने कैसी किरकिरी होती, मगर वैसे ही पुलिस के दरोगा साहब घूमकर लौट रहे थे, एक शरीफ़ को इस तरह परीशान होते देख कर लड़कों को समझा-बुझाकर हटाया।

नवाब साहब आगे घूमने न गए, लौट पड़े। रमजानी से

कहा—'ये साले, जरूर पक्के डाकू मालूम पड़ते थे, पुलीसवाले इनसे मिले रहते हैं, वरना दरोगा साहब पकड़ न ले जाते ! वह तो कहो, उन्होंने मुझे पहचान लिया, सोचा होगा अगर कहीं नवाब साहब ने रिपोर्ट कर दी तो नौकरी जायगी, वरना ये मुझे बचाते थोड़े ही।'

हकीम रमजानअली ने हाँ-में-हाँ मिला दी।

नवाब साहब ने एक ठंडी साँस लेकर फ़रमाया—'मगर मैं पंथ जी से इस मुआमले में कहूँगा जरूर। खैर, यह तो मेरे साथ—'

रमजानी हकीम ऊब कर एकदम कह उठे—'जी हाँ, हुजूर मैं सहादत दूँगा।'

नखास अभी दूर था।

१६

मुबारकबाद

सुबू-ही-सुबू घर भर में अपने हिसाब जैसे चाँदना छा गया। मामा भी, मुगलानी भी, सलारू भी, बुद्धन भी, तू भी, मैं भी—जिसे देखिये वही नाचता हुआ नजर आता है। अब्बासी दौड़ी हुई गई, कहा—'आज तो आपसे ऐरिङ्ग की जोड़ी लेंगे हम।'

हुक़्क़े का एक कश खींचकर मुस्कुराते हुए, धुँआँ छोड़कर नवाब साहब ने फ़रमाया—अरे तुम हमीं को ले लो, बी अब्बासी !'

बी अब्बासी ने जरा झेंपते हुए कहा—'हटिये, जाइये भी··· मैं·ऐरिंग लिये बिना मानूँगी नहीं मियाँ, समझे ?'

मियाँ ने मुस्कुराकर एक क़श बड़े इतमीनान के साथ खींचा; और उधर अब्बासी दौड़ी हुई गई मियाँ क़ादिर के घर।

क़ादिर मियाँ चबूतरे पर बैठे-बैठे अपनी लुँगी में पैबन्द सी रहे थे। :मुस्कराये, कहा—'अहा-हा, ये कौन बी अब्बासी जान हैं भाई ? अमाँ आज सूरज किधर से निकला है ? अमाँ आज किधर रास्ता भूल पड़ीं ?'

बी अब्बासी जरा कुछ तुनुकते हुए बोलीं—'ले बस रहने भी दीजिए। आते देर न हुई, मजाक करना शुरू कर दिया। हम तो मारे मुहब्बत के यहाँ इतनी दूर से दौड़ते हुए आए कि लाओ भई कादर का भी कुछ फ़ायदा करा दें। और कादर मियाँ ऐसे कि······'

जन्न-से हँसते हुए उठ कर बी अब्बासी की ठुड्डी चुटकी से दबाते हुए बोले—'अमाँ ख़फ़ा होगईं क्या भाई ? अरे भई, हम तो तुम्हारे गुलाम हैं गुलाम। जरी-सी इशारा कर दो तो अपनी गर्दन······। ऐ मेरे अल्ला, जरी देखो तो किस कदर पसीने छूट रहे हैं तुम्हारे। लाओ मैं पंखा झल दूँ!'

'ऐ चलो बस रहने भी दो। लो, मैं जाती हूँ।' बी अब्बासी ठिनकती हुई चलीं।

मियाँ क़ादिर ने हँसते हुए पकड़ा—'अब जरी में तुम बुरा मान गईं। तुम्हीं इन्साफ़ से बताओ कि इसमें हमारी क्या खता है ? बस यही तो कहा था कि लाओ पङ्खा झल दूँ। सो उसमें झूठ क्या था। एक तो तुम बिचारी हो कि इतनी दूर से हमारी खातिर दौड़ी चली आ रही हो, और एक हम कि तुम्हें पङ्खा तक न झलें ? वाह, यह भी कहीं होता है ?'

बी अब्बासी मुस्कराती हुई चुपचाप खड़ी रहीं। मियाँ कादिर ने अब्बासी से कहा—'हाँ, अब जरी बता तो दीजिए कि इस वक़्त बी अब्बासी महल साहबा ने इस खाकसार के गरीबखाने पर······'

'आज सुबुह्र ६ बजे बेगम साहबा के लड़का हुआ है।' बी अब्बासी ने फ़रमाया।

'अमाँ हाँ! हमारी कसम खाओ।'

'तुम्हारी कसम।' बी अब्बासी ने लहजे के साथ कहा।

'भई मान गए तुम्हें। आज तो अल्ला कसम पुलाव की पलेटों पर हाथ साफ होंगे। वल्ला, सचमुच तबीयत खुश कर दी इस दम तुमने।'

कनखियों से देखते हुए, दुपट्टे का पल्ला कन्धे पर डालते हुए बी अब्बासी ने कहा—'देख लो, हम तो मारे मुहब्बत के

तुम्हें इतनी दूर खबर देने आए और एक तुम हो कि पानी तक को न पूछा।'

'अच्छा, अब यों कहोगी भाई ?'

'अमाँ तुम को क्या मालूम कि हम तुम्हें कितना चाहते हैं। कलेजा चीर के दिखा दूँ कहो ? और तुम भी क्या कहोगी, लो आज सीना ही चाक किये देता हूँ।' मियाँ कादिर ने झट-से सलूके के बटन खोलते हुए अकड़कर आँखें बन्द कर लीं।

बी अब्बासी के हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गए।

फिर सज-बज कर मियाँ कादिर घर से निकले। पहलवान को खुश-खबरी सुनाई और चल दिये नवाब साहब के यहाँ। जो आगे बढ़े तो देखा हकीम रमजान अली साहब नब्बन मियाँ के घर से निकल रहे हैं। यह लोग तो अनदेखा कर गये, मगर हकीम साहब ने टोक ही दिया—'क्यों भई पहलवान, अमाँ आज तो बड़े ठाठ हैं तुम लोगों के।'

'अक्खा, भाई रमजानी हैं!—अमाँ हम तो तुम्हें हकीम साहब कहने से रहे भाई जान। हमारे हिसाब तो तुम वही रमजानी हो।' मियाँ कादिर ने हकीम साहब की पीठ पर हाथ रख कर कहा।

'अमाँ तो आपसे कहता कौन है कि आप हमें हकीम साहब कहें। अरे, तुम हकीम साहब के बजाय घसियारा भी कह दो तो हम बुरा थोड़े मान सकते हैं ? और तुम लोग हमारे साथ बेतकल्लुफी से न मिलोगे तो और कौन मिलेगा ? क्यों भई पहलवान ?' रमजानी ने कहा।

पहलवान खुश होकर बोले—'अमाँ हाँ भाई, हमारे हिसाब तो तुम वही लौंडे हो जो कल हमारी गोदियों में खेल रहे थे।'

हकीम साहब ने हँस कर पहलवान के एक घूँसा मार दिया।

'क्यों भाई, आज किधर चले ?'—रमजानी ने पूछा।

'अमाँ तुम्हें नहीं मालूम ? नवाब साहब के लड़का हुआ है, आज सबेरे।' क़ादिर ने कहा।

'अमाँ हाँ ! सच कहते हो ?' रमजानी ने पूछा।

'अमाँ अब इसमें भी झूठ की कहीं गुञ्जाइश है भाई-जान ?' मियाँ क़ादिर ने मुस्करा कर जवाब दिया।

'चलो-चलो, फिर क्या है, आज तो पुलाव की पलेटों पर हाथ साफ़ होंगे।' रमजानी मियाँ एक हाथ पीरू और दूसरा कादिर के गले में डालकर चले।

नवाब साहब सलारू को चिलम बदलने पर मुस्कुरा कर डाँट रहे थे, तब ये तीनों पहुँचे।

'अक्खा, आज तो मालूम पड़ता है, सूरज पच्छुम से निकला है। अमाँ पीरू, रमजानी तो खैर हकीम हो गए हैं, मगर तुम और कादिर कहाँ रहे इतने दिन ?'

नवाब साहब बात-बात में मुस्कुराए पड़ते थे।

'क्या बताऊँ हुजूर, जरी जोर हो रहे थे अखाड़े में। एक साला अनाड़ी हमसे जोर कर रहा था। बस क्या अरज करूँ बन्दानवाज, जो उसने उलटा हाथ रक्खा तो मैं उसे बचाने के ख्याल से पलटा। मगर वो अनाड़ी तो अनाड़ी। हाथ दाबे रहा। बस सरकार, पुट्ठा उतर गया। वह तो कहिए भाई रमजानी की वजह से बच गए वरना ये हाथ ही बेकाम कर दिया था साले ने।' पहलवान ने अपना बायाँ हाथ मसलते हुए कहा।

'गुस्ताखी माफ़ हो गरीब-परवर। अब इन बातों को हटाइए। पहले मिठाई मँगा दीजिए हमारे लिए। यहाँ तो मारे भूख के मारे जान निकल रही है।' मियाँ कादिर ने मुस्कुरा कर कहा।

'अरे हाँ हुजूर, मुकारकबाद। अल्ला करे हमारे शहजादे की

उमर हजारी हो। हुजूर जल्दी हुक्म दें सलारू को। यहाँ भूख के मारे बुरा हाल है सरकार।'

हकीम रमजान अली ने तुक में तुक मिलाते हुए कहा—'यही अर्ज करता है ये खाकसार।'

नवाब साहब उछल पड़े—'अहा ! भई वाह। क्या खूब ! अच्छा, बोलो कौन-सी खाओगे मिठाई ?'—मुस्कुरा कर हुजूर ने पूछा।

'हुजूर मँगाइये मलाई।' पहलवान ने कहा।

'हम तो सरकार खाएँगे बालूशाही।' रमजानी मियाँ ने कहा।

नवाब साहब ने हँस कर कादिर से पूछा—'अब तुम बोलो भाई।'

वैसे ही बी अब्बासी उधर से निकलीं, पीरू ने कह दिया—'अरे अभी तक नहीं लाई मिठाई ?'

बी अब्बासी पलट पड़ीं और नवाब साहब से कहा—'देखिये, मनाकर लीजिये, मियाँ अपने इन पीरू-फीरू को। हरदम ये हमसे मजाक करते हैं। बड़े मिठाई खाने वाले बने हैं। ऐसी ही चाट है तो चले जाओ नानबाई—'

बी अब्बासी की बात काट कर जोर से मियाँ क़ादिर ने कहा—'बस अब मत कुछ कहना, नहीं तो 'काफ़िया' बिगड़ जाएगा।'

बी अब्बासी मुस्कुरा कर कादिर की तरफ देखती हुई बिना काफिया का मतलब समझे ही चल दीं।

इसके बाद फिर कहकहे लगे, मिठाई खाई गई और मुजरे के बारे में सलाह-मशविरा हुआ। कादिर मियाँ कहते हैं कि शहर-भर को दावत दी जायगी।

२०

हिटलर का बटेर

'ख़ुदा सलामत रक्खे हमारे हुजूर को, जिनकी बदौलत हर रोज ईद मना करती है और हर रात शबेरात बनी रहती है। मगर यार, इसमें कोई शक नहीं कि वह है एक दम काठ का उल्लू ही।' मियाँ रमजानी ने पान की गिलौरी चबाते हुए कहा।

पहलवान ठठा कर हँस पड़े, कहा—'अरे वाह उस्ताद, क्या बात कही है! भई मान गए तुमको। खुदा की कसम, वह बस चोंगा है।'

'अमाँ तुम कैसी बातें करते हो पहलवान? हम तुमसे कस्मियाँ कहते हैं पीरू, कि उसे अकल छू भी नहीं गई है। तुम्हारी दुआ से हम भी सैकड़ों नवाबों की सुहबत उठा चुके हैं मगर इतना बड़ा गधा हमने आज तक देखा ही नहीं।'

'बस, अब रहने भी दो उस्ताद। खुदा उसकी उम्र और बेवकूफी में बरकत दे, इसकी बदौलत ही तो हम तुम सब मजा काटते हैं। क्यों भई, मैं कुछ झूठ कह रहा हूँ रमजानी?'

'अमाँ भई इसमें क्या शक है। चलो उस्ताद, वहीं चला जाय। आज तो साला एक भी मरीज नहीं आया। अल्ला कसम पहलवान, तुम यकीन मानो कि आज दस दिन से बोहनी भी नहीं हुई। इन डाक्टरों सालों को हैजा हो, हकीमों की तो इनके सामने कोई वक़त ही नहीं रही, उस्ताद।'

'सच कहते हो भाईजान। हम खुद ही इधर तुम्हारी हालत

देख रहे हैं। तुम्हारी जान की कसम रमजानी भाई, हम तुम्हें देखते ही भाँप गए कि आज कल मेरा यार बड़ी तकलीफ़ में है। मगर कुछ परवाह नहीं। ये तो चला ही करता है, उस्ताद। दम सलामत रहे हमारे नवाब के, उनकी जिन्दगी में तुम भूखे नहीं रह सकते, भाई जान।'

हकीम रमजानअली ने मतब के दरवाजे बन्द करते हुए कहा—'चलो भाई जान, वहीं चलें, रस्ते में क़ादिर को भी बुला लिया जाय।'

क़ादिर मियाँ घर पर तो मिले नहीं। पता लगा कि बुद्धन नवाब के यहाँ बटेरें लड़ रही हैं। सो भाई वहाँ पहुँचे और पहल-वान ने गप से कादिर की गर्दन में हाथ डाला। कादिर चौंक कर घूम पड़े, कहा—'ए यार पहलवान, जरी इस दम तंग न करो भाईजान। अहाहा, जरी देखना तो, अच्छे-मिर्जा का बटेर किस अकड़ के साथ आ रहा है। भई वाह माशाअल्लाह, तबीयत चाहती है, उठा के चूम लें।'

हकीम साहब ने मुस्करा कर कहा—'अब तुझे बटेर की पड़ी है, यहाँ इस भीड़ में अपना शोरबा बना जाता है। कल देख लेना हमारे यहाँ। चलो, जरी जरूरी काम है।'

मियाँ कादिर बेचारे रंजीदा होकर मारे मुरव्वत के चले आये।

मियाँ रमजानी ने कहा—'अब ऐसी मरी चाल से न चलिए, वरना वो झापड़ रसीद किया होगा कि आप दोनों को छठी का दूध याद आ जायगा।'

मियाँ क़ादिर तो मुस्कुराते हुए नाख़ून चबाने लगे और पहलवान ने हँसकर मद-भरी आँखें बना, हकीम की तरफ देखते हुए अपना बदन तौल लिया।

एक मिनट तक चुपचाप तेज चलने के बाद रमजानी हकीम ने मुस्कराकर पहलवान को धक्का देते हुए कहा—'अबे देखता क्या है, बड़ा पहलवान बना है ! जल्दी से लपक के एक 'अवध अखबार' तो खरीद लाना ।'

पहलवान बस मुस्करा कर चल दिये । जब यह तीनों दरबार में पहुँचे तो, हुजूर मरदाने आराम गाह में लेटे गुनगुना रहे थे—

'मेरी जान माँगी तो क्या तुमने माँगा,
मेरी जान का क्या मेरी जान होगा ?'

और सलारू मियाँ पंखा झलते हुए झूम रहे थे ।

'आदाब बजा लाता हूँ, गरीब परवर ।'—पहलवान ने झुककर ताजीम की । रमज़ानी और क़ादिर ने भी साथ दिया ।

हुजूर ने आँखें खोलकर हँसते हुए कहा—'अमाँ आओ जी । वल्लाह, अभी मैं तुम लोगों को याद ही कर रहा था ख़ूब आए भाई जान ! अमाँ सलारू, जल्दी से एक कुर्सी लाओ हकीम साहब के लिए ।'

हँसकर हकीम साहब ने कहा—'अब इतना शरमिन्दा न करें हुजूर ! भला मेरी इतनी मजाल कि मैं हुजूर के सामने कुर्सी पर बैठूँ ?'

नवाब साहब मारे ख़ुशी के चुप हो गये ।

पहलवान ने छेड़ा—'अमाँ हाँ तो रमजानी, फिर चिम्बर-लन का क्या हुआ ?'

नवाब साहब ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—'ये चिम्बरलन क्या है रमजानी ?'

'ये हुजूर विलायत के वजीरआज़म हैं । अब सरकार जर्मनी की लड़ाई हो रही है न !'

'अच्छा, तो लडाई फिर शुरू हो गई ? अमाँ बात क्या थी ?'

'कुछ नहीं, बात क्या थी गरीब-परवर, 'चाकूवाले मुलुक' के कुछ कबूतर जरमनी में उड़ आये थे। उन्होंने इनसे माँगे। जरमनी के बादशाह हिटलर ने 'चाकूवाले' मुलुक के बादशाह से कहा कि बीस बरस पहले तुम्हारी बटेर ने मेरी बटेर को मार डाला था, अब मैं बदला लूँगा। चाकूवाले बादशाह ने कहा, भाई उसका क्या, वह तो दंगल था, हार-जीत लगी ही रहती है; और ऐसे ही जो तुम्हें बटेर का रंज है तो हम तुम्हें एक नई बटेर दे देंगे। जरमनी वाले ने कहा कि नहीं, हम तो अपनी वही बटेर लेंगे। देना हो तो ६ रोज के अन्दर वही बटेर ला दो, नहीं हम लड़ाई लड़ेंगे। और जरमनी वाला बड़ा ताकतवर है हुजूर। इधर चाकूवाला मुलुक छोटा-सा है। विलायत और फ्रांस का सहारा उसे था हुजूर, अब उसमें भी झगड़ा है। इसीलिए चिम्बरलन ने हिटलर से कहा कि भई लड़ाई-झगड़ा न करो। अपनी बटेर की क़ीमत ले लो, और किस्सा खतम करो। हिटलर राजी हो गए। कहा, मेरी बटेर एक अरब रुपए की थी, मैंने उसे परियों के बादशाह हज़रत शाह सुलेमान से खरीदा था। हाय, ऐसा प्यारा जानवर! यह कह के हिटलर अपने बटेर की याद में रोने लगा। अब एक अरब रुपए का सवाल बड़ा बेढब है। चाकूवाले मुलुक में इतना रुपया नहीं। चिम्बरलन ने कहा, 'अच्छा, घबराओ मत, हम रुपये का बन्दोबस्त करते हैं।'

क़ादिर की बात काटकर नवाब साहब ने पूछा—'तो चाकू वाले मुलुक से चिम्बरलन का क्या रिश्ता है?'

'हुजूर वह उनके मामूजाद भाई—'

पहलवान की बात काटकर क़ादिर ने कहा, 'अमाँ नहीं जी, ये रिश्तेवाली बात नहीं है। अखबार में तो हुजूर यह

लिखा है कि जरमनी वाले की मदद में शाह सुलेमान हैं। अब आप ही बताइए शाह सुलेमान से कौन लड़ सकता है? ऐसे-ऐसे जिन्नात बस में हैं कि बस।'

हुजूर ने रमजानी से पूछा—'क्यों जी, यह सच है भाई जान?'

रमज़ानी ने गम्भीरता पूर्वक कहा—'असल बात यह है हुजूर कि जरमनी वाले के पास ऐसे-ऐसे बम के गोले हैं कि जो वहाँ से फेंके तो यहाँ नख़ास में आके गिरें। और जहाँ उसने दस-बीस गोले छोड़ दिये तो बस पूरी दुनियाँ ख़तम।'

हुजूर ने घबराकर कहा—'तो लड़ाई क्या ज़रूर ही होगी, मियाँ?'

उसी गम्भीरता के साथ रमज़ानी ने कहा—'अब अगर ६ दिन के अन्दर जरमनी वाले को रुपया मिल गया तो कुछ नहीं, वरना वह लड़ाई छेड़ देगा।'

'तो उसे रुपया मिला?'

'अभी कहाँ हुजूर। एक अरब रुपया कोई मामूली बात है? सब लोग एक एक हजार रुपया दे रहे हैं। अब ऐसे मौकों पर कोई रुपए का मुँह थोड़े ही देखता है; मगर इन लखनऊ के रईसों को क्या कहूँ हुजूर, जरी अंग्रेजी क्या पढ़ ली कि कानून बघारने लगे। कल हमारे एक जरमनी हकीम दोस्त ने हमें बताया कि हिटलर की निगाह लखनऊ पर पड़ चुकी है, अगर यहाँ से कुछ न मिला तो उसे मिट्टी में मिला देगा।'

'अमाँ ऐसी-तैसी में जाय रुपया। जान है तो जहान है। तुम ले लो खजाँची से एक हजार और दे दो जाके हिटलर को।'

पीरू ने हकीम से कहा—'क्यों जी, तुम तो कहते थे कि हिटलर हमारे हुजूर को जानता है।'

'अमाँ हाँ-हाँ, वो हकीम हम से कहता था, कि हिटलर कहता था, बस ज़री लिहाज़ है तो लखनऊ में उनका ही। मगर उनसे कहना कि हमने कसम खाई है कि रुपया न मिलने पर लखनऊ को बम से उड़ा देंगे। इसलिए क़सम का ख़याल करके रुपया दे दें, और हम उनको जरमनी का सबसे बड़ा ख़िताब दे देंगे।'

नवाब साहब ने हँसकर कहा—'अच्छा भाई, हमारा सलाम हिटलर को कहला देना और कहना कि ख़ैर, हम आपकी कसम नहीं तोड़ेंगे। और सुनो, एक हज़ार रुपया आज ही भेज दो, तार से भेजना, जिससे कल उन्हें मिल जाय। अच्छा, इस वक्त हमें मीर साहब के यहाँ दावत में जाना है।'

उठकर नवाब साहब कपड़े पहनने लगे।

वैसे बी अब्बासी दौड़ती हुई आकर बोली—'हुजूर बेगम साहब ने बड़ी बुरी कसम दिलाई है कि लड़ाई-झगड़े में घर से बाहर न निकलें।'

हकीम रमज़ानअली ने इस बात की ताईद की, और अपने साथियों के साथ हँसते हुए रुक़्क़ा लेकर ख़जाँची के यहाँ चल दिये।

२१

रमज़ानी मियाँ जि़न्दाबाद !

'श्रमाँ पीरू !'

'जी सरकार ?'

'श्रमाँ, श्राज रमज़ानी नहीं श्राये ?'
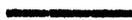
'हाँ हुजूर, बात ये है कि रमज़ानी श्राज एक मीटिंग में लिक्चर देने गये हैं।' पीरू ने जवाब दिया।

'क्या कहा ?—ज़री फिर तो कहना। क्या लिक्चर देने गये हैं हमारे रमजानी मियाँ ?—श्रमाँ नहीं यार, तुम मज़ाक़ कर रहे होगे।'

पहलवान ने श्रपने दोनों कान पकड़कर निहायत श्राजिजी के साथ कहा—'श्ररे नहीं हुजूर, भला मेरी इतनी मजाल कि मैं सरकार से मजाक कर सकूँ ? वल्ला, श्रपनी जान कसम सरकार, रमजानी श्राज इक्के वालों की मीटिङ्ग में लिक्चर देने गये हैं।'

मियाँ क़ादिर बैठे-बैठे पौंडा छील रहे थे। यह सुन चाकू श्रलग रख, भाड़ ऐसा मुँह फाड़कर, ताज्जुब के साथ पूछा—'श्रमाँ तो सचमुच श्राज रमजानी लिक्चर देने गये हैं ?—भई ये तुमने ख़ूब ख़बर सुनाई उस्ताद !'

नवाब साहब ने पहलवान से पूछा—'तो क्यों भई पहलवान, श्रमाँ एक बात बताश्रो—श्रब ये हमारे रमजानी भी पंडित जवाहरलाल नेहरू श्रौर सुबास चन्दर बोस की तरह लिक्चर देंगे क्या ?'

पहलवान ने गर्दन हिलाते हुए जवाब दिया—'हाँ हुजूर।'

'अच्छा तो यह लिक्चर में क्या कहेंगे भाई ?' नवाब साहब ने मसनद पर ज़रा सीधे बैठते हुए पूछा।

पहलवान ने ज़रा दीवार का सहारा लेते हुए, मुँह गंभीर बनाकर कहा—'बात यह है हुजूर कि अब ये जो लखनऊ में बसें चली हैं न, तो हुजूर उनसे, आप यह समझें कि इक्के वालों को, बेचारों को, बड़ा नुकसान है। अब आप समझिये कि वे लोग गरीबपरवर, सुबू-शाम इक्का जोत कर किसी तरह अपना पेट पालते हैं बेचारे। मगर उसमें भी अब यह बसें चल गयीं।

नवाब साहब ने जिज्ञासा की—'अमाँ यह बसें क्या होती हैं भाई ?'

'मोटर होती है सरकार।'—मियाँ क़ादिर ने जवाब दिया।

पहलवान ने टोका—'मोटर नहीं सरकार, लहरी होती है।

क़ादिर ने कहा—'लहरी कैसे होती है ?—लहरी में कहीं इस तरह गद्दियाँ लगी रहती हैं, बिजली होती है, घंटी बजाई जाती है और टिकट 'चिक' किये जाते हैं ?'

पहलवान ने कुछ झेंपते हुए जवाब दिया—'मगर मोटर तो तुम इसे कह ही नहीं सकते भाईजान। हाँ लहरी की तरह होती है।'

क़ादिर ने भी जैसे सुलह करते हुए कहा—'हाँ यह तुम कह सकते हो। लेकिन बस और लहरी में और भी फरक होता है।'

नवाब साहब ने सटक के तीन-चार क़श खींचकर पूछा—'तो क्यों भई, इस लहरी और बस में क्या फ़र्क होता है ?'

मुँह बनाकर गर्दन हिलाते हुए पहलवान ने कहा—'ज्यादा कुछ फ़रक नहीं है सरकार। बात सिर्फ़ इतनी है कि लहरी तो

जो यहाँ से छूटी तो सीधे काकोरी में ही जाके दम लिया—बीच रस्ते में ड्राइवर के बाप की मजाल नहीं है कि लहरी को रोक ले; मगर बस में सरकार यह है कि जहाँ कहा, बस रोक दो—बस रुक गयी, सरकार !'

नवाब साहब ने आश्चर्य के साथ पीरू की तरफ़ देखते हुए कहा—'तो शायद इसीलिए उसका नाम 'बस' पड़ा है।'

खीसें निपोर कर, बड़ी आजिजी के साथ उत्तर दिया—'जी हाँ हुजूर, आप तो सब जानते हैं।'

नवाब साहब ने एक मिनट तक चुप रहने के बाद पूछा—'अच्छा तो इस लिक्चर में रमज़ानी क्या कहेंगे उस्ताद ?'

'कहेंगे क्या हुजूर—यही कहेंगे कि बसें रुक जायें। इससे गरीब इक्केवालों को नुकसान होता है। यह लिक्चर देकर फिर हार पहने हुए रमजानी मियाँ जुलूस के साथ अपने घर चले जायेंगे। चलिये साहब छुट्टी हुई।

मियाँ क़ादिर, गन्ना चूसते हुए बोले—भई कुछ कह लो मगर यह बसें हैं बड़े मजे की। इसमें हुजूर, एक तो ये कि आप इक्के की तरह टिक-टिक नहीं चले जा रहे हैं। गोल-दरवाजे में आकर भरोसे महाराज की दुकान के सामने खड़ी हुई—बस झप-से टिकट लीजिये और सर्र-से बस चल दी—अपने हिसाब जैसे जादू है सरकार, सिरफ एक मिनट के अन्दर अमीनाबाद पहुँचा देती है।'

पहलवान हमेशा तीन पैसे में अमीनाबाद से चौक जाते रहे। पहले दिन जब लखनऊ में बस चली तो उनको भी उसमें बैठने का शौक चर्राया। टिकट का मोल-भाव करने लगे। कहा—'तीन पैसे में देते हो ?' टिकट बेचने वाले ने कहा—

'यह भी कोई कूड़ागाड़ी मुकर्रर कर ली है जो तीन पैसे टिकाने लगे ? यहाँ चार पैसे का टिकट लगता है ।'

पहलवान ने कहा--'वाह हम तो तीन पैसे देंगे । यहाँ तो रोज ही आते-जाते हैं । अमाँ ऐसे-ऐसे भर्रे किसी और को देना । यहाँ तुम्हारे जैसे सैकड़ों चरकटे रोज चराया करते हैं—समझे ।' कह कर पहलवान ने छाती फुला अपने दोनों शाने ज़रा हिला लिये । टिकट बेचने वाले ने समझाते हुए कहा—'भाई इतने सब लोग आख़िरकार चार पैसे देकर जा रहे हैं, कोई तुम अकेले तो हो नहीं जो हम तुम्हें ठग लेंगे । यहाँ तो रैट बंधा हुआ है—अमीर-गरीब सबके लिए एक ।'

बहर सूरत, बस पर बैठने की लालच से किसी तरह पहलवान राजी हुए और तहमत की खूँट से इकन्नी निकाल कर देने ही वाले थे कि बस के ड्राइवर ने टिकट बेचने वाले से कहा—'अमाँ पिटरौल ख़तम हो गया ।' टिकट वाले ने जवाब दिया 'तो आगे चल कर भरवा लेना, साहब हुकुम दे गये हैं ।'

पहलवान के कान ठनके । वह चुप हो बैठ रहे । टिकट वाले ने पैसे माँगे । पहलवान ने अकड़कर जवाब दिया—'यह झांसा पट्टी किसी और को दीजिएगा । यहाँ ऐसे नहीं कि खट-से इकन्नी टिका दें ।'

टिकट वाले को ताव आ गया । बोला—'अमाँ तुम आदमी हो या पैजामा ? आखिर अब कौन-सी बिल्ली छींक गई ?'

पहलवान ने भी कड़क कर जवाब दिया—'देखो, जरी जबान सम्हाल के बातचीत करो । उल्लू बनाते हो ? तुम्हारे पास पिटरौल तो है ही नहीं, फिर पहुँचाओगे कैसे ?'

'अरे उस्ताद तुम्हें पिटरौल की क्या फिकर ? तुम्हें चौक जाने से मतलब है कि पिटरौल देखने से ?'

जब पिटरौल ही नहीं तो ले कैसे चलोगे ?'

'अमाँ फिर वही बात ? हम कहते हैं कि तुम चौक पहुँचा दिये जाओगे बस। चलो झगड़ा ख़तम हुआ। लाओ पैसे दो।'

बात पहलवान की समझ में अब भी नहीं आई। कहने लगे—'यह सब कुछ नहीं, हम चौक चलकर पैसे देंगे।'

टिकट वाले ने कहा—'पैसे तुम्हें यहीं देने होंगे; नहीं तो निकल जाओ गाड़ी से।'

पहलवान की इतनी बड़ी बेइज्ज़ती आज तक नहीं हुई थी। दो पैसे की औक़ात रखनेवाला टिकट-मैन पहलवान की शान में इतनी बड़ी बात कह दे तो इससे बढ़कर डूब मरने वाली बात और क्या हो सकती है ? ज़रा अकड़कर टिकटवाले को मारना ही चाहते थे कि बैठे हुए दो तीन आदमियों ने मिलकर उन्हें ज़बरदस्ती मोटर से उतार दिया। तभी से पीरू बस के नाम से ज़रा चिढ़ते हैं।

मियाँ क़ादिर की इस बात पर, इसी से पहलवान तुनुक-कर बोले—'अमाँ तुम तो बसवालों की बड़ाई करोगे ही। तुम्हारा तो छोटा भाई उसमें नौकर है न! मगर असल बात यह है सरकार, कि बस में कोई भी शरीफ़ आदमी नहीं बैठता।'

मियाँ क़ादिर ने चट से जवाब दिया—'यह कैसे कहते हो ? बड़े-बड़े वकील और डाक्टर जो ताँगे पर बैठते थे अब इस पर बैठते हैं; वे क्या सब टुच्चे आदमी हैं ?'

नवाब साहब ने ज़बान को ज़रा दाँतों तले दबाकर, गर्दन हिलाते हुए कहा—'अजी नहीं, भला उनको टुच्चा कह कौन सकता है ?'

पहलवान बोले—'बैठते न हों कहीं डाक्टर और वकील! उसमें सब शोहदे भरते हैं।'

मियाँ क़ादिर ने जवाब दिया—'अच्छा, यह हुजूर के पड़ोस में रहनेवाले असगर मिर्ज़ा क्या कोई मामूली आदमी हैं ?—इतने बड़े, पढ़े-लिखे और रईस भी बस के ऊपर बैठते हैं। आपके कदमों की कसम खाके कहता हूँ हुजूर, कि कल मैंने खुद अपनी आँखों से देखा कि वह भी बस में जा रहे थे। और अगर यकीन न हो तो हुजूर उनसे पुछवा सकते हैं।'

पहलवान अब लाजवाब हो गए! कुछ कहते न बन पड़ा।

नवाब साहब ने तम्बाकू पीते हुए कहा—'जब असगर मिर्ज़ा तक बस पे जाते हैं तो यह हरगिज़ बुरी नहीं हो सकती। और यह पहलवान तो बस पूरे पहलवान ही हैं। अमाँ पीरू, भई तुम इस बस से नाराज़ क्यों हो ?'

मियाँ पीरू के कुछ जवाब देने के पहले ही मियाँ क़ादिर ने मुस्कराकर कहा—'मैं बताऊँ हुजूर, बात यह है कि पहलवान—'

पहलवान डरे कि कहीं मियाँ क़ादिर के छोटे भाई ने उस दिन वाला क़िस्सा उनसे कह न दिया हो। चट से टोक कर कहा—'अमाँ हटाओ भी इस झगड़े को। देखते नहीं, छै बजने वाला है—आज ज़री हुजूर की अगर मेहरबानी हो जाय तो फिर सनीमा ही चलें—'लहरीलाला' तमाशा लगा हुआ है।'

उसके बाद वे दोनों हुजूर की मेहरबानी से सिनेमा देखने गए।

———